Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

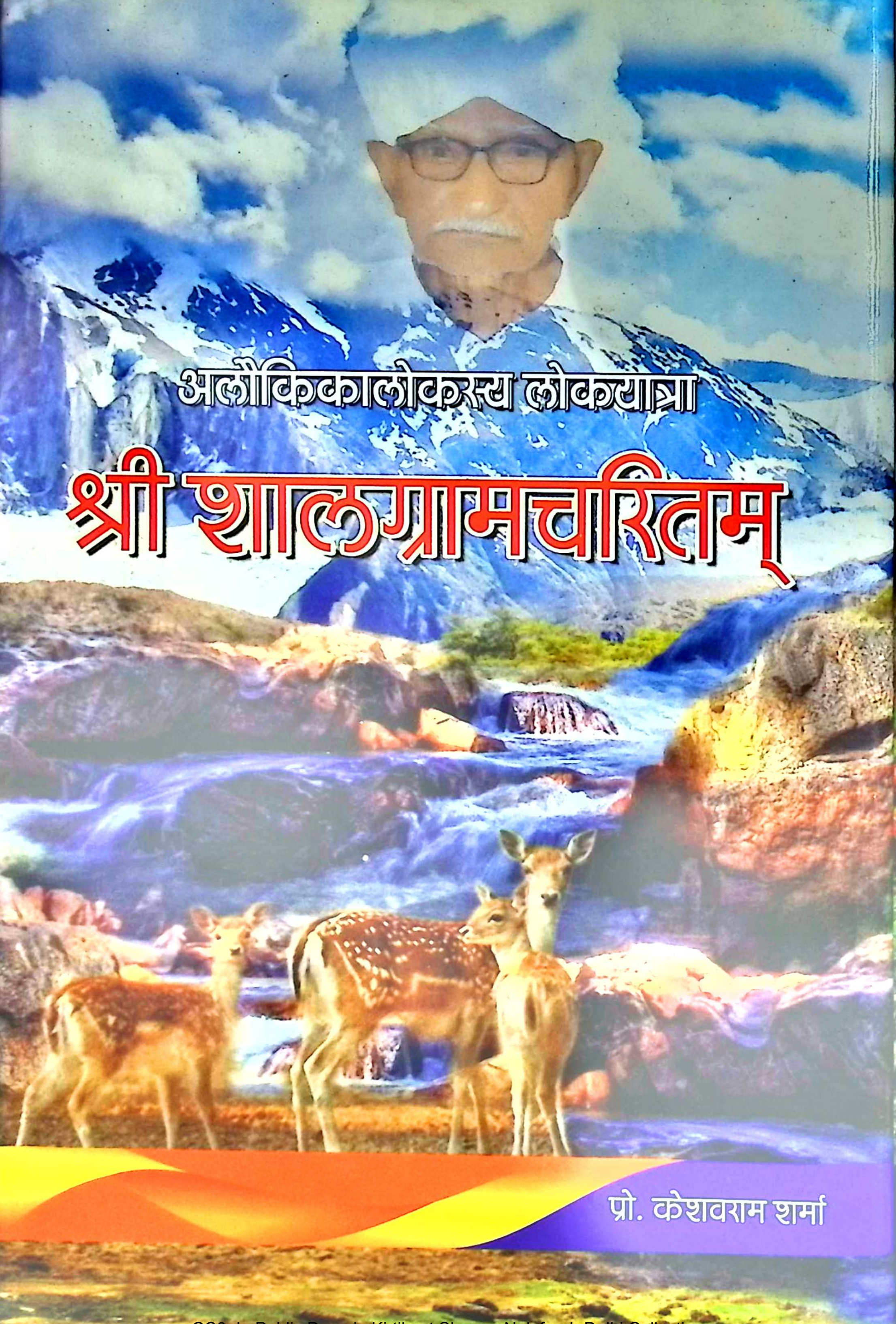

अलौकिकालोकस्य लोकयात्रा

श्री शालग्रामचरितम्

प्रो. केशवराम शर्मा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

अलौकिकालोकस्य लोकयात्रा

श्री शालग्रामचरितम्

राष्ट्रपति पुरस्कार से अलंकृत

प्रो० केशवराम शर्मा

मान्यता प्रकाशन
60-बी [illegible], मायापुरी
नयी दिल्ली-110 064

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अलौकिकालोकस्य लोकयात्रा

श्री शालग्रामचरितम्

राष्ट्रपति पुरस्कार से अलंकृत
प्रो० केशवराम शर्मा

मान्यता प्रकाशन
60-C मायाकुञ्ज, मायापुरी
नयी दिल्ली-110064 (भारत)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रकाशक

मान्यता प्रकाशन

60–सी, मायाकुञ्ज, मायापुरी,
नयी दिल्ली–110064 (भारत)

Tel : 011 - 2540 7546, 2513 7546
9999 88 9290, 98110 14522
mail at : manyataprakashan@gmail.com
manyata_prakashan@yahoo.com

© लेखक

ISBN 13 978-93-83559-19-0

प्रथम संस्करण 2014

मूल्य ₹ 515/-

मुद्रक एवं विक्रेता
मनीषि मण्डल, सोलन (हि.प्र.)
श्रीमती तरुणा शर्मा
ए–3, कशिश अपार्टमेंट, टेंक रोड़, सोलन (हि.प्र.)
दूरभाष : 01792–223008, मो. 09418133268

Computer Typesetting : **Printrades** New Delhi - 110064

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विषयानुक्रमणिका

क्र. सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	प्रस्तावना	v - ix
2.	सहृदयावगाहनम्	xii - xv
3.	दो शब्द	xvi - xviii
4.	आदर्श महानायक आचार्य श्री शालग्राम शर्मा	xix - xxv
5.	प्रथमः सर्गः	1 - 18
6.	द्वितीयः सर्गः	19 - 38
7.	तृतीयः सर्गः	39 - 55
8.	चतुर्थः सर्गः	56 - 74
9.	पञ्चमः सर्गः	75 - 90

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

10.	षष्ठः सर्गः	------	91 –114
11.	सप्तमः सर्गः	------	115 –141
12.	अष्टमः सर्गः	------	142 –173
13.	नवमः सर्गः	------	174 –190
14.	दशमः सर्गः	------	191 –203
15	एकादशः सर्गः	------	204 –222
16.	द्वादशः सर्गः	------	223 –238

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रस्तावना

उत्पद्यन्ते जगति विरलाः केचनागाधबोधा
येषां मानेऽवर्णव इव तरी कुण्ठतां वागुपैति ॥

इत्यवितथा खलु भणितिः। विद्वदग्रगण्यः श्री शालग्रामस्ता-दृक्ष्वेवान्यतमो हिमभूधरधरालङ्कारोऽभवत्। वर्तमानयुगे सततमपचीयमाना प्रगाढवैदुष्यपरम्परा यास्मिन् पुनः प्रतिष्ठापराकाष्ठामासादयत्। यस्मिंश्च विद्वत्तया शीलसङ्गमो मणिकाञ्चनयोग इव वैरल्येनोपलभ्यः प्राचुर्येण परां कोटिमस्पृशत्। यस्य चागण्यगुणगणगणनायां कुशलमतयोऽपि शिथिलायन्ते मादृशास्तु किञ्चिज्ज्ञाः कथं वा समर्था भवेयुः। तथापि "तद्गुणैः कर्णमागत्य चापलाय प्रचोदित" इति कविकुलगुरूद्गारमनुस्मरन् ममापि चेतो महात्मन-स्तस्यावदानमंशतोऽपि प्रकाशयितुं विवशमिव प्रवर्तते।

विदुषां स्वप्रचारनिरपेक्षत्वेऽपि तन्महिमज्ञानां तत्रौदासीन्यं न कथमप्युचितमिति मनस्यवधार्यापि पवित्रेऽस्मिन् कर्तव्ये मदीया प्रवृतिः। पूर्वप्राज्ञप्रदर्शितपन्था परवर्तिसमाजाय प्रेरणास्त्रोतो भवति तेनैव च सत्कर्म-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

परम्पराऽनवरतं गतिशीला सती तदुपकारिणी सपद्यत इति वा प्रयासस्यास्य मूलेऽस्माकमभीप्सितम्। तस्मिन्नाप्तविदुषि अपरावर्त्यपथे प्रस्थितवति गणनातीतः शिष्यसमुदायो, विनयशीलः परिवारस्तत्सदाचारोपदेशकृतार्थः समाजो वा स्तब्धा इव वञ्चिता इव तदनुरूपां श्रद्धाञ्जलि समर्पयितुमपारयन्तः खिन्नमनसः पश्चत्तापमनुभवन्ति। तानीषत् सान्त्वयितुं च ममास्मिन्नसंभव-प्राये कर्मणि प्रवृतिरभूत्। इति सर्वमुद्दिश्य स्वशक्त्यगोचरमपि सत् सुर-सरस्वतीप्रसादसाध्यं कर्मेदं कथमप्यपूरयम्। स्तोकांशतोऽपि तदृणमवतार्य निर्वृत्ततामस्मि प्राप्तः।

अद्यत्वे शास्त्राणां प्रौढ़विदुषां संख्याऽपचीयमाना दृश्यते। जीवनस्य बाह्याः समस्याः प्रति समयानुरोधेनाकृष्टोऽध्येतृसमुदायः शास्त्रमर्माव-बोधाय गहनश्रममनर्न्तमुखतां च प्रत्यौदासीन्यमेवाश्रयन् प्रतीयते। फलतः सुदीर्घकालदविच्छिन्ना बहुमूल्या गहनचिन्तनपरम्परा विरामोन्मुखा प्रतीयते। तथात्वे राष्ट्रं समाजो वा प्रचुरगौरवप्रदशेवधिवञ्चितौ कान्दिशीकाविव सीदतः। वयमद्य कोटिपतीनर्बुदपतीँश्चापि जनयितुं प्रभवामः परं कञ्चन शङ्करं कालिदासं व्यासं पतञ्जलिं वा विश्वसमाजसविधेऽवतारयितुं नैव शक्नुमः। परैरन्विष्टस्य भूतवादप्रचण्डरक्षसो दासत्वे स्वगौरवमनुभवामः परं निजैः पूर्वमनीषिभि र्महता तपसा मानवमात्रहितायाविष्कृतान् शाश्वता-नादर्शानवहेल्य हास्यास्पदायामवनतौ निजामुन्नतिमुत्प्रेक्षामहे। एवं विधे भीषणक्षणे पथप्रदर्शकानां पूर्वतनानां प्रकाशस्तम्भायमानामाप्तपुरुषाणां चरित्रचारुचर्चाया प्रासङ्गिकत्वं सुतरां वर्द्धते।

यद्यप्यस्माभिस्तु बहिः प्रतीता एव तस्य महापुरुषस्य चरितांशा अपि अवैकल्पेन ज्ञातुं प्रतिपादयितुं वा न पार्यन्ते। तथात्वे च तच्चरित्र-चित्रणकर्मणि अपेक्षितो न्यायो न कृतः स्यात्। यतोहि तादृशाणां याथार्थ्यं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गहनत्वेनानभिव्यक्तमधिकं प्रकटितं चाल्पीय एव भवति, तथापि स्तोकमपि तत् प्रकाशितं सत् महते हि समाजहिताय सम्पद्येत–इति कृत्वैवायं प्रयासः सूरिभिरङ्गीकरणीय इति निवेद्यते।

अनुरूपविषयसामग्रीसङ्ग्रहे तस्य ज्येष्ठपुत्रेण डा. श्रीहरिदत्तशर्मणा यदनवरतं साहाय्यं व्यधीयत तदभावे कार्यमिदमसम्पाद्यमेवाभविष्यत्। अतोऽत्र तस्यानुपमं योगदानं मम परमं कार्तज्ञमर्हति। अन्ते च कृतिमिमां तस्मै पुण्यपुरुषाय सतां समाजाय च समर्पयन् विशिष्टं हर्षमनुभवामि। सर्वेषामाशिषश्चापेक्षे।

सङ्कोचावनतः
केशवरामशर्मा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रस्तावना

इस संसार में कुछ ऐसे अगाध सूक्ष्म बोध वाले विरले विद्वान् पैदा हो जाते हैं, जिन के ज्ञान गाम्भीर्य को मापने में वाणी भी इस तरह कुण्ठित होकर रह जाती है जैसे समुद्र का पार पाने में नाव।

यह उक्ति निश्चित रूप से यथार्थ है। विद्वानों में अग्रगण्य श्रीशालग्राम महोदय ऐसे ही महान् व्यक्तियों में से एकतम थे, जो इस हिमाचल की पावन धरती के अलङ्कार की तरह हुए। वर्तमान युग में निरन्तर ह्रास की ओर जाती हुई प्रगाढ़ विद्वत्परम्परा जिन में फिर से प्रतिष्ठा की पराकाष्ठा को पा गई तथा जिन में विद्वत्ता के साथ सज्जनता का मेल मणिकाञ्चन योग की तरह प्रचुरता की अन्तिम सीमा को छू गया। ऐसा कहीं विरला ही योग उपलब्ध होता है। जिनके गणनातीत गुण समूह की गिनती में कुशल बुद्धि वाले लोग भी शिथिल हो जाते हैं, मेरे जैसे अल्पज्ञ तो भला कहाँ समर्थ हो पाते हैं। तथापि, रघुवंश की रचना के आदि में कविकुलगुरु कालिदास के हृदय से निकले इस उद्गार को, कि– "रघुकुल के महापुरुषों के गुणों ने मेरे कानों में पहुँचकर मुझे उनके वर्णन की धृष्टता के लिए

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रेरित किया" स्मरण कर मेरा भी हृदय उस महान् व्यक्ति के अविस्मरणीय योगदान को आंशिक रूप में सही, लेखनीबद्ध करने के लिए विवश होकर प्रवृत्त हुआ है।

यद्यपि जो वास्तव में विद्वान् होते हैं वे अपने प्रचार के प्रति सदा उदासीन ही रहते हैं। तथापि उनकी महिमा के मर्मज्ञों की तो इस कार्य के प्रति लापरवाही किसी भी तरह उचित नहीं होती। यह मन में सोचकर भी इस पवित्र कर्तव्य में प्रवृत्ति हुई। अथवा, पूर्व विद्वानों द्वारा दिखाया गया मङ्गलमय पथ परवर्ती समाज के लिए प्रेरणास्रोत होता है और उसी से सदाचार की परम्परा निरन्तर गतिशील होकर उसके उपकार का काम करती है, इस प्रयास के मूल में यह भी मेरा मन्तव्य रहा है। या फिर उन परम प्रामाणिक विद्वान् के फिर से न लौटने वाले पथ में चले जाने पर, उनका गणनातीत शिष्य समुदाय, विनयशील परिवार, तथा उनके सदाचारोपदेश से कृतार्थ हुआ समाज- ये सब स्तब्ध से, ठगे-ठगे से रह गए और उनके अनुरूप श्रद्धाञ्जलि को समर्पण करने में असमर्थ और खिन्न होकर पश्चाताप का अनुभव कर रहे हैं। उन्हें कुछ सान्त्वना मिल पाए, इस विचार से भी इस असम्भव से प्रतीत होने वाले कार्य में, मैं प्रवृत्त हुआ। इत्यादि अनेक पक्षों को लक्ष्य करके, अपनी सामर्थ्य की सीमा में न आने वाला होने पर भी, सुरसरस्वती कृपा से ही सम्भव होने वाला यह कार्य जैसे कैसे पूर्ण कर पाया हूँ तथा उस युगपुरुष के ऋण को थोड़ा बहुत उतार कर एक अवर्णनीय सन्तोष की अनुभूति कर रहा हूँ।

आज के इस युग में शास्त्रों के प्रौढ़ विद्वानों की संख्या निरन्तर घटती जा रही है। समय के प्रभाव से अध्येतावर्ग जीवन की बाहरी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आवश्यकताओं और समस्याओं के प्रति ही आकृष्ट है तथा वह शास्त्रों के मर्म का ज्ञान करने के लिए अपेक्षित गहन श्रम और अन्तर्मुखता के प्रति उदासीन सा होता प्रतीत हो रहा है। परिणामतः सुदूर अतीत समय से अटूट रूप में चली आ रही अत्यन्त मूल्यमयी गम्भीर चिन्तन की परम्परा विराम की ओर जाती दिख रही है। ऐसी स्थिति उपस्थित हो जाने पर यह देश और समाज, विश्वव्यापी गौरव को प्रदान करने वाली बौद्धिकसम्पदा से वञ्चित, दिग्भ्रान्त होकर निराशा के गर्त में पड़े हुए हैं। आज हम, करोड़पति और अरबपति को तो पैदा कर सकते हैं परन्तु किसी शङ्कर, कालिदास, व्यास अथवा पतञ्जलि को विश्वसमाज के मध्य उतारने में असमर्थ हैं। औरों के द्वारा खोजे हुए भूतवाद के प्रचण्ड राक्षस का दास बनने में गौरव की अनुभूति करते हैं, परन्तु अपने पूर्व मनीषियों द्वारा महान् तप से मानवमात्र के हित के लिए आविष्कृत शाश्वत आदर्शों की अवहेलना करके, हास्यास्पद अवनति को उन्नति मानकर फूल रहे हैं। इस प्रकार के भीषण क्षण में, पूर्वतन पथ-प्रदर्शक, प्रकाश स्तम्भों, आप्तपुरुषों के प्रेरणाप्रद चरित्र की चर्चा की प्रासङ्गिकता आज अधिक बढ़ जाती है।

यद्यपि, हम तो उस महापुरुष के बाहर प्रतीत होने वाले चरित्रांश को ही अविकल रूप में जानने और प्रतिपादित करने में भी समर्थ नहीं हो सकते। ऐसी दशा में उन जैसों के चरित्र का चित्रण करने में अपेक्षित न्याय नहीं हुआ होगा, क्योंकि वैसे सुकृतियों के आचरण की यथार्थता इतनी गहन होती है कि अज्ञेय अधिक तथा व्यक्त कम होती है। फिर भी उसका स्वल्प अंश भी यदि भलीभांति प्रकट हो पाए तो भी समाज का भारी उपकार करने वाला सिद्ध हो सकता है – इसी दृष्टि से ही इस प्रयास को विद्वान् जन स्वीकार कर कृतार्थ करें, यही निवेदन है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इस काव्य की भूमिका के लेखक श्री कृष्ण चन्द्र शर्मा संस्कृत के उत्कृष्ट विद्वान्, साहित्य के मर्मज्ञ, अत्यन्त सहृदय सज्जन हैं। जो हिमाचल प्रदेश के प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ एवं परम श्रेष्ठ कमिश्नर पद से सेवानिवृत्त होकर इस देवभूमि के धर्मशाला नगर को अलङ्कृत कर रहे हैं, ऐसे गुणी और गुणज्ञ द्वारा किया गया मूल्याङ्कन और दिया गया आशीर्वाद इस काव्य की महिमा वृद्धि के लिए शुभ शगुन है। इनकी इस आत्मीयतापूर्ण वाग्धारा से मैं कृतार्थ हूँ, और सदा-सदा इनका कृतज्ञ रहूँगा।

इस रचना के लिए अनुरूप विषय सामग्री का सङ्ग्रह करने में, उनके ज्येष्ट पुत्र डॉ० श्री हरिदत्त शर्मा ने, जो निरन्तर सहायता की है उसके अभाव में तो यह कार्य सम्पादन असम्भव ही था। इसलिए, इस रचना कार्य में उनका अनुपम योगदान मेरी विशिष्ट कृतज्ञता और साधुवाद का पात्र है और अन्त में इस कृति को उस महापुरुष तथा सज्जन समाज के लिए समर्पित करते हुए एक अपरिमित हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ तथा सभी से आशीर्वाद की अपेक्षा रखता हूँ।

सङ्कोच से विनम्र

केशवराम शर्मा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सहृदयावगाहनम्

सुदीर्घ काल से किसी महाकाव्य के रसास्वादन का अवसर नहीं मिला था। अब जाकर एक नव्य-भव्य संस्कृत महाकाव्य के अभिराम कानन में अविराम रमण का आलौकिक आनन्द प्राप्त हुआ। केशव शर्मा द्वारा प्रणीत **"श्री शालग्राम चरितम्"** को पढ़कर मैं आत्मविभोर हो गया।

मङ्गलाचरण से आरम्भ होने वाले इस काव्य में बारह सर्ग हैं। प्रत्येक सर्ग में प्रायः दो छन्द प्रयुक्त हुए हैं। परम्परा के अनुसार प्रत्येक सर्ग का अन्तिम श्लोक पूर्ववर्ती श्लोकों के छन्द से भिन्न छन्द में निबद्ध हुआ है। इस काव्य में अनुष्टुप का ही आधिपत्य है, सगन्ति में प्रायः उपजाति छन्द व्यवहृत हुआ है। इसका अपवाद है काव्य के बाहरवें सर्ग का अन्तिम श्लोक जो शार्दूलविक्रीडित छन्द में निबद्ध है। इसमें कुल 684 श्लोक हैं। सबसे कम श्लोक 35 दसवें सर्ग में तथा सबसे अधिक श्लोक 94 श्लोक आठवें सर्ग में है। प्रस्तुत काव्य में शान्त रस का सुन्दर विपाक हुआ है। प्रकृत शब्दों में प्रायः वैदर्भी तथा पाञ्चाली रीतियों के दर्शन होते हैं क्योंकि वे ही विषयानुरूप हैं। इसका नायक (आचार्य शालिग्राम) धीर प्रशान्त है। इस प्रकार इस ग्रन्थ में महाकाव्य की सुदीर्घ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

परम्परा का अनुसरण तो हुआ है, किन्तु पिष्टपेषण नहीं। इसके नव अभिनव पद्य द्रष्टव्य है।

किसी महाकाव्य के प्रायः अनेक पात्र होते हैं। और उनमें एक सर्वाधिक सुखर होता है। वही उसका नायक कहलाता है। तथापि अन्य पात्रों का अपना व्यक्तित्व भी होता है और वह पाठक अथवा रसिक के मन पर अपनी छाप छोड़ जाते हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ में भी अनेक पात्र हैं परन्तु कृपाराम, चिडीदेवी तथा भक्ति के अतिरिक्त कोई भी पात्र अधिक से अधिक उभर कर सम्मुख नहीं आता है। इसका कारण है नायक का सर्वाधिक व्यक्तित्व। नायक शालग्राम को कुशाग्रबुद्धि सङ्कट में भी धैर्यवान, स्वाभिमानी, आर्षी जीवनशैली वाला, परिश्रमी, स्फुट भाषण का धनी, स्वाध्यायी दर्शन निष्णात आचार्य के रूप में चित्रित किया गया है। निम्नाङ्कित श्लोक शालग्राम के चरित्र को सम्यग् उभारते हैं –

कुशाग्रबुद्धिर्विनयी गुरुसेवायरः शुचिः।
परिश्रमपरो नित्यमध्यगात् सुरभारतीम्॥ (4.28)

उत्कृष्टाध्यापनात् साधो र्व्यवहारात् परिश्रमात्।
संस्थापर्यायतां यातः प्रभावाञ्च विसृत्वरात्॥ (7.19)

जिज्ञासु संशयोच्छदं विपश्चित्साधुसङ्गतिम्।
श्रौतधर्मोपदेशं च प्रयुञ्जन् पुण्यमार्जयत्॥ (8.68)

नायक शालग्राम का उदात्त अवदात चरित्र मनोरम शब्दावली में सम्यक् चित्रित होता है। चिडी देवी का व्यक्तित्व इस श्लोक –

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हरेः सद्म यथा लक्ष्म्या शिवधाम यथोमया।
तथैवाभूषि सुगुणैः कृपारामालयस्तया॥ (2.32)

में अविस्मरणीय ढंग से उभरता है। ऐसे ही भक्ति का चरित्र भी सुन्दर किन्तु संक्षिप्त रूप से उपवर्णित हुआ है।

प्रसङ्गवश द्वितीय सर्ग में शालग्राम के ग्राम की सुषमा का वर्णन, जगदम्बा का स्तुतिगान (नौवें सर्ग के उन्नीसवें से चौंतीसवें श्लोक तक) तथा ज्ञान की महिमा का प्रतिपादन छठे सर्ग में पांचवें सर्ग से नौवें श्लोक तक हुआ है। ऐसे प्रसङ्गों से महाकाव्य की श्रीवृद्धि हुई है।

प्रकृत काव्य की भाषा सरल प्राञ्जल है, सुगम सुबोध है, कवि के मन्तव्य को स्पष्ट करने में पूर्णतः सक्षम है। शैली लालित्यपूर्ण है। **"विदधाति विनाशं तं वन्दे गिरिसुतासुतम्।"** (1.5) आदि प्रयोगों में अनुप्रास **"विनिद्रो यामिनी चिन्तामग्नो दुःखादयापयत्। अपराधं विना कारां नीयमानो यथा बलात्॥**(4.19) में उपमा तथा **"आतपे शीतलच्छाया सहयोगश्च सङ्कटे। अन्धकारे प्रकाशो वा लभ्यते लुदिते विधौ॥"** (3.42) में श्लेष तथा अन्यत्र भी अनेक अलङ्कारों का लास्य देखने को मिलता है। ऐसे प्रयोगों से प्रस्तुत काव्य की अपूर्व छटा अधिकाधिक मनोरम होकर उपस्थित हुई है।

"श्री शालग्राम चरितम्" में आई कतिपय उक्तियाँ विशेषतः उल्लेखनीय हैं। इनके उदाहरण यह है -

न यत्र कुक्कुटो रौति तत्र प्रातर्भवेन्न किम्? (7.60)
स्वतो दर्भाङ्कुरे तैक्ष्ण्यं स्वतः सिंहार्भके बलम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वतः प्रातःरवावाभा भविष्णौ वा स्वतश्च धीः ॥ (2.57)

कस्य वा भाविविपदां प्रतीकारे समर्थता? (3.18)

अधीत्योपार्जितं ज्ञानं स्वाध्यायेनैव पुष्यते। (5.37)

सन्तत्यर्थं विवाहः स्यात्। (7.33)

ऐसे कथन स्मरणीय हैं, अविस्मरणीय हैं तथा लाखों जनों के कण्ठ का हार बनने की क्षमता रखते हैं।

धन्य है यह अनूठा महाकाव्य, धन्य है इसका अनुपम रचयिता कवि, धन्य है इसका पुराण प्रवक्ता धीर-प्रशान्त नायक तथा धन्य हूँ मैं जिसे मुद्रण-प्रकाशन से पूर्व ही इस सौष्ठव सम्पन्न अद्वितीय कृति की पावन पुनीत धारा में अवगाहन का अवसर प्राप्त हुआ। इस महाकाव्य के विद्वान प्रणेता का अभिवादन-अभिनन्दन करने में मैं अपना अहोभाग्य समझता हूँ।

के.सी. शर्मा
287, सिविल लाईनस्
धर्मशाला-176215 (हि.प्र.)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दो शब्द

देववाणी संस्कृत निस्सन्देह विश्व की सब भाषाओं की जननी एवं समस्त भूमण्डल की सभ्यताओं एंव संस्कृतियों का अजस्त्र स्त्रोत है। पाश्चात्य संस्कृति के झंझावात एवं प्रवाह से यह भाषा भी अछूती न रह सकी है। कई दशकों से संस्कृत में मौलिक एवं काव्यकला परिपूर्ण रचनाओं का अभाव रहा है। जगद्भाषाजननी संस्कृत भाषा को इस सङ्कटकाल से उबारने में कुछ गिने चुने विद्वानों ने जो साधिकार भूमिका निभाई है उसमें संस्कृत काव्यकला को आज भी जीवन्त रखने में श्री केशव शर्मा का नाम अग्रगण्य है। उनका यह उद्घोष सभी संस्कृत प्रेमियों के लिए प्रेरणा स्त्रोत है –

कैलाश शैलादुदितोऽस्ति घोषः,
शिवस्य भाषा खलु रक्षणीया।
नो चेदियं देवधरा हिमाद्रेः,
भविष्यति म्लेच्छ कलङ्किताङ्गा॥

श्री केशव शर्मा जी की दार्शनिक एवं प्रौढ़ आध्यात्मिक चिन्तन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

से ओतप्रोत सभी संस्कृत रचनाओं के सन्दर्भ में किसी प्रकार का प्रकाश वही उद्भट विद्वान डाल सकता है जिसे साहित्य की सभी विद्याओं का ज्ञान एवं काव्य–महाकाव्य परम्परा के सभी पक्षों का विशद अनुशीलन हो। मैं तो इतना ही कह सकता हूँ कि संस्कृत जननी रूप दयार्द्र करुणा–पूरित सर्वथा भीत हरिण शावक की पाश्चात्य सभ्यता के प्रतीक उस महासिंह से रक्षा के लिए वे एक नृसिंह के रूप में गर्जना करते हुए अवतरित हुए हैं। मानों उनका यह प्रण है –

मातः क्षतं ते खलु पूरयामि।
स्वरक्तदानैः कुरु नात्र शोकम्॥

इथ्यं महिमामण्डित एक महान साहित्यकार, काव्यकार एवं एक दार्शनिक विद्वान ने अपने एक आराध्य के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए उस आलौकिक प्रकाश पुञ्ज की लोकयात्रा का वर्णन एक ऐसे महाकाव्य के रूप में प्रस्तुत किया है- मानों एक भारतीय चिन्तन एवं दर्शन परम्परा से ओतप्रोत विभूति को उसी परम्परा के पोषक एक महान् व्यक्तित्व ने शब्दों में समेटने का आलौकिक प्रयास किया हो।

निसन्देह आचार्य शालिग्राम शर्मा जी के एक ज्येष्ठ पुत्र होने के नाते तथा उनकी परम्परा के पोषक होने के कारण उस पुण्यात्मा के जीवन को जितने पास से मैंने देखा है उतने पास से कोई और शायद ही देख पाया हो तथापि काव्यकार श्री केशव शर्मा ने उनके अन्तस् की गहराईयों को टटोलते हुए इस **"शालग्राम चरितम्"** महाकाव्य में उनके मानस का जो तलस्पर्शी वर्णन किया है वह तो कभी मेरी कल्पना में भी नहीं रहा है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

काणादं गौतमं वर्चो वैयासं कापिलं तथा।
कालेनावनतिं नीतं शालग्रामेन चोन्नतिम्॥

काव्यकार ने मानों अपने उस गुरू-रूपी ध्येय में मां सरस्वती के साक्षात् दर्शन कर लिए थे -

अमूर्ताऽव्यक्तसारा सा काममन्यत्र वर्तताम्।
मूर्तरूपा तु वाग्देवी शालग्रामे प्रतिष्ठिता॥

"शालग्राम चरितम्" नामक यह महाकाव्य जहां एक विद्वन्मूर्धन्य की जीवनयात्रा का वर्णन है वहीं काव्य के उत्कर्ष, कल्पना के सौन्दर्य एवं रस गुण छन्द अलङ्कार आदि के प्रतिपादन का एक अनूठा सङ्गम है। उस ऋषिकल्प गुरु एवं पिता के मूर्तस्वरूप इस काव्यग्रन्थ रूप प्रौढ़ रचना के प्रकाशन के लिए आचार्य श्री का समस्त परिवार, शिष्यमण्डली एवं उन के सभी परिजन इस ग्रन्थ के रचनाकार श्री केशव शर्मा जी के सदैव ऋणी व आभारी रहेंगे।

विनीत
डॉ. हरिदत्त शर्मा
भक्ति सदन, ठोडो मैदान, सोलन (हि.प्र.)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आदर्श महानायक

आचार्य श्री शालग्राम शर्मा

हिमाचल को अपने जन्म और कर्म से भूषित करने वाले महाकवि आचार्य केशवराम शर्मा हिमाचल के सर्वोच्च तथा भारतवर्ष के मूर्धन्य संस्कृत कवि हैं जिन्होंने हिमाचल-वैभवम्, भारतशतकम्, मातृभूमि-शतकम्, अभिनव कविताञ्जलि:, भुवनेश्वरीचरितम् आदि उच्च कोटि के काव्य रचकर राष्ट्र को प्रदान किये हैं। अब इन्होंने वृहद् भारतवर्ष के महान् आदर्श पुरुष आचार्य श्री शालग्राम शर्मा के अनुकरणीय जीवन एवं व्यक्तित्व पर श्रीशालग्राम चरितम् नामक महाकाव्य रचा है जो इस महाकवि की अद्भुत प्रभावोत्पादक एवं प्राञ्जल शैली में लिखी गयी आनन्दप्रसवी एवं प्रेरणादायक रचना है।

इस महाकाव्य के नायक आचार्य श्री शालग्राम शर्मा जी का जन्म 9 अप्रैल 1918 को तत्कालीन पंजाब प्रान्त के ऊना (वर्तमान हिमाचल) के डैहण-कोडरा गांव में हुआ था। इनके बाल्यकाल में ही इनके पिता और माता का देहान्त हो गया। इनके नाना जी ने इनको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्कूली शिक्षा अपने गांव के विद्यालय से तथा कर्मकाण्ड की शिक्षा एक पण्डित से दिलाई। इसके बाद चाचा आदि के आग्रह पर विवाह करना तो मान गए परन्तु अपना अगला लक्ष्य प्राप्त करने हेतु काशी चले गए। वहां इन्होंने पहले सर्वदशर्नशास्त्री और फिर सर्वदर्शनाचार्य की परीक्षाएं वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण की। अनन्तर अध्यापन कार्य के साथ–साथ स्वाध्याय करते हुए इन्होंने वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय से न्यायाचार्य तथा वैशेषिक दर्शनाचार्य और पंजाब विश्वविद्यालय से व्याकरणाचार्य की परीक्षाएं ससम्मान उत्तीर्ण की।

आचार्य श्री शालग्राम शर्मा ने ऊना, अमृतसर और दरियाखान के संस्कृत महाविद्यालयों में अध्यापन कार्य किया था भारत–पाक विभाजन से पूर्व डेरा इस्माइलखान के और विभाजन के बाद नयनादेवी (बिलासपुर) के संस्कृत महाविद्यालयों में प्रधानाचार्य रहे। बच्चे उच्च शिक्षा योग्य हुए तो कुछ समय जालन्धर में अध्यापन कराने के बाद आप पंजाब विश्व–विद्यालय चण्डीगढ़ के स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग के आरियेण्टल संभाग में पण्डित प्रोफेसर के उच्च पद पर नियुक्त हुए जहां उन्होंने 1961 तक आचार्य और एम.ए. की कक्षाएं पढ़ाई। तदुपरान्त हिमाचल के तत्कालीन शिक्षा निदेशक के विशेष आग्रह पर सोलन के उस संस्कृत महाविद्यालय में वह तत्समान पद पर नियुक्त हुए जिसे उन्हीं दिनों हिमाचल सरकार ने स्तरोन्नत करके पंजाब विश्वविद्यालय के आरियेण्टल सम्भाग के पैट्रन पर स्नातकोतर संस्थान का दर्जा प्रदान किया। यहां नौ वर्षों तक आचार्य की स्नात्तकोतर कक्षाएं पढ़ाने के बाद कुछ समय शिमला और सुन्दरनगर के राजकीय संस्कृत महाविद्यालयों में आचार्य और प्रधानाचार्य रहे। अन्त में सोलन के स्नात्तकोतर संस्कृत महाविद्यालय में प्रधानाचार्य रहकर 1976 में सरकारी सेवा से निवृत्त हुए। तदुपरान्त आप कुछ वर्ष केन्द्रीय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आदर्श स्नातकोत्तर संस्कृत महाविद्यालय डोहगी में शास्त्रचूड़ामणि तथा नयनादेवी में पुनः प्रधानाचार्य रहे।

गुरुप्रव्रर आचार्य श्री शालग्राम शर्मा जी की अध्यापन कला विशिष्ट एवम् अनुपम थी। मुझे भी दो वर्ष शिष्य बनकर उनके चरणों में बैठकर उनके मुखारबिन्द से व्याकरणाचार्य में निर्धारित शास्त्रीय ग्रन्थों को पढ़ने का सौभाग्य ईश्वर की कृपा से प्राप्त हुआ था। वह जब व्याकरण और दर्शन की क्लिष्ट पंक्तियों के गूढ़ से गूढ़तम रहस्यों को अत्यन्त सरल शैली में प्रकट करते थे तो हृदय आनन्द से विभोर हो जाता था। ऐसा प्रतीत होता था कि स्वयं महर्षि पतञ्जलि, भतृहरि, नागेश या उदयानाचार्य उनके रूप में साक्षात् सामने विराजमान है। अधिक बोले बिना अपने व्यवहारमात्र से संस्कारों को देने का उनका तरीका भी अद्भुत था। उन्होंने लम्बी अवधि तक संस्कृत पाठशालाओं से लेकर महाविद्यालय तक की दर्जन से अधिक संस्कृत शिक्षण संस्थाओं एवं संस्थानों में अध्यापन कराते हुए हजारों शिष्यों और सैकड़ों शिक्षकों को अपने परिनिष्ठित शास्त्रीय ज्ञान और श्रेष्ठ संस्कारों से भरकर आप्लावित कर दिया।

आचार्य श्री शालग्राम शर्मा जी का जीवन संघर्षपूर्ण रहा। उनके पिता, माता और एकमात्र भाई उनके बाल्यकाल में ही दिवङ्गत हो गए। उनके हठी चाचा उनको केवल कृषि कार्यों और पौरोहित्य में लगाने हेतु बार-बार उनके विद्यालय में आकर उनको उच्च अध्ययन करने से रोक कर उन्हें वापिस लाने को बाध्य करते रहे। फलस्वरूप भागकर उन्हें बार-बार शिक्षण संस्थाएं बदलनी पड़ी। डेरा इस्माइल खान में पांच वर्ष प्रधानाचार्य रहते हुए जब भारत-पाक विभाजन होने पर साम्प्रदायिक दंगे फैले तब वहां से भागकर जान हथेली पर रखकर रातों में छिपते-भागते

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कई दिनों बाद भारत एवं अपने घर सुरक्षित पहुंचने में सफल हुए। उस समय उन्होंने हिन्दु–मुस्लिमों की पारस्परिक मार–काट की जो घटनाएं और अन्य अत्याचार अपनी आंखों से देखे उसे सुनकर और स्मरण कर आज भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं। आचार्यजी जब श्री नयनादेवी में प्रधानाचार्य थे उस समय उनकी धर्मपत्नी श्रीमती भक्तिदेवी का निधन हो गया। उस समय उनके छोटे–छोटे चार पुत्रों में सबसे छोटा डेढ़ वर्ष का था। उनके पालन हेतु आदर्शवादी आचार्य श्री ने दूसरा विवाह नहीं किया बल्कि अपने हाथों से उन सबका लालन–पालन, वस्त्र प्रक्षालन, भोजन बनाने खिलाने आदि का सारा काम लम्बी अवधि तक स्वयं किया। उन्होनें पितृसुलभ दायित्व के साथ साथ माँ के प्यार दुलार और लालन–पालन का दोहरा दायित्व निभाया। सरकारी सेवा में भी एक बार उन्हें अन्याय और अपमान से जूझना पड़ा। सरकार ने आचार्य श्री को राजकीय संस्कृत महाविद्यालय सुन्दरनगर में अस्थायी पदोन्नति देकर प्रधानाचार्य बनाया। परन्तु दो वर्ष बाद जब उनकी पदोन्नति को स्थायी करने की प्रक्रिया चल रही थी तब मात्र शास्त्री योग्यता के एक षडयन्त्री शिक्षक ने ऊंची पहुँच के बल पर उनसे इस पद को छीन लिया और वह प्रधानाचार्य बन बैठा। इस अन्याय के विरुद्ध सारा संस्कृत जगत् आन्दोलित हो उठा। आचार्यश्री को न्यायालय में जाना पड़ा। अनन्तर सरकार ने आचार्यश्री को सोलन के राजकीय स्नातकोतर संस्कृत महाविद्यालय में प्रधानाचार्य नियुक्त किया। जीवन में ऐसे कुछ अन्य सङ्कटों को भी संघर्ष करके उन्होंने झेला।

आचार्य श्री शालग्राम शर्मा जी सभी प्रकार के पारिवारिक और सामाजिक दायित्वों को निभाने एवं पूरा करने में जागरूक और सफल रहे। वह धर्म और भारतीय संस्कृति की रक्षा, प्रसार तथा अपने पारलौकिक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नि:श्रेयस की सिद्धि हेतु भी निरन्तर तत्पर रहे। पूजा और साधना उनका नित्यकर्म था। शताधिक बार पुराण प्रवचनों के द्वारा उन्होंने समाज के लाखों लोगों को सद्ज्ञान और श्रेष्ठ संस्कार देकर उन्हें नैतिक एवं आध्यात्मिक मार्ग पर अग्रसर किया। अपनी धनराशि से अनेक स्थानों पर सैकड़ों ब्राह्मण बालकों को शुद्ध वेद-मन्त्रोच्चारण तथा कर्मकाण्ड सिखाने हेतु प्रशिक्षण शिविर लगाए। इसी उद्देश्य के लिए उन्होंने अपने गांव में ब्राह्मण बालकों के लिए सर्वाधिक वेद, ज्योतिष तथा कर्मकाण्ड प्रशिक्षण पाठशाला खोली जिसके भवन निर्माण, अध्यापक वेतन तथा नि:शुल्क भोजन व्यवस्था के लिए एक न्यास की स्थापना की। उन्होंने इस श्रेष्ठ उद्देश्य के लिए अपनी लाखों रुपये की अर्जित राशि अपने देहान्त से पूर्व इस न्यास में जमा की। बानवें (92)वर्ष की आयु में उनका निधन हुआ।

भारतवर्ष के मूर्धन्य विद्वान एवं शास्त्रमर्मज्ञ आचार्य श्री शालग्राम जी ने वेदस्तुति, शिवमहिम्न स्त्रोत, दुर्गा सप्तशती, श्रीमद्भगवद्गीता और न्यायदर्शन पर संस्कृत में सुगम और प्रामाणिक भाष्य हिन्दी टीका सहित रचे हैं जिनकी सराहना भारत के प्रख्यात विद्वानों ने की है। इसके अतिरिक्त अनेक गोष्ठियों और विद्वत्सम्मेलनों में उन्होंने गम्भीर शास्त्रीय विषयों पर अनेक मूल्यवान शोधपत्र प्रस्तुत किए। आचार्य श्री शालग्राम जी द्वारा संस्कृत, भारतीय संस्कृति, समाज एवं राष्ट्र के लिए किए गए समग्र एवं विशिष्ट योगदान के लिए समय-समय पर हिमाचल सरकार, भारतसरकार और पुन: भारत के महामहिम राष्ट्रपति ने उनको विशिष्ट पुरस्कारों से सम्मानित किया।

ऐसे आदर्श महापुरूष के प्रशस्त और अनुकरणीय जीवनचरित

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और व्यक्तित्व पर महाकाव्य रचकर महाकवि श्री केशवराम शर्मा ने अपनी विपुल काव्य सम्पत्ति तथा सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय निधि में एक अभिनव बहुमूल्य रत्न जोड़कर महनीय एवं ऐतिहासिक कार्य किया है। इस महाकाव्य की समस्त कथा वस्तु यथार्थ पर आधारित है। कवि ने इसमें अंशमात्र भी असत्य या कल्पित बात नहीं लिखी है। इस महाकाव्य के आदर्श नायक आचार्य श्री शालग्राम जी के जीवन और व्यक्तित्व की विशिष्टता के कारण तथा इस महाकाव्य के रचियता आचार्य श्री केशव राम शर्मा की प्रौढ़, प्राञ्जल एवं गज़ब की प्रभावोत्पादक शैली के कारण महाकाव्य उत्कृष्ट कोटि का बन पड़ा है जो पढ़ने पर पाठकों को श्रद्धा-वनत एवं आनन्दविभोर कर देता है। यह महाकाव्य काव्यशास्त्रीय लक्षणों और तत्वों से समन्वित एवं समृद्ध है। प्रसाद गुण वैदर्भी रीति, मनोरम अलङ्कारों, अन्योक्तियों, व्यग्यों, शान्त आदि रसों, काव्योचित प्रौढ़ि से समृद्ध तथा पदे-पदे सत्प्रेरणा और चरित्रोन्नायक सन्देश देने वाली यह रचना निःसन्देह उत्कृष्ट महाकाव्य कोटि में आती है। विश्वास है कि यह कृति सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य के मध्य एक कालजयी रचना साबित होगी। युगों-युगों तक यह महाकाव्य समस्त विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के लिए आनन्द और प्रेरणा का स्त्रोत बनेगा।

इस महाकाव्य के रचयिता आचार्य श्री केशव राम शर्मा जी आचार्य श्री शालग्राम शर्मा जी को अपना आदर्श बनाकर उनसे प्रेरणा और उर्जा प्राप्त करके आगे बढ़े हैं। आचार्य श्री शालग्राम शर्मा जी की तरह ही इन्होंने भी धर्म और संस्कृति की रक्षा और प्रसार के लिए उल्लेखनीय कार्य किया है, हजारों शिष्यों को शास्त्रीय रहस्य पढ़ाकर उन्हें सद्ज्ञान और श्रेष्ठ सस्कारों से सम्पन्न बनाया है। सैकड़ों बार पुराण प्रवचनों द्वारा लाखों लोगों को नैतिक और आध्यात्मिक मार्ग पर लगाया

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

है, निरन्तर तप और साधना द्वारा अपने ब्रह्मबल को पुष्ट किया है, पचास से अधिक शोधपत्र तथा दर्जनभर संस्कृत में उच्चकोटि के मौलिक काव्य महाकाव्य रचकर राष्ट्र को देकर समाज को आनन्दानुभूति के साथ जागृत करने का महनीय कार्य किया है।

आचार्य श्री केशव राम शर्मा को भी विशिष्ट विद्वत्ता तथा समग्र योगदान के लिए समय-समय पर विभिन्न संस्कृत अकादमियों, हिमाचल सरकार तथा भारत सरकार ने अनेक उच्च पुरस्कारों से तथा महामहिम राष्ट्रपति ने विशिष्ट पुरस्कार से सम्मानित किया है।

प्रस्तुत महाकाव्य के नायक आचार्य श्री शालग्राम शर्मा जी ने तथा इसके रचयिता महाकवि श्री केशव शर्मा ने हिमाचल में जन्म लेकर अपने गुणों से भारतवर्ष के विशाल विद्वत्समुदाय के दिलों को जीता है। इन दोनों विभूतियों को मेरा शतशः नमन!

तिथि : 05 सितम्बर 2013 विनीत

स्थान : सिसोदिया भवन, जवाहर पार्क, सोलन (हि.प्र.)

डॉ. कुमार सिंह आचार्य

पूर्व प्रधानाचार्य-राजकीय संस्कृत महाविद्यालय सोलन

पूर्व राज्य संस्कृत अधिकारी-हिमाचल प्रदेश

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रथमः सर्गः

ग्रन्थ के आरम्भ में गायत्री वन्दना द्वारा मङ्गलाचरण किया गया है। अनन्तर वाग्देवी, गणेश, गुरुपरम्परा, श्रद्धेयजनों तथा परमेश्वर को विनयपूर्वक प्रणाम किया है। उनसे निर्विघ्नता पूर्वक ग्रन्थपूर्ति तथा बुद्धि की शुद्धि का आशीर्वाद मांगा है। यद्यपि महापुरुषों की चर्चा स्वयं मङ्गलमयी होती है अतः पृथक् मङ्गलाचरण की आवश्यकता नहीं भी होती, तथापि इस परम्परा को समाज में जागृत रखने के उद्देश्य से इसे आरम्भ में लिखना उचित होता है। इसलिए यहां भी इस शिष्टाचार का आदर किया गया है।

इस चरित्र चर्चा के विषय एवं नायक विप्रप्रवर हैं और विप्रत्व का विशिष्ट आधार गायत्री ही है तथा उस महापुरुष का भी गायत्री उपासना के प्रति अनन्य आदर था। इसलिए भी गायत्री वन्दना ही सर्वप्रथम की गई है।

गायत्रीं प्रथमं वन्दे निर्मलज्ञानदायिनीम्।
मतिमान्द्यहरामर्कमन्दिरां वेदमातरम्॥1॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – प्रथमम् निर्मलज्ञानदायिनीम् मतिमान्द्यहराम् अर्कमन्दिराम् वेदमातरम् गायत्रीम् वन्दे।

सर्वप्रथम मैं निर्मल ज्ञान को देने वाली, बुद्धि की मन्दता को दूर करने वाली, भगवान् सूर्य में निवास करने वाली तथा वेदों की माता गायत्री की वन्दना करता हूँ।

व्यक्तां वर्णैः पदैर्वाक्यैरर्थैश्च परमार्थतः।
अव्यक्तामपि कारुण्यात् तां नमामि सरस्वतीम् ॥2॥

अन्वयः – परमार्थतः अव्यक्ताम् अपि वर्णैः पदैः वाक्यैः अर्थैः च कारुण्यात् व्यक्तिम् आगताम् ताम् सरस्वतीम् नमामि।

जो वाग्देवी परमार्थ रूप में अव्यक्त होने पर भी वर्णों, शब्दों, वाक्यों तथा अर्थों के द्वारा करुणापूर्वक अभिव्यक्त होती है, उस सरस्वती को मैं प्रणाम करता हूँ।

यामुपास्य विदामग्रेऽज्ञानमुद्रितवागपि।
वागीश्वरायते सद्यो जाड्यापोहाय तां स्तुवे ॥3॥

अन्वयः – अज्ञानमुद्रितवाक् अपि याम् उपास्य विदाम् अग्रे सद्यः वागीश्वरायते ताम् जाड्यापोहाय स्तुवे।

जिस वाग्देवी की उपासना करके अज्ञान से कुण्ठित वाणी वाला व्यक्ति भी अविलम्ब बृहस्पति के समान ज्ञान सम्पन्न हो जाता है, मैं अपने अज्ञान को दूर करने की इच्छा से उस सरस्वती की स्तुति करता हूँ।

ऋषिभिस्त्रिदशैर्वन्द्यैर्ब्रह्मविष्णुशिवैस्तथा।
अपि या सर्वदा वन्द्या कियाँस्तस्यै मम स्तवः ॥4॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः - या ऋषिभिः त्रिदशवृन्दैः तथा ब्रह्मविष्णुशिवैः अपि सर्वदा वन्द्या (अस्ति) तस्यै मम स्तवः कियान्।

जो वाग्देवी ब्रह्मस्वरूपा होने से, ऋषियों, देवगणों तथा ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव के लिए भी नित्य वन्दनीया है, उसके लिए मेरी स्तुति का तो कितना महत्त्व हो सकता है।

यः प्रत्यूहसमूहस्य तूलराशेरिवानलः।
विदधाति विनाशं तं वन्दे गिरिसुतासुतम्॥5॥

अन्वयः - यः अनलः तूलराशेः इव प्रत्यूहसमूहस्य विनाशम् विदधाति तम् गिरिसुतासुतम् वन्दे।

जो विघ्नों के समूह का विनाश ऐसे करते हैं जैसे अग्नि रूई के ढेर को जला देता है, उस पर्वतपुत्री के पुत्र विघ्नेश्वर की मैं वन्दना करता हूँ।

अज्ञानान्ध्यौघविध्वंसव्यसनासक्तमानसाम्।
सदाशिवसमुद्भूतां वन्दे गुरुपरम्पराम्॥6॥

अन्वयः - अज्ञानान्ध्यौघविध्वंसव्यसनासक्तमानसाम् सदाशिव-समुद्भूताम् गुरुपरम्पराम् वन्दे।

आदिगुरु सदाशिव से निकली हुई जो लम्बी गुरुपरम्परा अज्ञान के अन्धकार के समूह के विध्वंस रूपी व्यसन में आसक्त है उसे मैं वन्दना करता हूँ।

मातृतातगुरुस्वेष्टज्येष्टश्रेष्ठजनानपि-
श्रद्धाविनयवानर्च्यान् भूयो भूयो नमाम्यहम्॥7॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः - श्रद्धाविनयवान् अहम् अर्च्यान् मातृ-तात-गुरु-स्वेष्ट-ज्येष्ट-श्रेष्ठ-जनान् अपि भूयः भूयः नमामि।

अत्यन्त श्रद्धा और विनयपूर्वक मैं अपने अर्चनीय माता, पिता, गुरु इष्टदेव, ज्येष्ट एवं श्रेष्ठ जनों को भी इस कार्य के आरम्भ में बार-बार प्रगाम करता हूँ।

सर्वसंसारकर्तारं भर्तारं करुणापरम्।
हर्तारं च नमस्यामि परमेश्वरमाशिषे ॥8॥

अन्वयः - सर्व संसारकर्तारम् भर्तारम् हर्तारम् च करुणापरम् परमेश्वरम् आशिषे नमस्यामि।

और मङ्गलाचरण के अन्त में मैं ग्रन्थरचना की योग्यता और सफलता का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए समस्त संसार के कर्ता, पालक तथा संहारक करुणामय परमेश्वर को प्रणामार्पण करता हूँ।

विद्वन्मूर्द्धमणेः श्रीमच्छालग्रामस्य पावनम्।
चरित्रं सातिसङ्कोचं लिखितुं समुपक्रमे ॥9॥

अन्वयः - मूलानुसारेण एव।

इस मङ्गलाचरण के अनन्तर मैं विद्वानों के मस्तक की मणि की तरह उज्ज्वल श्रीयुत शालग्राम जी के पावन जीवन चरित्र को, अपनी क्षमता पर संदेह के कारण अति सङ्कोचपूर्वक लिखने का उपक्रम कर रहा हूँ।

प्रांशुदेवतरूत्सेधं लघीयानर्कपादपः।
असमर्थो यथा मातुं ममाप्यत्र तथा गतिः ॥10॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – यथा लघीयान् अर्कपादपः प्रांशुदेवतरूत्सेधं मातुम् असमर्थो (भवति) अत्र मम गतिः अपि तथा (अस्ति)।

जैसे एक छोटा सा आक का पौधा लम्बे देवदार वृक्ष की ऊँचाई को पार पाने में सर्वथा असमर्थ होता है, उस महापुरुष के चरित्र का अविकल वर्णन करने में मेरी गति भी वैसी है।

यदीयं ज्ञानगाम्भीर्यमतिशेतेऽप्यपांपतिम्।
मया मीयेत कूपेऽपि कुण्ठितेन कथं नु सः ॥11॥

अन्वयः – यदीयम् ज्ञानगाम्भीर्यम् अपांपतिम् अपि अतिशेते सः कूपे अपि कुण्ठितेन मया कथम् नु मीयेत।

जिस विद्वान् के ज्ञान का गाम्भीर्य अगाधता में समुद्र को भी पीछे छोड़ जाता है, उस का पार पाना मेरे द्वारा कैसे सम्भव है जो एक तालाब को पार करने में भी कुण्ठित हो जाता है।

पादाभ्यां सागरं गूढ़ं पक्षाभ्यां विस्तृतं नभः।
चक्षुर्भ्यामिव विश्वं वा हा पारयितुमुत्सहे॥12॥

अन्वयः – पादाभ्याम् गूढ़म् सागरम् (इव) पक्षाभ्याम् विस्तृतम् नभः (इव) वा चक्षुर्भ्याम् विश्वम् इव पारयितुम् उत्सहे (इति) हा।

बड़े खेद और आश्चर्य की बात है कि इस महान् विद्वान् का मूल्याङ्कन करता हुआ मैं पैरों से गहरे सागर, पंखों से विशाल गगन और दो आंखों से विश्व का पार पाने का उत्साह कर रहा हूँ जो कभी सम्भव ही नहीं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शालग्रामगुणग्रामाकर्षिता मे कृशापि धीः।
श्रद्धातिशयितौत्कण्ठ्यात् तच्चर्चां हि विधित्सति ॥13॥

अन्वयः - स्पष्ट एव।

यद्यपि मेरी बुद्धि असमर्थ है। इतना दुःसाध्य कार्य इसके वश का नहीं है। परन्तु श्री शालग्राम के गुणसमूह ने इसे ऐसा आकर्षित किया कि अत्यन्त श्रद्धा के कारण इस में उत्कण्ठा जाग उठी है। इस कारण यह उन की चरित्र चर्चा को करना चाहती है।

श्रीशालग्रामचरितमसमर्थपदैर्मया।
कथं पारयितुं शक्यं मर्त्येनेव त्रिविष्टपम् ॥14॥

अन्वयः - मर्त्येन असमर्थपदैः त्रिविष्टपम् इव मया श्री शालग्राम-चरितम् पारयितुम् कथम् शक्यम्।

जैसे एक मनुष्य अपने असमर्थ कदमों के द्वारा स्वर्ग का पार नहीं पा सकता उसी तरह मैं भी अर्थाभिव्यक्ति में कुण्ठित होने वाले अपने शब्दों के द्वारा श्री शालग्राम के गहन जीवनचरित्र को पूर्ण रूप से कैसे वर्णन कर सकता हूँ।

न परं मन्थरायन्ते कर्मणां महतामपि।
नगारोह इवारम्भे मादृग्दुःसाहसा जनाः ॥15॥

अन्वयः - परम् मादृग्दुःसाहसाः जनाःमहताम् कर्मणाम् अपि आरम्भे नगारोहे इव न मन्थरायन्ते।

परन्तु मेरे जैसे दुःसाहसी लोग असम्भव, जटिल बड़े कामों में भी इस तरह प्रवृत्त हो जाते हैं जैसे कठिनतम पर्वतारोहण के लिए कुछ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लोग हिम्मत कर डालते हैं।

यस्य शास्त्रज्ञता ज्ञानालोकं लोके यथाऽतनोत्।
तत्कथापि तथा कुर्यादिति सा ह्यभिधीयते ॥16॥

अन्वयः – यस्य शास्त्रज्ञता लोके यथा ज्ञानालोकम् अतनोत् तत्कथा अपि तथा कुर्यात् इति सा हि अभिधीयते।

जिनके विशद शास्त्रज्ञान ने जैसे संसार में ज्ञान का प्रकाश फैलाया है उसी तरह उनकी चरित्र कथा भी ज्ञानालोक का विस्तार करेगी, इसी विश्वास से यह चर्चा की जा रही है।

स्थापिता येन वैदुष्यमानदण्डाश्चतुर्दिशम्।
चर्चया सोऽभ्यर्चनीयः कृतज्ञैः सुकृती खलु ॥17॥

अन्वयः – येन चतुर्दिशम् वैदुष्यमानदण्डाः स्थापिताः सः सुकृती कृतज्ञैः चर्चया अभ्यर्चनीयः खलु।

जिन्होंने अपनी विद्वत्ता के मानदण्ड चारों दिशाओं में स्थापित किए हैं उन सुकृती विद्वान् की चरित्रचर्चा कृतज्ञ जनों द्वारा एक अर्चना के समान है जो आवश्यक है।

तस्य पावनसत्कीर्तिदीपवर्तिश्चिरं ज्वलेत्।
तदर्थं मे वचःसारस्तैलतुल्यो हि सिद्ध्यतु ॥18॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

उनकी सबको पवित्र कर देने वाली श्रेष्ठ कीर्ति की दीपज्योति अनन्तकाल तक जलती रहकर समाज को सदा आलोकित करती रहे इसलिए

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मेरा यह काव्यरस तैलधारा की तरह उसे सदा प्रज्ज्वलित करता रहे।

दयार्जवतपोविद्याशीलशालीनतादयः।
समवेता गुणा यत्रैतादृशा विरला विदः ॥19॥

अन्वयः - यत्र दयार्जवतपोविद्याशीलशालीनतादयः गुणाः समवेताः (भवन्ति) एतादृशाः विदः विरला (एव)।

जिन में दया, नम्रता, तप, विद्या सदाचार एवं शालीनता आदि दुर्लभ गुण इक्ट्ठे उपलब्ध हों, ऐसे विद्वान् संसार में विरले ही होते हैं। श्री शालग्राम उनमें से एक थे।

न प्रकाश्येतेदृशाणां यशश्चेल्लोकमङ्गलम्।
यत्र तत्र प्रयुक्ता तन्निष्फला स्यात् सरस्वती ॥20॥

अन्वयः - चेत् ईदृशाणाम् (विदुषाम्) लोकमङ्गलम् यशः न प्रकाश्येत तत् यत्र तत्र प्रयुक्ता सरस्वती निष्फला स्यात्।

और यदि ऐसे आदरणीय विद्वानों के संसार के कल्याण कारक यश को भी प्रकाश में न लाया जाये तो कहीं इधर-उधर प्रयुक्त की गई वाणी निष्फल ही समझनी चाहिए।

कदाचित् क्वचिदौत्कण्ठ्यात् सत्पात्रे वागधीश्वरी।
साकल्येनावतरति शालग्रामे यथोर्वरा ॥21॥

अन्वयः - उर्वरा वागधीश्वरी कदाचित् क्वचित् सत्पात्रे (एव) औत्कण्ठ्यात् साकल्येन अवतरति यथा शालग्रामे।

शास्त्रों के निगूढ़ तत्त्वों के रहस्यों को अभिव्यक्त करने में समर्थ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वागीश्वरी उत्कण्ठापूर्वक कभी-कभी और कहीं-कहीं समग्र रूप से किसी सत्पात्र में ही उतरती है जैसे श्री शालग्राम में। ऐसे विद्वान् सदा नहीं होते।

एतादृक्प्राज्ञचरितचर्चाव्याजेन वा पुनः।
काव्यपुष्पोपहारैरप्यर्चिता स्यात् सरस्वती ॥22॥

अन्वयः - वा पुनः एतादृक्प्राज्ञचरितचर्चाव्याजेन काव्य-पुष्पोपहारैः सरस्वती अपि अर्चिता स्यात्।

अथवा इस प्रयास का यह भी उद्देश्य है कि इस प्रकार के महान् विद्वान् की चरित्र चर्चा के बहाने काव्यपुष्पों के उपहारों द्वारा सरस्वती की अर्चना भी हो जाएगी।(विद्वानों के प्रशस्त योगदान की चर्चा सरस्वती की पूजा ही तो है।)

गीर्यस्य पावयामास समाजं पारमार्थिकी।
गिरं मे सापि निःसारां न कथं पावयिष्यति ॥23॥

अन्वयः - यस्य परमार्थिकी गीः समाजं पावयामास सा निः साराम् अपि मे गिरं कथं न पावयिष्यति।

श्रेष्ठतम ज्ञानतत्त्व का प्रतिपादन करने वाली जिनकी वाणी ने विशाल अध्येताओं तथा श्रद्धालुओं के समाज को पवित्र किया है, वह उनकी सेवा में प्रवृत्त मेरी वाणी को भी क्यों पवित्र नहीं करेगी। चाहे यह निःसार ही क्यों न हो।

या गङ्गाऽगण्यपापौघविध्वंसमनुतिष्ठति।
सा त्वेकास्थिपवित्रत्वमनायासं विधास्यति ॥24॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – या गङ्गाऽगण्यपापौघविध्वंसमनुतिष्ठति सा एकास्थिपवित्रत्वम् तु अनायासम् विधास्यति।

क्योंकि–जो गङ्गा असंख्य पापसमूहों का भी विध्वंस कर देती है, वह एक अस्थि को तो अनायास ही पवित्र कर देगी। (इसलिए मैं अपने प्रयास की सफलता के प्रति आश्वस्त हूँ।)

प्रतिपन्ने परं पारं वैदुष्ययशसोः खलु।
यथा मे वाचि तस्मिंस्तु न तथाऽलङ्कृतिः कृतिः ॥25॥

अन्वयः – वैदुष्ययशसोः परम् पारम् प्रतिपन्ने तस्मिन् तु (इयम्) कृतिः तथा अलङ्कृतिः न यथा मे वाचि (अस्ति)।

विद्वत्ता और यश की परकाष्ठा को पहुँचे हुए उनके लिए तो यह रचना उतनी शोभादायिनी नहीं हो सकती है जितनी मेरी वाणी के लिए होगी।

न देवेऽतिशयाधानं क्रियते पूजया तथा।
प्रेम्णा पवित्रभावेन वरिवस्याकरे यथा ॥26॥

अन्वयः – पूजया देवे तथा अतिशयाधनं न क्रियते यथा प्रेम्णा पवित्रभावेन वरिवस्याकरे (क्रियते)।

क्योंकि, विधिपूर्वक की गई पूजा के द्वारा भी पूज्य देवता में वैसा अतिशय पैदा नहीं किया जा सकता जैसा प्रेम और पवित्र भाव से पूजा करने वाले में गुणवृद्धि हो जाती है।

विद्याविनयसंपत्तिः क्वचिदेवेदृशे विदि।
लभ्यते न तु सर्वत्र माणिक्यं हि यथाऽचले ॥27॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – विद्याविनयसम्पत्तिः क्वचित् ईदृशे विदि (एव) लभ्यते सर्वत्र तु न, यथा माणिक्यं अचले हि (लभ्यते)।

विद्या और विनय की एकत्र विलक्षण सम्पन्नता ऐसे ही विद्वान् में कहीं-कहीं मिलती है न कि सर्वत्र। ठीक वैसे ही जैसे माणिक्य सब पर्वतों में नहीं मिलता।

भ्रमणं वाङ्मयारण्ये चिन्तनं तत्त्वसंहतौ।
विरागो नश्वरे चाभूद् यस्य धन्यः स विद्वरः ॥28॥

अन्वयः – यस्य भ्रमणं वाङ्मयारण्ये, चिन्तनं तत्त्वसंहतौ, विरागः च नश्वरे अभूत् स विद्वरः धन्यः (आसीत्)।

विद्वानों में श्रेष्ठ वे तो वस्तुतः धन्य थे जिन का भ्रमण सदा सभी विषयों के विशाल साहित्य के वन में हुआ करता था, चिन्तन परमार्थ तत्त्व के समूह में तथा नाशवान् पदार्थों में परिपक्व वैराग्य होता था।

सहस्रग्रन्थसंदोहसारो यस्मिन् समाहितः।
यथाम्भः सरितां सिन्धौ स धन्यो ज्ञानविग्रहः ॥29॥

अन्वयः – यथा सरिताम् अम्भः सिन्धौ (तथा) यस्मिन् सहस्रग्रन्थ-सन्दोहसारः समाहितः (अभूत्) सः ज्ञानविग्रहः धन्यः।

जिन में हजारों ज्ञान ग्रन्थों का सार ऐसे समाया हुआ था, जैसे नदियों का जल समुद्र में निहित होता है वे ज्ञान के साक्षात् मूर्ति वास्तव में धन्य थे।

अपि यस्याकृतिर्मौना संशयध्वान्तहारिणी।
मुखरा तु कथं न स्याज्ज्ञानभानुसमुज्ज्वला ॥30॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – ज्ञानभानुसमुज्ज्वला यस्य आकृतिः मौना अपि संशय-ध्वान्तहारिणी (आसीत्) मुखरा तु कथं न स्यात्।

ज्ञान के प्रकाश को चारों ओर फैलाने वाली उनकी उज्ज्वल आकृति जब मौन होती थी तब भी निकट बैठे जिज्ञासु सज्जनों के संशयों के अन्धकार को दूर कर देती थी, जब तो वह बोल पड़े तब तो वैसा भला क्यों न करे। (ठीक उस सूर्य की तरह जो उदित होने से पहले ही अंधेरा हटा देता है, उदय होने पर तो क्यों न हटाए)।

अमूर्ताऽव्यक्तसारा सा काममन्यत्र वर्तताम्।
मूर्तरूपा तु वाग्देवी शालग्रामे प्रतिष्ठिता ॥31॥

अन्वयः – अमूर्ता अव्यक्तसारा वाग्देवी कामम् अन्यत्र (अपि) वर्तताम्, मूर्तरूपा तु सा शालग्रामे प्रतिष्ठिता (आसीत्)।

वाग्देवी सरस्वती अमूर्त और अपने सार को स्पष्ट रूप में न दिखाने वाली, चाहे अन्यत्र भी कहीं उपलब्ध हो जाए, परन्तु अपने विशद वैभव को अभिव्यक्त करती हुई तो वह शालग्राम में ही मूर्तरूप में प्रतिष्ठित हुई थी।

कलिना क्षीयमाणाऽपि सर्गाद्यर्षिपरम्परा।
तपोविद्यामयी वृद्धिं शालग्रामे पुनर्गता ॥32॥

अन्वयः – तपोविद्यायमी सर्गाऋषिपरम्परा कलिना क्षीयमाणा अपि शालग्रामे पुनः वृद्धिम् गता।

सृष्टि के आदि से चली आ रही ऋषिमुनियों की तपस्या और विद्या की परम्परा कलियुग के कारण ह्रास को प्राप्त हो रही थी परन्तु

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शालग्राम में आकर फिर से वृद्धि को पा गई।

काणादं गौत्तमं वर्चो वैयासं कापिलं तथा।
कालेनावनतिं नीतं शालग्रामेण चोन्नतिम्॥33॥

अन्वयः - काणादम् गौत्तमम् वैयासम् तथा कापिलम् वर्चः कालेन अवनतिम् शालग्रामेण उन्नतिम् च नीतम्।

कणाद, गौत्तम, व्यास तथा कपिल जैसे ऋषियों का तथा उनके वैशेषिक, न्याय, वेदान्त एवं सांख्य जैसे दर्शनों का प्रताप काल ने तो अपकर्ष को पहुंचा दिया था किन्तु शालग्राम ने उसे पुनः उत्कर्ष प्रदान किया।

अगम्या निबिडा जीर्णा चिरतो दर्शनाटवी।
शालग्रामेण चरता संस्कृत्य पुनरुद्धृता ॥34॥

अन्वयः - चिरतः जीर्णा निविडा अगम्या दर्शनाटवी चरता शालग्रामेण संस्कृत्य पुनः उद्धृता।

दर्शनों के वनों से गुजरता मार्ग चिरकाल से झाड़ियों से घिरा हुआ, संकरा और पुराना हो जाने से अगम्य हो गया था किन्तु उसमें विचरते हुए शालग्राम ने उसे साफ सुथरा बना कर उसका पुनरुद्धार कर दिया।

शास्त्रार्थसारसारङ्गो युगव्याघ्रनिपीडितः।
प्रविष्टो ह्यात्मरक्षायै शालग्राममनोगुहाम्॥35॥

यह कलियुग व्याघ्र की तरह उपद्रवी है। इसके द्वारा पीड़ित किया गया शास्त्रसार रूपी हिरण जब विवश होने लगा तो अपनी रक्षा के लिए शालग्राम के अन्तःकरण की सुरक्षित गुफा में प्रविष्ट हो कर निश्चिन्त हो गया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शास्त्रसंदोहतुलसी गता हर्षं विलक्षणम्।
शालग्रामे ह्यवतृते हिमवद्गण्डकीतटे ॥36॥

अन्वयः – हिमवद्गण्डकीतटे शालग्रामे अवतृते हि शास्त्रसंदोह-तुलसी विलक्षणम् हर्षम् गता।

हिमाचल रूपी गण्डकी नदी के तट पर शालग्राम (विष्णु) के अवतरित हो जाने पर शास्त्र समूह रूपी तुलसी अपूर्व प्रसन्नता को प्राप्त हो गई। (प्रिय की प्राप्ति से प्रिया का प्रसन्न होना स्वाभाविक है)।

तदौदार्यं स वा स्नेहस्तद्गाम्भीर्यं स चोच्छ्रयः।
शालग्रामे गुणास्ते ते ये शोभन्ते हिमालये॥37॥

अन्वयः – ये गुणाः हिमाचले शोभन्ते तत् औदार्यम् सः स्नेहः तत् गाम्भीर्यम् स उच्छ्रयः च ते ते शालग्रामे (आसन्)।

उदारता, स्नेह और गाम्भीर्य आदि जो जो गुण हिमालय की शोभावृद्धि करते हैं वे सभी अविकल रूप में शालग्राम में भी थे जिनसे उनकी श्रेष्ठता स्पष्ट थी।

ज्ञानस्य सौमनस्यस्य चारित्र्यस्यार्जवस्य च।
निकषोऽवेक्षितः सद्भिः शालग्रामे विमर्शिभिः॥38॥

अन्वयः – विमर्शिभिः सद्भिः ज्ञानस्य सौमनस्यस्य आर्जवस्य व निकषः शालग्रामे अवेक्षितः।

चिन्तनशील सज्जन शालग्राम में ज्ञान, मनकी निर्मलता और विनम्रता आदि महान् गुणों की कसौटी देखते थे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विपद्यमाना यैः स्तब्धा प्रौढ़विद्यापरम्परा।
तुल्यतां यान्ति ते नूनं हरिणा गिरिधारिणा॥39॥

अन्वयः - यैः विपद्यमाना प्रौढ़विद्यापरम्परा स्तब्धा नूनं ते गिरिधारिणा हरिणा तुल्यतां यान्ति।

जिन्होंने गिरती हुई प्रौढ़विद्याओं की परम्परा को थाम कर उन्हें दारुण विपत्ति से बचाया वे विद्वान् तो गोवर्द्धन गिरिधारी श्री कृष्ण से तुलना के योग्य हैं इस में कोई संशय नहीं।

श्रमस्वेदेन संसिक्तो यैस्तु विद्यामहीरुहः।
भूयो भूयः प्रशंसन्ति तत्फलास्वादिनो हि तान्॥40॥

अन्वयः - यैः तु विद्यामहीरुहः श्रमस्वेदेन संसिक्तः तत्फलास्वादिनः तान् हि भूयः भूयः प्रशंसन्ति।

जिन विद्वानों ने प्रबल पुरुषार्थ करके परिश्रम द्वारा पसीना बहा कर विद्यावृक्ष को सींच कर बड़ा किया है बाद में उसके फलों का स्वादु रस पीने वाले सज्जन उनकी बार-बार प्रशंसा करते हैं।

तनिमानं गता विद्याव्रता ये हि यथा यथा।
यशस्तेषां तु लभते गरिमाणं तथा तथा॥41॥

अन्वयः - ये विद्याव्रताः यथा यथा हि तनिमानं गताः तेषाम् यशः तु तथा तथा गरिमाणम् लभते।

विद्याओं के सेवाव्रती विद्वान् जैसे-जैसे शरीर से निर्बल होते जाते हैं वैसे-वैसे ही उनका यश उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त करता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यैर्विद्याऽधिगता सूक्ष्मा सर्वसौख्यसमर्पणात्।
अल्पमूल्येन तेऽनल्पामानर्जुः ब्रह्मसम्पदम्॥42॥

अन्वयः – यैः सर्वसौख्यसमर्पणात् सूक्ष्मा विद्या अधिगताः ते अल्पमूल्येन अनल्पाम् ब्रह्मसम्पदम् आनर्जुः।

जिन महान् विद्वानों ने अपने समस्त सुखों को समर्पित करके भी अति सूक्ष्म विद्याओं को प्राप्त कर लिया उन्होंने तो बड़ी समझदारी से बहुत कम खर्च करके ऐसी ज्ञान सम्पति को पा लिया जिसका कोई मूल्य नहीं।(नश्वर सुखों को देकर अनश्वर ज्ञान सम्पति को पाने वाले से अधिक कुशल और कौन हो सकता है?)

तादृग्विद्वद्धुरीणस्य श्रीशालग्रामशर्मणः।
यथाशक्ति विनीतेन चरितं वर्ण्यते मया॥43॥

अन्वयः – विनीतेन मया तादृग् विद्वद्धुरीणस्य श्रीशालग्रामशर्मणः चरितं यथाशक्ति वर्ण्यते।

इन विशिष्ट गुणों से सम्पन्न विद्वानों में अग्रगण्य श्री शालग्राम शर्मा के महान् चरित्र को मैं विनयपूर्वक अपनी सामर्थ्य के अनुसार लिख रहा हूँ।

अहो! विपश्चिदग्र्येषु प्राग्रियं गिरिगौरवम्।
श्रीशालग्रामशर्माणं वर्णयन्नस्मि भाग्यवान्॥44॥

अन्वयः – अहो! विपश्चिदग्र्येषु प्राग्रियम् गिरिगौरवम् श्रीशालग्राम-शर्माणं वर्णयन् भाग्यवान् अस्मि।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रेष्ठ विद्वानों में सर्वश्रेष्ठ हिमाचल प्रदेश के गौरव श्री शालग्राम शर्मा के चरित का वर्णन करते हुए मैं स्वयं को आश्चर्यजनक रूप से भाग्यवान् समझ रहा हूँ।

विदां वर्चःप्रचाराय विद्वानेव हि कल्पते।
मादृशस्तु समुद्युक्तः परिहासपदं व्रजेत्॥45॥

अन्वयः – स्पष्ट एव ।

विद्वानों के यश के प्रचार के लिए तो विद्वान् ही समर्थ होता है। ऐसे गम्भीर कार्य में लगा मेरे जैसा साधरण व्यक्ति तो उपहास का पात्र ही बनेगा।

स्वगौरवाय कल्पेत गुरोर्गौरववर्णनम्।
आकृतेरुपकारः स्याद् दर्पणेऽभिमुखे कृते॥46॥

अन्वयः – गुरोः गौरववर्णनम् स्वगौरवाय (एव) कल्पेत। दर्पणे अभिमुखे कृते आकृतेः एव उपकारः स्यात् (न दर्पणस्य)।

(इस कार्य को करने से मेरा अपना ही भला है) महान् विभूति गुरु के गौरव का वर्णन अपने ही गौरव को बढ़ाता है जैसे दर्पण को सामने करने से आकृति का ही उपकार होता है न कि दर्पण का।

विद्या विशुद्धा अवदात्तवृत्तं
तीव्रं तपः शास्त्रमतव्रतं च।
यस्यामलं दिक्षु यशश्च शालग्रामः
स विद्वान् जयति प्रगल्भः॥47॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः - यस्य विद्याः विशुद्धाः वृत्तम् अवदात्तम् तपः तीव्रम् शास्त्रमतव्रतम् दिक्षु अमलम् यशः च (आसन्) स प्रगल्भः विद्वान् शालग्रामः जयति।

वह विद्वान् श्री शालग्राम सर्वोत्कृष्ट रूप में विख्यात हैं जिनकी विविध विद्याएं विशुद्ध थीं, चरित्र उज्ज्वल था, तपस्या तीव्र थी, शास्त्रीय सिद्धान्तों के पालन में अटल श्रद्धा थी तथा यश दिशा दिशा में विस्तृत था।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

द्वितीयः सर्गः

विराजते तापसवृन्दवासः शान्तेरधिष्ठानमनुत्तमश्रीः।
वृन्दारकव्रातसनाथितश्च हिमाचलः पर्वतराजिराजः॥1॥

अन्वयः - तापसवर्गवासः शान्तेः अधिष्ठानम् अनुत्तमश्रीः वृन्दारकव्रातसनाथितः च पर्वतराजिराजः हिमाचलः विराजते।

भारत वर्ष में हिमाचल नामक पर्वतों का राजा विराजमान है जिसमें तपस्वियों के समूह निवास करते हैं, शान्ति अपना घर बनाकर रहती है, जिससे अधिक शोभा संसार में किसी भी पदार्थ में नहीं और देवसमूह सभी प्रकार से जिसकी रक्षा करता है।

यः कल्पवृक्षैरिव देववृक्षैर्मनोरमस्त्रीभिरिवाप्सरोभिः।
हिमैर्वृतश्चामरशेखराभैः स्वर्गाविशेषां श्रियमातनोति॥2॥

अन्वयः - यः (हिमाचलः) कल्पवृक्षैः इव देववृक्षैः, अप्सरोभिः इव मनोरमस्त्रीभिः, अमरशेखराभैः हिमैः च वृतः स्वर्गाविशेषाम् श्रियम् आतनोति।

जो कल्पवृक्षों के समान देवदार वृक्षों के कारण, अप्सराओं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

के समान सुन्दरियों के कारण तथा देवमुकुटों की तरह शोभायमान हिमराशियों द्वारा व्याप्त होने से ऐसी शोभा धारण किए हुए है जिसका स्वर्ग की सुन्दरता से थोड़ा भी अन्तर नहीं।

यत्रौषधाक्तेन जलेन तृप्ताः फलद्रवं न स्पृहयन्ति लोकाः।
रसैः फलानां मधुरैर्विमुग्धाः पयस्तृषां वानुभवन्ति नैव ॥3॥

अन्वयः - यत्र (हिमाचले) औषधाक्तेन जलेन तृप्ता लोकाः फलद्रवं न स्पृहयन्ति, वा फलानाम् मधुरैः रसैः विमुग्धाः (ते) पयस्तृषां नैव अनुभवन्ति।

जिस हिमाचल में औषधियों से मिश्रित जल इतना मीठा होता है कि उससे तृप्त लोग फलों के रस को पीने की भी इच्छा नहीं रखते और यहां के फलों का द्रव ऐसा आनन्ददायी होता है कि उसे पीकर जल की प्यास का भी वे अनुभव नहीं करते।

श्रृङ्गालकः शैवलिनीभुजङ्गो लिप्ताभ्रभस्मा वनचित्रचर्मा।
प्रपातनादोऽथ तुषारभार्यो विभाति नूनं गिरिशो गिरीशः ॥4॥

अन्वयः - श्रृङ्गालकः शैवलिनीभुजङ्गो लिप्ताभ्रभस्मा वनचित्रचर्मा प्रपातनादः अथ तुषारभार्यः गिरीशः नूनं गिरिशो विभाति।

यह गिरिराज हिमाचल तो जैसे साक्षात् गिरिश अर्थात् शिव की तरह शोभायमान है, इसके शिखर जटा की तरह हैं, नदियाँ शिव के शरीर में लिपटे साँपों की तरह हैं, इसमें लिपटे बादल भस्मलेप की तरह हैं, बहुरंगी वन चित्रवर्ण मृगछाल की तरह हैं, शब्दायमान झरने उनके नाद हैं तथा गौरवर्ण से युक्त हिम उनकी आलिङ्गनबद्ध गोरीभार्या है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्यामाः पयोदाः परितःस्थिता यं
दिवाऽपि रात्रेर्जनयन्ति बुद्धिम्।
यत्रौषधीनां च निशि प्रकाशो
दिनायमानां रजनीं करोति ॥5॥

अन्वयः - यम् परितः स्थिताः श्यामाः पयोदाः दिवा अपि रात्रेः बुद्धिं जनयन्ति। यत्र च निशि औषधीनां प्रकाशः रजनीम् दिनाय-मानाम् करोति।

इस हिमाचल में चारों ओर घिरे घने मेघ दिन में भी रात का दृश्य पैदा कर देते हैं और यहाँ पर रात में भी औषधियों का प्रकाश दिन की सी छटा बिखेर देता है।

न केवलं यत्र विहाय नाकं निवासमुत्काः स्पृहयन्ति देवाः।
गौरीश्वरोऽपि प्रतिवर्तनार्थं करोति चेतो न यमभ्युपेतः ॥6॥

अन्वयः - केवलम् उत्काः देवा (एव) नाकम् विहाय यत्र निवासं न स्पृहयन्ति, अपि (तु) यम् अभ्युपेतः गौरीश्वरः अपि प्रतिवर्तनार्थम् चेतः न करोति।

यह हिमाचल तो इतना आकर्षक है कि केवल उत्सुक देवता ही स्वर्ग छोड़ कर यहां रहने की इच्छा नहीं करते अपितु यहां आकर गौरीपति शिव भी कभी लौटने का मन नहीं बनाते।

प्रपद्य यं दूरतरस्थलेभ्यस्तपोधनाः सिद्धिमवापुरिष्टाम्।
मेयं कथं तस्य तु भागधेयं यः पुण्यभूमाविह जातु जातः ॥7॥

अन्वयः - तपोधनाः दूरतरस्थलेभ्यः यम् प्रपद्य इष्टाम् सिद्धिम्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अवापुः। यः तु जातु इह पुण्यभूमौ जातः तस्य भागधेयम् तु कथम् मेयम्।

हिमाचल की शरण में तो दूर दूर स्थानों से आकर तपस्वियों ने अभिलषित सिद्धियां प्राप्त कीं। उसके भाग्य का मूल्याङ्कन तो कैसे किया जाय जिसे कभी यहां जन्म लेने का अवसर प्राप्त हुआ है।

प्रत्नराज्ये लवपुरे कुटलैहड़नामकम्।
द्विगर्तान्तर्गतं क्षेत्रं हिमाद्रौ व्यतनोत् श्रियम्॥8॥

अन्वयः - स्पष्ट एव।

पूर्व काल के लाहौर राज्य में द्विगर्त के अन्तर्गत कुटलैहड़ नामक क्षेत्र हिमाचल में शोभायमान था।

विधिवैधुर्यविहिताद् द्विधा देशविभाजनात्।
पश्चाच्च भारतान्तर्यद् गणराज्ये समाविशत्॥9॥

अन्वयः - पश्चात् च विधिवैधुर्यविहितात् द्विधा देशविभाजनात् यत् भारतान्तः गणराज्ये समाविशत्।

बाद में भाग्य हीनता के कारण देश के दो भागों में विभाजन होने से जो क्षेत्र भारतवर्ष के अन्तर्गत गणराज्य में जुड़ गया।

श्यामला वसुधा यत्र समृद्धा शस्यसम्पदा।
अवलोकयतां नेत्रे विस्मापयति शोभया॥10॥

अन्वयः - यत्र शस्यसम्पदा समृद्धा श्यामला वसुधा शोभया अवलोकयतां नेत्रे विस्मापयति।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जिस इलाके की फसलों की सम्पत्ति से समृद्ध सांवली भूमि अपनी शोभा से देखने वालों के नेत्रों को विस्मित कर देती है।

सौजन्यमूर्तयो यत्र निसर्गस्नेहिनो जनाः।
आदर्शमिव शास्त्रोक्तं पूरयन्ति कलिक्षतम् ॥11॥

अन्वयः – यत्र निसर्गस्नेहिनः सौजन्यमूर्तयः जनाः कलिक्षतम् शास्त्रोक्तम् आदर्शम् इव पूरयन्ति।

जहां रहने वाले स्वभाव से और सौजन्य के मूर्तिमान् रूप की तरह भले लोग, अपने इन गुणों के द्वारा मानों कलिकाल के प्रभाव से क्षतिग्रस्त शास्त्रों के आदर्शों के घाव भरते हैं।

देवीदेवर्षिपितॄणां गुरूणां योगिनां गवाम्।
सतां च पादयोः श्रद्धा येषामस्त्यचलाचला ॥12॥

अन्वयः – येषां देवीदेवर्षिपितॄणाम् गुरूणाम् योगिनाम् गवाम् सतां च पादयोः अचलाचला श्रद्धा अस्ति।

देवी-देवों, ऋषियों, पितरों, गुरुओं, योगियों, गायों तथा सज्ज्नों के चरणों में जिनकी पर्वत की तरह अचल श्रद्धा है।

धर्मः परम्पराप्राप्तः सृतः सद्भिः सनातनः।
निश्छलो निश्चलो येषु श्रद्धावत्सु प्रतिष्ठितः ॥13॥

अन्वयः – श्रद्धावत्सु येषु परम्पराप्राप्तः सद्भिः सृतः निश्छलः निश्चलः (च) सनातनः धर्मः प्रतिष्ठितः।

जिन अपार श्रद्धा वालों में परम्परा से प्राप्त, सत्पुरुषों के द्वारा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रचारित निश्छल और निश्चल सनातन धर्म पूर्णतया प्रतिष्ठित है।

राज्ये तत्रास्ति सद्ग्रामः डैहणाख्योऽतिशोभनः।
सज्जनैर्धर्मकर्माढ्यैर्मतिमद्भिरधिष्ठितः ॥14॥

अन्वयः – तत्र राज्ये धर्मकर्माढ्यैः मतिमद्भिः सज्जनैः अधिष्ठितः डैहणाख्यः अतिशोभनः सद्ग्रामः अस्ति।

उस जनपद में अति सुन्दर श्रेष्ठ डैहण नामक एक गांव विद्यमान है जिसमें धर्म कर्म से समृद्ध बुद्धिमान् सज्जन निवास करते हैं।

विशालसालमालान्तर्निविष्टो दृष्टितर्पणः।
अनेकविधसस्यश्रीकेदारपरिवारितः ॥15॥

अन्वयः – ग्रामः स्पष्ट एव।

वह गांव विशाल घने वृक्षों की कतार से घिरा है तथा अनेक प्रकार की फसलों से समृद्ध खेत उसके आस-पास शोभित हैं जिस कारण वह नयनों को तृप्ति एवं आनन्द देता है।

गौबलीवर्दवत्सानां चरतां यो हि वाशितैः।
प्रमोदयति चेतांसि वृन्दावनमिवापरम् ॥16॥

अन्वयः – यः (ग्रामः) हि चरताम् गोबलीवर्दवत्सानाम् वाशितैः अपरम् वृन्दावनम् इव चेतांसि प्रमोदयति।

जिस गांव के निकट विचरण करने वाले गाय, बैल, बछड़े आदियों के रम्भाने की ध्वनि सुनाई देती है, इस कारण जो दूसरे वृन्दावन की तरह प्रतीत होता है और हृदयों को आनन्दमग्न कर देता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मयूरतित्तिरध्वांक्षश्रृगालध्वनिनादितः।
प्रसूनौषधमृद्गन्धलुब्धमुग्धजनस्तथा ॥ 17 ॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

उस गांव में मोर, तीतर, कौवे, सियार आदि का कोलाहल लगा रहता है तथा वहां के लोग फूलों औषधियों, वर्षा से भीगी मिट्टी आदि की मधुर सुगन्ध से सदा मुग्ध से रहते हैं।

दोषादोषानिवोत्स्रष्टुं रामनामामृतौषधम्।
पिबन्ति नियमाद्यत्र प्रातरेवोत्थिता जनाः ॥ 18 ॥

अन्वयः – यत्र प्रातः एव उत्थिता जनाः दोषादोषान् इव उत्स्रष्टुम् रामनामामृतौषधम् नियमात् पिबन्ति।

जिस गांव में बहुत सुबह जाग कर ही लोग, अमृत के तुल्य रामनाम की औषधि का सेवन मानों इसलिए करते हैं कि दोषमयी रात्रि में उत्पन्न सभी दोष दूर हो जाएं।

देवतार्चनसंघृष्टचन्दनामृतगन्धिना।
परितो व्याप्तवातेन प्रातर्यो मलयायते ॥ 19 ॥

अन्वयः – (यः ग्रामः) प्रातः देवतार्चनसंघृष्टचन्दनामृतगन्धिना परितो व्याप्तवातेन मलयायते।

जो गांव प्रातः देव पूजा के लिए घिसे जाने वाले चन्दन की अमृतमयी सुगन्ध से महकते हुए वायु के चारों ओर फैलने से मलयाचल की तरह बन जाता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आसन् शुक्लयजुर्वेदाः कात्यायनाख्यसूत्रिणः।
उपाध्यायोपनामानोऽव्यवच्छिन्नपरम्पराः॥
पारस्करं गृह्यसूत्रमास्थिता धर्मिकाग्रियाः।
मौद्गिल्यास्तत्र सद्विप्राः सारस्वतकुलोद्भवाः॥20-21॥

॥ युग्मकम् ॥

अन्वयः - तत्र (ग्रामे) शुक्लयजुर्वेदाः कात्यायनाख्यसूत्रिणः पारस्करं गृह्यसूत्रम् आस्थिताः मौद्गिल्याः धर्मिकाग्रियाः सारस्वत-कुलोद्भवाः अव्यवच्छिन्नपरम्पराः उपाध्यायोपनामानः सद्विप्राः आसन्।

उस गांव में शुक्लयजुर्वेदी, कात्यायनसूत्र वाले, पारस्कर गृह्यसूत्र का अनुसरण करने वाले, मौद्गिल्य गोत्रीय, सारस्वतकुलीन, धार्मिकों में अग्रगण्य उपाध्याय नाम से प्रसिद्ध श्रेष्ठ ब्राह्मण हुए जिन की परम्परा अटूट थी।

स्वोद्धारमपरैः साकं महता विप्रकर्मणा।
तारका इव सिन्धोस्तेऽकुर्वतातिप्रतिष्ठिताः॥22॥

अन्वयः - अतिप्रतिष्ठिताः ते महता विप्रकर्मणा, सिन्धोः तारका इव अपरैः साकम् स्वोद्धारम् अकुर्वत।

उन्होंने महान् विप्रकर्म के द्वारा दूसरों के साथ अपना उद्धार ऐसे किया जैसे नदी पार करवाने वाले औरों के साथ अपने को भी पार ले जाते हैं। इसलिए वह बहुत प्रतिष्ठित हुए।

स्वल्पसाधनसंपत्सु स्वल्पाध्ययनवत्स्वपि।
विद्यासारः सुसंस्कारप्राप्तो येषु स्थितोऽभवत्॥23॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – स्वल्पसाधनसंपत्सु स्वल्पाध्ययनवत्सु अपि येषु सुसंस्कार-प्राप्तः विद्यासारः स्थितः अभवत्।

यद्यपि उनके पास साधन भी कम थे और सम्पत्ति का भी अभाव था परन्तु परम्परा से प्राप्त अच्छे संस्कारों के कारण उन में विद्या का सार भली-भाँति स्थित था।

कुलक्रमागता विद्या व्यवहारविवर्द्धिता।
अधीत्य विधिवद् वा तामतिशेतेऽर्जितामपि ॥24॥

अन्वयः – कुलक्रमागता व्यवहारविवर्द्धिता (च) विद्या विधिवत् अधीत्य अर्जिताम् अपि ताम् (विद्याम्) अतिशेते।

जो विद्या कुल की परम्परा से मिलती है और व्यवहार कर के पक्की हो जाती है वह तो उस से भी अधिक अच्छी हो जाती है जिसे विधिपूर्वक पढ़कर अर्जित किया गया हो।

पौरोहित्येन कृष्या वा परिवारभरं हि ते।
तुष्टा निर्वाहयामासुः परिश्रमपरायणाः ॥25॥

अन्वयः – तुष्टाः परिश्रमपरायणाः ते पौरोहित्येन कृष्या वा परिवारभरं निर्वाहयामासुः।

वे सन्तोषी और परिश्रमी थे। पौरोहित्य और कृषि कार्य के द्वारा ही परिवार पोषण का भार पूरा करते थे।

नोत्सिक्ताः प्राज्यसंपत्त्या निर्विण्णा विपदाऽपि न।
समदुःखसुखा धीरा संतुष्ट्याऽऽयुरयापयन् ॥26॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – (ते) प्राज्यसंपत्त्या (अपि) उत्सिक्ताः न, विपदा अपि निर्विण्णाः न (आसन्) समदुः खसुखाःधीराः सन्तुष्ट्या आयुः अयापयन्।

वे न तो सम्पन्नता आने पर अभिमान करते थे न विपत्ति आने पर निराश होते थे। दुःखों और सुखों में समान धैर्य रखकर सन्तोषपूर्वक समय बिताते थे।

तेषामेकतमो विप्रः श्री कृपारामनामकः।
पुण्यवान् शुभशीलश्च कुलकीर्तिकरोऽभवत्॥27॥

अन्वयः – तेषाम् एकतमः पुण्यवान् शुभशीलः कुलकीर्तिकरः च श्रीकृपारामनामकः विप्रः अभवत्।

उन सज्जनों में से एक ब्राह्मण कुल की कीर्ति बढ़ाने वाले, अत्यन्त पुण्यवान् पवित्र आचरण वाले हुए जिनका नाम श्री कृपाराम था।

करुणोदारचरितो मधुरव्यवहारवान्।
प्रसन्नः सरलो धीरो धर्मकर्मपरायणः॥28॥

अन्वयः – स्पष्टः। आसीदिति शेषः।

वे ब्राह्मण करुणापूर्ण, उदारचरित्र, मधुरव्यवहार करने वाले, प्रसन्न, सरल, धैर्यवान् तथा धर्म कर्म परायण थे।

ब्राह्मणोचितचारित्र्यपवित्रो निर्जितेन्द्रियः।
यथालब्धार्थसन्तुष्टः सज्जनाग्र्यः सतां मतः॥29॥

अन्वयः – स्पष्टः। आसीदिति शेषः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वे ब्राह्मण के योग्य सदाचार से पवित्र, जितेन्द्रिय, जितना धन मिल पाए उसी में सन्तुष्ट, सज्जनों में अग्रणी तथा सज्जनों के आदरपात्र थे।

तस्य भार्या चिड़ीदेवीतिनाम्नी शीलशालिनी।
गृहस्थाश्रमधर्मज्ञा प्रमादपरिपन्थिनी ॥
विप्रधेनुसुरप्राज्ञश्रद्धानिर्मलमानसा ।
अभवत् करुणोदारा पतिच्छायैव सद्गुणैः ॥30-31॥

अन्वयः - तस्य भार्या चिड़ीदेवी इति नाम्नी शीलशालिनी गृहस्था-श्रमधर्मज्ञा करुणोदारा सद्गुणैः पतिच्छाया इव अभवत्।

उनकी धर्मपत्नी, जिनका नाम चिड़ीदेवी था सुशील स्वभाव की थीं। गृहस्थ धर्म की जानकार, प्रमादहीन, ब्राह्मणों, गायों, देवताओं, विद्वानों के प्रति श्रद्धा से निर्मल हृदया, दयालु तथा उदार मन वाली थीं। इन गुणों के कारण वे पति की छाया की तरह उनके अनुरूप थीं।

हरेः सद्म यथा लक्ष्म्या शिवधाम यथोमया।
तथैवाभूषि सुगुणैः कृपारामालयस्तया ॥32॥

अन्वयः - यथा लक्ष्म्या हरेः सद्म यथा उमया शिवधाम सुगुणैः अभूषि तथैव तया कृपारामालयः (अभूषि)।

पण्डित कृपाराम का घर उस गुणमण्डित धर्मपत्नी से ऐसे सुशोभित हुआ जैसे लक्ष्मी से विष्णुलोक और उमा से शिवलोक।

राधैव माधवाभिन्ना सावित्रीव पतिव्रता।
जानकीव पतिप्राणा साऽभवत् तमनुव्रता ॥33॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – सा माधवाभिन्ना राधा इव पतिव्रता सावित्री इव पतिप्राणा जानकी इव तम् (पतिम्) अनुव्रता अभवत्।

वह पति के आदर्शों का अनुकरण करने से माधव से अभिन्न राधा, पतिव्रता जानकी और पतिप्राणा सीता की तरह श्रेष्ठ हुई।

निष्ठयाऽवगमो युक्तः श्रद्धया च यथा विधिः।
तया तथा स शुशुभ उषसा वा यथाऽरुणः ॥34॥

अन्वयः – स तया तथा शुशुभे यथा निष्ठया युक्तः अवगमः श्रद्धया विधिः उषसा वा अरुणः।

उस धर्मसङ्गिनी के सहयोग से उस सत्पुरुष की ऐसी शोभावृद्धि हुई जैसे निष्ठा से ज्ञान की, श्रद्धा से विधि की और उषा से अरुण की होती है।

मङ्गलं परिपुष्णन्तौ पारत्रिकमथैहिकम्।
धीरावतनुतां धन्यं जीवनं साधुनाऽध्वना ॥35॥

अन्वयः – (तौ) धीरौ साधुना अध्वना पारत्रिकम् अथ ऐहिकम् मङ्गलं परिपुष्णन्तौ जीवनम् धन्यम् अतनुताम्।

धीरता के कारण उस संयमी दम्पति ने श्रेष्ठ आदर्श के पथ पर चलकर ऐहिक तथा पारलौकिक कल्याण की वृद्धि करते हुए जीवन को धन्य बना दिया।

सौमनस्येन पुण्येन पावित्र्येणेशनिष्ठयोः।
सेवया च तयोर्जाता तीर्थकल्पा गृहस्थता ॥36॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – ईशनिष्ठयोः तयोः सौमनस्येन पुण्येन पावित्र्येण सेवया च गृहस्थता तीर्थकल्पा जाता।

ईश्वर में पूर्ण निष्ठा वाले उन दोनों के सौमनस्य, पुण्य, पवित्रता तथा सेवा जैसे महान् गुणों के कारण उनका गृहस्थ तीर्थ के तुल्य बन गया।

समयेऽथ समायाते सर्वसद्गुणमण्डिते।
पुत्रोऽजायत तद्गेहे प्राच्यामिव गभस्तिमान्॥37॥

अन्वयः – अथ सर्वसद्गुणमण्डिते समये समायाते तयोः गेहे प्राच्याम् गभस्तिमान् इव पुत्रः अजायत।

कुछ दिनों के पश्चात् उनके घर में मङ्गलोदय हुआ। सम्पूर्ण श्रेष्ठ गुणों से मण्डित समय के आने पर उन्हें पुत्र प्राप्त हुआ जैसे प्राची दिशा में उज्ज्वल सूर्य का उदय होता है।

दिशो दिव्यप्रकाशेन व्यभासन्त समन्ततः।
प्रकृतिर्निखिला ह्याप्नोद् विविधैर्मङ्गलैर्मुदम्॥38॥

अन्वयः – दिशः दिव्यप्रकाशेन समन्ततः व्यभासन्त। निखिला प्रकृतिः हि विविधैः मङ्गलैः मुदम् आप्नोत्।

सभी दिशाएं अलौकिक प्रकाश से चारों ओर आलोकित हो उठीं तथा अनेक प्रकार के माङ्गलिक अनुभवों से प्रकृति आनन्दित हो गई।

अगायन् मञ्जु विहगाः पावनः पवनो ह्यवात्।
धेनवोऽध्वनयन् हर्षं पृथिवीप्रतिमा इव॥39॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – विहगाः मञ्जु अगायन् पावनः पवनः हि अवात् पृथिवी-प्रतिमा इव धेनवः हर्षम् अध्वनयन्।

पक्षिसमुदाय मधुर गीत गाने लगे। पावन पवन बहने लगी। गायें ऐसी ध्वनियाँ करने लगीं मानों पृथ्वी की प्रतिनिधि बन कर प्रसन्नता व्यक्त कर रही हों।

प्रसूनसौरभं सम्यग् व्यकीर्यत मनोहरम्।
मयूरनिकरो नृत्यं विततच्छदमातनोत्॥40॥

अन्वयः – मनोहरम् प्रसूनसौरभम् सम्यक् व्यकीर्यत। मयूरनिकरः विततच्छदम् नृत्यम् आतनोत्।

मन को मुग्ध कर देने वाली फूलों की सुगन्ध आस-पास फैल गई। पंखों को फैला-फैला कर मोर समूह नाचने लगा।

अदभ्रवर्चसा व्याप्तं दिव्येन स्फुरताऽभितः।
अद्भुतामाप्तवद् गेहं तत् तदा रमणीयताम्॥41॥

अन्वयः – तदा अभितः स्फुरता दिव्येन अदभ्रवर्चसा व्याप्तं तत् गेहम् अद्भुताम् रमणीयताम् आप्तवत्।

उस दिन एक अलौकिक तथा अपरिमित तेज चारों और व्याप्त हो गया जिससे वह घर अपूर्व रमणीयता को धारण कर गया।

महीमुल्लासयामास दिवाकरकरोत्करः।
विपश्चितां यथा प्रज्ञां ब्रह्मविद्योदिता द्युतिः॥42॥

अन्वयः – दिवाकरकरोत्करः महीम् (तथा) उल्लासयामास यथा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्रह्मविद्योदिता द्युतिः विपश्चिताम् प्रज्ञाम्।

जैसे ब्रह्मविद्या से पैदा हुआ ज्ञान का प्रकाश विद्वानों की बुद्धि को प्रकाशित कर देता है उसी तरह सूर्य की किरणों के समूह ने भूमण्डल को आलोकित कर दिया।

बान्धवाः श्रुततद्वृत्ताः परमानन्दमाप्नुवन्।
उदलङ्घत सीमानं पितृमोदमहोदधिः ॥43॥

अन्वयः – श्रुततद्वृत्ताः बान्धवाः परम् आनन्दम् अवाप्नुवन् पितृमोद-महोदधिः सीमानम् उदलङ्घत।

उस समाचार को सुनकर सभी बन्धुगण आनन्दित हो गए। माता–पिता के उमड़ते आनन्द सागर ने तो सीमा को ही लांघ लिया।

स्त्रीणां हर्षस्मितैः शुभ्रै र्द्विजसदम् विभूषितम्।
सम्भूय च जना हृष्टा वर्द्धापनमुदैरयन् ॥44॥

अन्वयः – स्त्रीणाम् शुभ्रैः हर्षस्मितैः द्विजसद्म विभूषितम्। हृष्टाः जनाः च सम्भूय वर्द्धापनम् उदैरयन्।

उस हर्षोल्लास के अवसर पर इक्ट्ठी हूई स्त्रियों की खुशी भरी चमकीली मुस्कानों से वह विप्रभवन मानो अलङ्कृत हो गया तथा प्रसन्नता भरे लोग इक्ट्ठे होकर बधाईयाँ देने लगे।

स जातजातसंस्कारो वीतदोषोदितश्रिया।
अनलादुद्धृतस्वर्णच्छविं बालो व्यडम्बयत् ॥45॥

अन्वयः – जातजातसंस्कारः स बालः वीतदोषोदितश्रिया अनलात्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उद्धृतस्वर्णच्छविं व्यडम्बयत्।

जातकर्म संस्कार होने पर दोष दूर हो जाने से बालक में अद्भुत तेज उत्पन्न हुआ और वह अग्नि में तपाने से निकले सोने की उज्ज्वलता को भी फीका करने लगा।

मणिना च यथा स्वर्णं प्रसूनौघेन वा तरुः।
तथैव तेन बालेनालङ्कृतोऽभूद् द्विजालयः ॥46॥

अन्वयः – च, यथा मणिना स्वर्णम् प्रसूनौघेन तरुः वा तथैव तेन बालेन द्विजालयः अलङ्कृत अभूत्।

और उस तेजस्वी बालक से वह विप्रभवन ऐसा अलङ्कृत हो गया जैसे मणि के योग से सोना अथवा फूलों के खिलने से वृक्ष हो जाता है।

निम्ननासो लघुहनुर्दीर्घबाहुर्दरश्रवः।
राजीवलोचनः प्राशूत्तमाङ्गोऽक्षीण्यमोदयत् ॥47॥

अन्वयः – स्पष्टः।

बालक का नासाग्र थोड़ा निम्न, ठोड़ी पतली, भुजाएं विशाल, कान शङ्खाकार बड़े, नयन कमलतुल्य तथा मस्तक उन्नत था। इन श्रेष्ठ लक्षणों से वह देखने वालों को आनन्द देता था।

अवर्द्धतान्वहं बालः शैलोद्भूतापगा यथा।
पित्रोर्मोदेन सहितो लक्षितोत्तमलक्षणः ॥48॥

अन्वयः – लक्षितोत्तमलक्षणः बालः पित्रोः मोदेन सहितः अन्वहम्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(तथा) अवर्द्धत यथा शैलोद्भूता आपगा।

सभी उत्तम लक्षणों से सम्पन्न वह बालक, माता-पिता के आनन्द की वृद्धि के साथ-साथ प्रतिदिन ऐसे बड़ा होने लगा जैसे पर्वत से निकली नदी उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है।

दशमेऽहनि यथाशास्त्रमुहूर्तं सोत्सवं च तम्।
शालग्राम इति प्रीतः नाम्ना तातः समस्करोत्॥49॥

अन्वयः - प्रीतः तातः दशमेऽह्नि यथशास्त्रमुहूर्तम् सोत्सवम् च तम् शालग्राम इति नाम्ना समस्करोत्।

दसवें दिन, मुहूर्त शास्त्र के अनुसार, उत्सव पूर्वक प्रसन्नता सहित पिता ने नामकरण संस्कार करके उसका 'शालग्राम' नाम रखा।

तुलसीबहुले गेहे शंखध्वनिनिनादिते।
स्थाने जातशिशोर्नाम शालग्राम उदीरितम्॥50॥

अन्वयः - तुसलीबहुले शंखध्वनिनिनादिते गेहे जातशिशोः शालग्राम (इति) नाम स्थाने उदीरितम्।

उस घर में तुलसी की बहुलता और सदा शङ्खनाद होने के कारण जातक शिशु का नाम शालग्राम रखा गया वह उचित ही था।

विप्राणां कुलवृद्धानां देवानां योगिनां तथा।
हृष्टानामाशिषः प्राप्ता बालं वर्द्धिष्णुताफला:॥51॥

अन्वयः - (तम्) बालम् हृष्टानाम् विप्राणाम् कुलवृद्धानाम् देवानाम् तथा योगिनाम् वर्द्धिष्णुताफला आशिषः प्राप्ताः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उस शुभ अवसर पर उस बालक को पूजा आदि से प्रसन्न ब्रह्माणों, कुलवृद्धों, देवताओं तथा योगियों के आशीर्वाद उसकी आयुवृद्धि आदि फल वाले प्राप्त हुए।

रोपितः पादपो भूमौ जातश्च बालको गृहे।
अविज्ञातं विवर्द्धेते मातृतातमुदावहौ ॥52॥

अन्वयः – भूमौ रोपितः पादपः गृहे जातः बालकः च जनयितृमुदावहौ अविज्ञातम् विवर्द्धेते।

भूमि में रोपित पौधा और घर में पैदा हुआ बालक, ये दोनों उत्पादक को अवर्णनीय आनन्द देने वाले सहसा ऐसे बढ़ जाते हैं कि पता भी नहीं लगता।

कुशाग्रतीक्ष्णधिषणो भविष्णुर्मधुरस्वरः।
नातिनिद्रोऽप्रमादी च नातिरोदनतत्परः॥
निवातदीपकोदग्रः स्निग्धस्फीतस्मिताननः।
कासारोदारगम्भीरो धीरो द्रष्ट्रीनतोषयत् ॥53-54॥

अन्वयः – स इति शेषः। शेषं स्पष्टम्।

कुशा के अग्रभाग की तरह तीक्षणबुद्धि, होनहार, मृदुस्वर, अधिक निद्रा से रहित, आलस्यहीन, कम रोने वाला, बिना वायु वाले स्थान में जलते दीपक की तरह एकाग्र, स्नेहिल और विशद मुस्कान भरे मुखमण्डल वाला, तालाब की तरह व्यापक वृत्तिवाला, गम्भीर और धीर वह बालक देखने वालों को मुग्ध करने लगा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पितृभ्यां शिक्षितां वाचमनुकुर्वन् स्वराधिकाम्।
प्रतिपत्तिपटुत्वेन प्रीणयामास बान्धवान्॥55॥

अन्वयः – पितृभ्याम् शिक्षिताम् स्वराधिकाम् वाचम् अनुकुर्वन् प्रतिपत्तिपटुत्वेन बान्धवान् प्रीणयामास।

पिता–माता द्वारा सिखाई जाने वाली वाणी को अपनी स्वरों की अधिकता से भरी वाणी के द्वारा अनुकरण करता हुआ वह बात को समझने में कुशल बालक बन्धुजनों को हर्षित करने लगा।

किमिदं वा कुतो वेदं किमर्थं वेति पृच्छति।
प्रतितर्काधिका बाले प्रतिभा पदमादधात्॥56॥

अन्वयः – स्पष्टप्रायः।

जिज्ञासु स्वभाव का बालक बड़ों से यह पूछा करता कि यह क्या है? क्यों है? किसलिए है? हर बात में विपरीत तर्क भी करता। इस रीति से उस होनहार बालक में प्रतिभा ने अपना स्थान बनाना आरम्भ किया।

स्वतो दर्भाङ्कुरे तैक्ष्ण्यं स्वतः सिंहार्भके बलम्।
स्वतः प्रातारवावाभा भविष्णौ वा स्वतश्च धीः॥57॥

अन्वयः – दर्भाङ्कुरे स्वतः तैक्ष्ण्यम् सिंहार्भके स्वतः बलम् प्रातः रवौ स्वतः आभा वा भविष्णौ स्वतः च धीः (भवति)।

क्योंकि–दर्भ घास के अङ्कुर में तीक्ष्णता स्वाभाविक होती है, शेर के बच्चे में बल स्वाभाविक होता है, प्रातः काल ही सूर्य में आभा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वाभाविक होती है तथा होनहार में भी आरम्भ से ही बुद्धि स्वाभाविक होती है।

विद्यावागीश्वरी नूनं यत्राधिष्ठातुमुत्सका।
तत्र प्रज्ञासनं पूर्वं विस्तारयति निर्मलम्॥58॥

अन्वयः - नूनम् विद्यावागीश्वरी यत्र अधिष्ठातुम् उत्सुका (भवति) तत्र पूर्वम् (एव) निर्मलम् प्रज्ञासनम् विस्तारयति।

यह सर्वथा सत्य है कि विद्या और वाणी की अधीश्वरी सरस्वती जिस पात्र व्यक्ति में विराजमान होने को उत्सुक हो जाती है उस में पहले ही निर्मल प्रज्ञा का आसन बिछा देती है।

वंशोऽवदातः पितरौ पवित्रौ देशो हिमाद्रि र्गिरिमूर्द्धमौलिः।
समस्तमेवानुपमं हि यत्र न तत्र जायेत कथं विपश्चित्?॥59॥

अन्वयः - अवदातः वंशः पवित्रौ पितरौ गिरमूर्द्धमौलिः हिमाद्रिः देशः (इत्यादि) यत्र समस्तम् एव अनुपमम् तत्र विपश्चित् कथं न जायेत।

निर्मल कुल, पवित्र माता-पिता, पर्वतों के मस्तक का मुकुट हिमाचल देश-इत्यादि समस्त पदार्थ जहां अनुपम हों वहां भला ऐसा महान् विद्वान् पैदा क्यों न होगा?।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तृतीयः सर्गः

पालनेन गवां ग्रामे कृष्या वातिपरिश्रमी।
पौरोहित्येन वा तातः परिवारमपोषयत्॥1॥

अन्वयः – अतिपरिश्रमी तातः ग्रामे गवां पालनेन पौराहित्येन वा परिवारम् अपोषयत्।

बालक के पिता श्री कृपाराम जी अति परिश्रमी थे। वे गांव में पशुपालन, खेतीबाड़ी तथा पौरोहित्य कर्म से परिवार का भरणपोषण करते थे।

उत्तमः कृषिनिर्वाहो वाणिज्यं खलु मध्यमम्।
सेवावृत्तिर्जघन्येति तदा लोकैरमन्यत॥2॥

अन्वयः – स्पष्टः।

उस समय लोग यह मानते थे कि कृषि के द्वारा आजीविका उत्तम, व्यापार से मध्यम तथा नौकरी के द्वारा वह निम्न कोटि की होती है। जघन्य=निन्दित।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्रह्मकर्म तु विप्रस्य पवित्रा वृत्तिरुच्यते।
तेनैव महिमा तस्य गुरुताऽथाग्रजन्मता॥3॥

अन्वयः – तु, विप्रस्य ब्रह्मकर्म पवित्रा वृत्तिः उच्यते तेन एव तस्य महिमा, गुरुता अथ अग्रजन्मता।

आजीविका के अन्य साधनों के होने पर भी, ब्राह्मण के लिए वेदविहित कर्म (पौरोहित्य अध्ययन आदि) ही पवित्र वृत्ति निर्दिष्ट है। उसी से उसकी गुरुता महिमा तथा श्रेष्ठता है।

श्रमसंयमसन्तोषैर्जीविकामविगर्हिताम्।
स धीरो ह्यर्जयामास बालपालनतत्परः॥4॥

अन्वयः – बालपालनतत्परः स धीरः श्रमसंयमसन्तोषैः हि अविगर्हिताम् जीविकाम् अर्जयामास।

बाल के पालन में तत्पर वह धैर्यपूर्वक परिश्रम संयम और सन्तोष के द्वारा अनिन्दित आजीविका कमाते थे।

शुभशीलवतोः पित्रोः स्नेहच्छायाश्रितः सुतः।
क्रमात् हायनसोपानान्यारोहद् बालकेलिभिः॥5॥

अन्वयः – शुभशीलवतोः पित्रोः स्नेहच्छायाश्रितः सुतः बालकेलिभिः हायनसोपानानि क्रमाद् आरोहत्।

श्रेष्ठ आचरण सम्पन्न माता–पिता के स्नेह की ठण्डी छाया में आश्रित वह पुत्र सीढ़ियों की तरह क्रमशः वर्षों का आरोहण करने लगा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पितृच्छत्रमधो बालः पत्रच्छत्रमधः फलम्।
निर्विघ्नमभिवर्द्धेतेऽस्पृष्टसङ्कटकण्टकौ ॥6॥

अन्वयः – बालः पितृच्छत्रम् अधः फलम् पत्रच्छत्रम् अधः (च) अस्पृष्टसङ्कटकण्टकौ निर्विघ्नम् अभिवर्द्धेते।

माता पिता की छत्रछाया के तल में बालक तथा पत्तों की छत्रछाया के नीचे फल, ये दोनों संकटों के काँटों से अछूते रहकर विना बाधा से बढ़ते रहते हैं।

अजायत लघुभ्राता कियत्कालान्तरेण च।
पित्रा यः संस्कृतः कृष्णदयाल इति संज्ञया ॥7॥

अन्वयः – कियत्कालान्तरेण च लघुभ्राता अजायत यः पित्रा कृष्ण-दयाल इति संज्ञया संस्कृतः।

कुछ वर्षों के बाद एक छोटा भाई पैदा हुआ। पिता ने संस्कारपूर्वक उस का नाम कृष्णदयाल रखा।

बाले सप्तसमाः प्राप्ते कुन्दकोमलमानसे।
अभूद् दुर्घटना चैका भाविसङ्कटसूचिनी ॥8॥

अन्वयः – अथ सप्तसमाः प्राप्ते कुन्दकोमलमानसे बाले (शालग्रामे) एका भाविसङ्कटसूचिनी दुर्घटना अभवत्।

जब बालक (शालग्राम) सात वर्ष का हुआ और कमल के समान कोमल मन का था तो भविष्य में भीषण सङ्कट की सूचक (पिता के साथ) एक दुर्घटना हो गई।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भूमौ पितरि संसुप्ते गाढनिद्रावशं गते।
समायातो महासर्पः कुतश्चिद् भीषणाकृतिः ॥9॥

अन्वयः – पितरि गाढनिद्रावशम् गते भूमौ संसुप्ते (सति) कुतश्चित् भीषणाकृतिः महासर्पः समायातः।

जब पिता जी (श्री कृपाराम) भूमिशय्या पर गहरी नींद के वश में सोए थे तो कहीं से एक भीषणाकार महासर्प आ पहुंचा।

प्रशान्तं निश्चलं सुप्तमुल्लंघ्य स पितुर्वपुः।
कालकल्पो महाव्यालो दिष्ट्याऽदष्ट्वाऽन्यतो गतः ॥10॥

अन्वयः – सः कालकल्पः महाव्यालः प्रशान्तम् निश्चलम् सुप्तम् पितुः वपुः उल्लंघ्य दिष्ट्या अदष्ट्वा अन्यतः गतः।

जब पिता शान्त, निश्चल मुद्रा में सोए हुए थे तो काल के तुल्य वह महासर्प आया और उनके शरीर को बिना डसे भाग्य से दूसरी ओर चला गया।

भारविघ्नितनिद्रो द्राग् जागृतो यर्हि सोऽभितः।
दृष्ट्वा विषधरं तर्हि विभीतः स्तब्धतां गतः ॥11॥

अन्वयः – भारविघ्नितनिद्रः सः यर्हि द्राग् जागृतः तर्हि सः अभितः विषधरं दृष्ट्वा विभीतः स्तब्धताम् गतः।

सांप के भार से नींद टूटने पर जब वे अचानक जागे तो सामने विषधर को देख बुरी तरह डर के मारे स्तब्ध हो गए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आतङ्कोत्थितरोमाञ्चः प्रकम्पितशिरोत्करः।
स्वेदवारिरयस्नातो महार्तिविह्वलोऽभवत्॥12॥

अन्वयः – पद्यक्रमेण एव। (स इति पूर्वानुवृत्तम्)।

उस आतङ्क से उनके रोम रोम खड़े हो गए, नाड़ियों का समूह कांपने लगा, पसीने के प्रवाह से शरीर नहा गया और वे उस महासङ्कट से व्याकुल हो गए।

क्षणप्रत्यागतप्राणो मृत्योस्त्राणमिवाप्तवान्।
सतां पुण्यात्मनां प्रायो न स्थायिन्यो दुरापदः॥13॥

अन्वयः – क्षणप्रत्यागतप्राणः (सः) मृत्योः त्राणम् इव आप्तवान्। पुण्यात्मनाम् सताम् दुरापदः प्रायः स्थायिन्यः न।

सांप के चले जाने पर कुछ क्षण बाद उनके प्राण लौटे जैसे मौत से छुटकारा मिल गया हो। ऐसा देखने में आता है कि पुण्यवान् सज्जनों के महाकष्ट ज्यादा देर नहीं टिकते।

आकर्ण्य घटनां घोरां लोका विस्मयमाप्नुवन्।
देवशक्तिकृपां मत्वा धन्यवादानथाब्रुवन्॥14॥

अन्वयः – (ताम्) घोराम् घटनाम् आकर्ण्य लोकाः विस्मयम् आप्नुवन् अथ देवशक्तिकृपाम् मत्वा धन्यवादान् अब्रुवन्।

उस घोर घटना को सुनकर लोग हैरान होकर रह गए और सर्पदंश से बचाव को देवी देवों की शक्ति व कृपा समझकर उनके लिए बार-बार धन्यवाद कहने लगे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ज्ञात्वाऽरिष्टापशकुनं स च सर्वे च बान्धवाः।
अभूवन् हि तदारभ्यानर्थशङ्कितमानसाः॥15॥

अन्वयः – सःच सर्वे बान्धवाः च (तत्) अरिष्टापशकुनं ज्ञात्वा तदारभ्य अनर्थशङ्कितमानसाः अभूवन्।

उस वृत्तान्त को अरिष्ट अपशकुन मानकर वे और सभी बान्धव गण तभी से लेकर मन में अनर्थ की शङ्का से चिन्तित रहने लगे।

विप्रोऽप्यमङ्गलोत्पातं मन्वानोऽनर्थसूचकम्।
प्रत्यग्रसङ्कटोत्प्रेक्षी विमनस्क इवाभवत्॥16॥

अन्वयः – विप्रः अपि (तत्) अनर्थसूचकम् अमङ्गलोत्पातं मन्वामः प्रत्यग्रसङ्गटोत्प्रेक्षी विमनस्क इव अभवत्।

शुभाशुभ का विचार करने वाले वे विप्र (श्रीकृपाराम) भी उस अशुभ उत्पात को अनर्थ का सूचक मानते हुए किसी नवीन सङ्कट की कल्पना से उदास से रहने लगे।

समये समतिक्रान्ते वृत्तं तद् विस्मृतिं गतम्।
तिरोदधति घटनां काल एव तु कालजाम्॥17॥

अन्वयः – समये समतिक्रान्ते तत् वृत्तम् विस्मृतिम् गतम्। कालजाम् घटनाम् तु काल एव तिरोदधति।

समय के बीत जाने पर वह अप्रिय घटना भी विस्मृति को प्राप्त हो गई। वस्तुतः समय में पैदा हुई घटना को भी समय ही स्मृति से हटा देता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ज्ञायते न हि केनापि क्रूरं विधिविधित्सितम्।
कस्य वा भाविविपदां प्रतीकारे समर्थता॥18॥

अन्वयः – क्रूरं विधिविधित्सितम् केनापि न हि ज्ञायते। वा (अथवा) भाविविपदां प्रतीकारे कस्य समर्थता (भवति)।

परन्तु विधाता के क्रूर विधान को पहले कोई नहीं जान पाता। आने वाली विपत्तियों का प्रतीकार करने में भला कौन समर्थ होता है।

लघोरपि विकारात् स शङ्कया तीव्रतां गतात्।
नैवाशक्नोत् समुद्धर्तुं स्वात्मानं कर्दमादिव॥19॥

अन्वयः – सः लघोः अपि शङ्कया तीव्रताम् गतात् विकारात् कर्दमात् इव आत्मानम् समुद्धर्तुम् न अशक्नोत्।

एक छोटा-सा विकार शरीर में उत्पन्न हुआ। अमङ्गल की शङ्का मन में पहले ही थी जिसके कारण वह विकार और तीव्र हो गया। उससे वे अपने को वैसे न उबार सके जैसे कोई दलदल से बाहर नहीं आ सकता।

आधारः परिवारस्य धर्मस्यात्मा कुलस्य च।
शिशोः प्राणप्रतीकाशः कृपारामो दिवं गतः॥20॥

अन्वयः – परिवारस्य आधारः धर्मस्य कुलस्य च आत्मा शिशोः प्राणप्रतीकाशः कृपारामः दिवम् गतः।

और, परिवार के आधार, धर्म और उस वंश की आत्मा तथा विशेषकर बालकों के प्राणतुल्य श्री कृपाराम संसार को त्याग कर स्वर्ग सिधार गए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भानुरस्तमिवोपेतो महीधर इवापतत्।
व्यालाद् यो रक्षितः पूर्वं स हि कालात् पराजितः ॥20॥

अन्वयः – भानुः अस्तम् इव उपेतः महीधर इव अपतत्। यः पूर्वं व्यालात् (अपि) रक्षितः सः हि कालात् पराजितः।

वे क्या गए, जैसे सूर्य अस्त हो गया, जैसे पहाड़ टूट पड़ा। जो पहले सांप से भी बच गए थे वे आज काल से हार गए, बच न सके।

रात्र्यन्तो दिवसो लोके जरान्तं प्राणियौवनम्।
सागरान्ता महानद्यो निधनान्तं च जीवनम् ॥21॥

अन्वयः – लोके दिवसः रात्र्यन्तः प्राणियौवनम् जरान्तम् महानद्यः सागरान्ताः जीवनम् च निधनान्तम् (भवति)।

संसार की यही त्रासदी है। दिन का अन्त रात्रि में, यौवन का अन्त वार्द्धक्य में, बड़ी से बड़ी नदियों का अन्त सागर में और जीवन का अन्त मरण में हो जाता है।

व्याधप्रकृतिकः कालोऽकाण्डे विस्रब्धघातकः।
सावधानानपि च्छिन्द्याद् वा वने हरिणानिव ॥22॥

अन्वयः – कालः व्याधप्रकृतिकः अकाण्डे विस्रब्धघातकः। वने हरिणान् इव सावधानान् वा अपि छिन्द्यात्।

वस्तुतः काल का स्वभाव तो शिकारी की तरह होता है जो चुपचाप विश्वस्त को मार डालता है और तो और, वह तो जंगल में सावधान हरिणों की तरह प्राणियों को भी नहीं छोड़ता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तद्वंशे पूर्वजा नूनं नाधिकायुरवाप्नुवन्।
स तानेवान्वगच्छच्छ्रीकृपारामोऽप्यनुव्रतः ॥23॥

अन्वयः – नूनम् तद् वंशे पूर्वजा अधिकायुः न आप्नुवन्। सः कृपारामः अपि अनुव्रतः इव तान् एव अन्वगच्छत्।

यूं भी, उस वंश में पूर्वज अधिक आयु तक नहीं जिए थे। श्री कृपाराम भी आयु में उन्हीं के अनुयायी की तरह उन्हीं की गति को अपना कर चले गए।

प्रसृतः शोकसंस्कारः शिशोः कोमलमानसे।
शिशिराम्बुजसंकाशं म्लानिमानं गतं च तत् ॥24॥

पिता के असह्य वियोग के कारण बालक के कोमल मन में शोक का संस्कार व्याप्त हो गया और वह शिशिर द्वारा पीड़ित कमल की तरह मुरझा गया।

पितृशोकेन जननीविपदा चाति विह्वलः।
नैर्बल्येनानुजस्याथ प्राप्नोद् दुःखपरम्पराम् ॥25॥

अन्वयः – पितृशोकेन जननीविपदा अथ च अनुजस्य नैर्बल्येन अति विह्वलः दुःखपरम्पराम् प्राप्नोत्।

एक ओर पितृशोक, दूसरी ओर माता पर आई विपत्ति तथा ऊपर से छोटे भाई की अज्ञातकारण से उत्पन्न मानसिक निर्बलता– इन संकटों से घिरा वह बालक विह्वल हो गया और अनेक दुःखों से आक्रान्त हो गया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अज्ञातबाधयाविष्टे वर्षानन्तरमस्थिरे ।
दिवं यातेऽनुजे तीक्ष्णक्षारपातोऽभवत् क्षते ॥26॥

अन्वयः – वर्षानन्तरम् अज्ञातबाधया आविष्टे अनुजे (अपि) दिवम् याते क्षते तीक्ष्णक्षारपातः अभवत्।

एक वर्ष के बाद छोटा भाई कृष्ण दयाल भी किसी अज्ञात मानसिक बाधा से आक्रान्त होकर, अस्थिर सा हो कर जी न सका। उसकी मृत्यु से तो जैसे घाव पर तीखा नमक ही पड़ गया।

समूह्य ह्यापदो ध्नन्ति निह्नूय ध्नन्ति दुर्जनाः ।
कालश्चानेकधा हन्ति हा वैवश्यं शरीरिणाम् ॥27॥

अन्वयः – आपदः हि समूह्य ध्नन्ति दुर्जनाः निह्नूय ध्नन्ति कालः च अनेकधा हन्ति हा शरीरिणाम् वैवश्यम्।

आपत्तियां इकट्ठा वार करती हैं तथा दुर्जन छिपकर वार करते हैं, परन्तु काल तो अनेक प्रकार से वार करता है। खेद है कि प्राणी इन सबके सामने विवश हो जाता है।

पतिपुत्रवियोगाग्नौ दह्यमानार्तमानसा ।
माताऽक्लिश्यत वित्रस्ता विपज्जालसमाकुला ॥28॥

अन्वयः – पतिपुत्रवियोगाग्नौ दह्यमाना विपज्जालसमाकुला आर्तमानसा वित्रस्ता माता अक्लिश्यत।

पति और पुत्र के वियोग की आग में जलती हुई, विपत्ति के जाल से घिरी हुई, व्याकुल हृदय और बहुत डरी हुई माता क्लेशों से व्यथित हो गईं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दशहायनदेशीयं बालमुत्सृज्य सङ्कटे।
वत्सला जीवनाधारा हा सापि त्रिदिवं गता ॥29॥

अन्वयः - वत्सला जीवनाधारा सा अपि दशहायनदेशीयम् बालम् सङ्कटे उत्सृज्य त्रिदिवम् गता हा।

जो अत्यन्त स्नेहमयी थी, जीवन का एकमात्र आधार थी वह ममता की मूर्ति माता भी दस वर्षीय बालक को संकट में छोड़कर स्वर्ग को सिधार गई, खेद है।

बालको हृतसर्वस्वः पतितः शोकगह्वरे।
दुर्दशां निरुपायोऽगात् यथा गौः पङ्कपञ्जरे ॥30॥

अन्वयः - हृतसर्वस्वः शोकगह्वरे पतितः निरुपायः बालकः (तथा) दुर्दशाम् अगात् यथा पङ्कपञ्जरे गौः।

बालक का सर्वस्व छिन गया। वह शोक के गहरे गड्ढे में गिर गया। कोई उपाय न रहा। वह ऐसी दुर्दशा में फंस गया जैसे एक गाय कीचड़ के पिंजरे में।

मातृपित्रनुजै रिक्तः सर्वतस्तमसा वृतः।
प्राणधारणचिन्तायां मग्न आपादमस्तकम् ॥31॥

अन्वयः - स्पष्ट एव।

माता-पिता तथा छोटा भाई, तीनों छूट गए। सब ओर विषाद के अन्धकार ने घेर लिया। अब वह बालक पांव से सिर तक प्राणों के धारण की चिन्ता में डूब गया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उन्निनीषति यं धाता शिखरं गुणसम्पदाम्।
निष्पीडयति तं पूर्वं क्षिप्तं बीजं यथा मृदि ॥32॥

अन्वयः - (परन्तु) धाता यम् गुणसम्पदाम् शिखरम् उन्निनीषति तम् पूर्वम् (तथा) निष्पीडयति यथा मृदि क्षिप्तम् बीजम्।

पर, विधाता का भी कैसा अद्‌भुत विधान है कि-वह जिसे गुणों और गौरव की समृद्धि के शिखर पर ले जाना चाहता है उसे पहले संघर्षों में डालकर ऐसे निचोड़ देता है जैसे उगने से पहले मिट्टी में पड़े बीज को।

संस्पृष्टोत्कर्षकाष्ठा यैरसामान्यगुणैर्हि तैः।
सोढव्या पूर्वमभवन् शैलारोह इवापदः॥33॥

अन्वयः - यैः असामान्यगुणैः हि उत्कर्षकाष्ठा संस्पृष्टा तैः पूर्वम् शैलारोहे इव आपदः सोढव्या अभवन्।

जिन पुरुषार्थियों ने इस संसार में अपने विशिष्ट गुणों से उत्कर्ष की सीमा का स्पर्श किया है उन्हें पहले ऐसे कठिन संकटों को सहना पड़ा है जैसे पर्वतारोहण में सहना पड़ता है।

पितृव्यैकशरण्योऽभूदनन्यशरणः शिशुः।
क्रूरदैवाहतो दीनो ह्यसमर्थः स्वरक्षणे॥34॥

अन्वयः - क्रूरदैवाहतः दीनः स्वरक्षणे असमर्थः अनन्यशरणः शिशुः हि पितृव्यैकशरण्यः अभूत्।

क्रूर दुर्भाग्य का सताया, दीन अपनी रक्षा में असमर्थ वह बेसहारा बालक अपने चाचा की एकमात्र शरण में पड़ गया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रचुरा भूमिसंपत्तिः पशुवृन्दविवर्द्धिता।
यथेष्टोपस्करं गेहे निर्जनत्वात् परं वृथा ॥35॥

अन्वयः - गेहे पशुवृन्दविवर्द्धिता प्रचुरा भूमिसम्पत्तिः (तथा) यथेष्टोपस्करम् परम् निर्जनत्वात् (सर्वं) वृथा।

ऐसा नहीं कि जीवनयापन के कोई साधन ही नहीं थे। पशुओं के समूह से समृद्ध प्रचुर भूमि की सम्पति थी, घर में पर्याप्त निर्वाहयोग्य साजसामान था परन्तु कुटुम्ब के उजड़ जाने से वह सब वृथा हो गया।

संसारः स्वार्थपूर्णोऽयं परार्थप्रतिरोधकः।
स्वहितायान्यमूलघ्नो विडम्बयति बन्धुताम् ॥36॥

अन्वयः - अयम् (संसारः) स्वार्थपूर्णः परार्थप्रतिरोधकः स्वहिताय अन्यमूलघ्नः बन्धुताम् विडम्बयति।

यह संसार तो स्वार्थपूर्ण है। दूसरे की भलाई में बाधा बन जाता है। यहां तक कि अपने हित के लिए दूसरे का मूल भी उखाड़ देता है। इस तरह प्रायः बन्धुता को विडम्बित करता है।

निजम्मन्या अपि जना व्यवहारेऽतिनिष्ठुराः।
गते प्रतीपतां भाग्ये सिद्ध्यन्ति क्लेशदायिनः ॥37॥

अन्वयः - निजम्मन्याः जना अपि भाग्ये प्रतीपताम् गते व्यवहारे अतिनिष्ठुराः क्लेशदायिनः सिद्ध्यन्ति।

यहां अपना मानने वाले लोग भी, भाग्य के बदल जाने पर व्यवहार में अति निष्ठुर होकर क्लेशदायी ही साबित होते हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बालस्य पशुसेवायां नियुक्तस्य ह्युपेक्षया।
अभूत् पितृवियुक्तस्य विद्याऽधीतिवयोव्ययः॥38॥

अन्वयः - पितृवियुक्तस्य बालस्य (स्वजनानाम्) उपेक्षया पशु-सेवायाम् नियुक्तस्य विद्याधीतिवयोव्ययः अभूत्।

पितृहीन बालक की उपेक्षा होने लगी। उसे पशु चराने की सेवा में लगा दिया। इस प्रकार उसके विद्यारम्भ और अध्ययन की आयु व्यर्थ बीतने लगी।

अवेक्ष्य दुर्दशापन्नं दौहित्रं करुणाद्रुतः।
मातामहोऽनयद्गेहं पितृव्यानुमतो निजम्॥39॥

अन्वयः - दुर्दशापन्नं दौहित्रम् अवेक्ष्य करुणाद्रुतः मातामहः पितृव्यानुमतः (तम्) निजम् गेहम् अनयत्।

एक दिन बालक के नाना जी ने आकर देखा कि दोहता दुर्दशा में पड़ा है तो उन्होंने उस चाचा से विचार विमर्श किया और उसकी अनुमति लेकर बालक को अपने घर ले गए।

उपलभ्याप्तवात्सल्यं हितचिन्तासमन्वितम्।
सूर्ये पद्ममिवोपेते व्यकसद्बालमानसम्॥40॥

अन्वयः - हितचिन्तासमन्वितम् आप्तवात्सल्यम् उपलभ्य बाल-मानसम् सूर्ये उपेते पद्मम् इव व्यकसत्।

वहां पर हितचिन्ता से भरे हुए विश्वस्त जनों का वात्सल्य पाकर बालक का मन ऐसे खिल उठा जैसे सूर्योदय से कमल।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आतपे शीतलच्छाया सहयोगश्च सङ्कटे।
अन्धकारे प्रकाशो वा लभ्यते ह्युदिते विधौ ॥41॥

अन्वयः – उदिते विधौ (एव) आतपे शीतलच्छाया सङ्कटे सहयोगः च अन्धकारे प्रकाशः वा लभ्यते।

जब भाग्य (अथवा चन्द्र) का उदय होता है तभी धूपकी गर्मी में शीलत छाया, सङ्कट में सहयोग तथा अन्धकार में प्रकाश प्राप्त होता है।

संप्राप्ते स्नेहिनां सङ्गे स्थाने च परिवर्तिते।
व्यस्मरद् दुःखदावाग्निदाहमीषच्छमान्वितः ॥42॥

अन्वयः – स्नेहिनाम् सङ्गे सम्प्राप्ते स्थाने परिवर्तिते च ईषत् शमान्वितः (सः) दुःखदावाग्निदाहम् व्यस्मरत्।

स्नेही जनों का सङ्ग पाकर और बदले हुए स्थान में आकर कुछ शान्ति का अनुभव कर बालक पहले झेला हुआ दुःखों की दावाग्नि का सन्ताप भूल गया।

मातामहगृहप्रेम्णा सुधातुल्येन सान्त्वितः।
भीषणापद्व्रणे प्राप्नोदनामयकरौषधम् ॥43॥

अन्वयः – सुधातुल्येन मातामहगृहप्रेम्णा सान्त्वितः (सः) भीषणा-पद्व्रणे अनामयकरौषधम् (इव) आप्नोत्।

अमृत की तरह आनन्ददायी, मातामह के घर में प्राप्त प्रेम से उसे ऐसी सान्त्वना मिली जैसे आपत्तियों के भयङ्कर घाव में नीरोग कर देने वाली औषधि से मिलती है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पिहिता विपदां भारैः कामं स्यान्महतां मतिः।
अनुकूले हि समये सा पुनस्त्वभिवर्द्धते॥44॥

अन्वयः – महताम् मतिः कामम् विपदां भारैः पिहिता स्यात् तु अनुकूले हि समये सा पुनः अभिवर्द्धते।

होनहार, महान् पुरुषों की मति चाहे कितनी विपत्तियों के भार से रोकी गई हो परन्तु अनुकूल समय के आने पर वह फिर से बढ़ जाती है।

हस्तस्थां सम्पदं हर्तुं प्रभवेद् दुष्परिस्थितिः।
मस्तकस्थामपाकर्तुं तामसावपि न क्षमा॥45॥

अन्वयः – दुष्परिस्थितिः हस्तस्थाम् सम्पदम् हर्तुम् प्रभवेत् (परम्) ताम् मस्तकस्थाम् अपाकर्तुम् असौ अपि न क्षमा।

बुरी परिस्थिति हाथ में आयी सम्पति को छीनने में चाहे समर्थ हो जाए परन्तु मस्तक (भाग्य) में लिखी उस (सम्पति) को छीनने में तो वह भी समर्थ नहीं होती।

जागृताः पूर्वजन्माप्ताः संस्कारा बालमानसे।
उदपद्यत सोत्कण्ठं तैर्विद्याऽध्ययने रुचिः॥46॥

अन्वयः – बालमानसे पूर्वजन्माप्ताः संस्कारा जागृताः तैः सोत्कण्ठम् विद्याऽध्ययने रुचिः उदपद्यत।

बालक के निर्मल मन में पिछले जन्म के पावन संस्कार जाग उठे और उन के कारण विद्या अध्ययन में उत्कण्ठा सहित रुचि पैदा हो गई।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दुःखनिर्झरनिर्धौतपूर्वकर्मजकश्मले ।
अध्यात्मविद्या शुद्धान्तःकरणे प्रतिबिम्बति ॥47॥

अन्वयः - दुःखनिर्झरनिर्धौतपूर्वकर्मजकश्मले शुद्धान्तः करणे अध्यात्मविद्या प्रतिबिम्बति।

जब अन्तःकरण से पूर्व कर्मों के मैल दुःखों के झरनों से प्रक्षालित हो जाते हैं और वह निर्मल हो जाता है तो उसमें अध्यात्म विद्या भली-भांति प्रतिबिम्बित हो जाती है।

वयस्तनीयः पितरौ परेतौ
भ्रातुर्वियोगो जनशून्यगेहम्।
तथाप्यभून्निश्चयवानधीतौ
संस्कारवान् किं न करोति चित्रम्॥48॥

अन्वयः - सुगमः।

आयु छोटी सी थी। माता-पिता नहीं रहे थे। छोटा भाई भी बिछुड़ गया। घर जनशून्य हो गया। इन भीषण परिस्थितियों में भी उस बालक ने धैर्यपूर्वक अध्ययन का दृढ़ निश्चय किया। संस्कारवान् भला क्या आश्चर्य नहीं करते।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चतुर्थः सर्गः

जीवनोत्कर्षमुद्दिश्य विद्याध्ययनमन्दिरे।
मातामहः प्रवेशाय कृतवान् तस्य निश्चयम्॥1॥

अन्वयः – (तस्य) जीवनोत्कर्षम् उद्दिश्य मातामहः विद्याऽध्ययन-मन्दिरे तस्य प्रवेशाय निश्चयम् कृतवान्।

उस बालक के जीवन को उन्नत करने के उद्देश्य से, नानाजी ने उसको पाठशाला में प्रविष्ट करने का निश्चय किया।

नातिदूरे जलग्रामान्तर्गते बाहलीस्थले।
पाठशालां प्रैषयत्तं प्रथमाध्ययनाय सः॥2॥

अन्वयः – सः (मातामहः) नातिदूरे जलग्रामान्तर्गते बाहलीस्थले प्रथमाध्ययनाय तम् पाठशालाम् प्रैषयत्।

नाना ने उसे निकट ही जलग्राम के अन्तर्वर्ती बाहली स्थान में स्थित पाठशाला में आरम्भिक अध्ययन के लिए भेज दिया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स तत्र पठनव्यस्तो विस्मृतातीतसङ्कटः।
द्वितीयं ज्ञानजन्माप्नोत् संस्कारादिव बालकः ॥3॥

अन्वयः – विस्मृतातीतसङ्कटः पठनव्यस्तः स बालकः संस्कारात् द्वितीयं ज्ञानजन्म इव आप्नोत्॥

अब वह बालक पीछे के सभी सङ्कटों को भूलकर पढ़ाई में व्यस्त हो गया। जैसे संस्कार होने से दूसरा जन्म माना जाता है वैसे अध्ययन से उसे ज्ञान जन्म मिला।

सर्वतश्चित्तमाकृष्य विहायान्यसुखस्पृहाम्।
मातृक्रोडे शिशुरिव विद्यायां प्रीतिमानभूत्॥4॥

अन्वयः – स्पष्टः। सः इति शेषः।

सब बातों से अपने मन को हटाकर, अन्य सभी सुखों की इच्छा त्यागकर वह विद्या पढ़ने में ऐसी प्रीति करने लगा जैसे माता की गोद में बैठा हुआ बालक उससे प्रेम करता है।

शुद्धे मुखमिवादर्शे प्रतिमैवामले जले।
अधीतं सकलं तस्मिन् विशदं प्रत्यबिम्बत॥5॥

अन्वयः – तस्मिन् सकलम् अधीतम् शुद्धे आदर्शे मुखम् इव अमले जले प्रतिमा इव (च) विशदम् प्रत्यबिम्बत।

जैसे निर्मल दर्पण में मुंह स्पष्ट दिखता है और शुद्ध जल में आकृति झलकती है उसी प्रकार उस बालक के निर्मल हृदय में भी सम्पूर्ण विद्या प्रतिबिम्बित हो गई।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बीजं भूमिमिव प्राप्य सवितारमिवाम्बुजम्।
प्रतिभा व्यकसत्तस्य संस्कारवति मानसे ॥6॥

अन्वयः – तस्य संस्कारवति मानसे, भूमिम् प्राप्य बीजम् इव (तथा) सवितारम् (प्राप्य) अम्बुजम् इव प्रतिभा व्यकसत्।

जन्मान्तर के संस्कार से सम्पन्न उस बालक के अन्तःकरण में प्रतिभा ऐसे विकसित होने लगी जैसे सूर्य को पाकर कमल और भूमि को पाकर बीज।

पूर्वजन्मार्जिता विद्येत्युक्तिं पुष्णन् कुशाग्रधीः।
अञ्जसैवातरद् बालः कक्षा गोष्पदसन्निभाः ॥7॥

अन्वयः – पूर्वजन्मार्जिता विद्या इति उक्तिं पुष्णन् कुशाग्रधीः बालः अञ्जसा एव कक्षाः गोष्पदसन्निभाः अतरत्।

विद्या तो पूर्वजन्म से पाई हुई होती है– इस उक्ति को चरितार्थ करते हुए उस बालक ने गाय के खुर से पड़े जल वाले गड्ढों की तरह आसानी से कक्षाओं को उत्तीर्ण किया।

चतुर्वर्षैश्चतुष्कक्षा उदतीर्यन्त धीमता।
तदग्रे नाभवत् तत्र व्यवस्थाऽध्यापनस्य तु ॥8॥

अन्वयः – धीमता (बालेन) चतुर्वर्षैः चतुष्कक्षाः उदीतर्यन्त। तदग्रे तु तत्र अध्यापनस्य व्यवस्था न अभवत्।

उस बुद्धिमान् बालक ने चार वर्षों में सफलतापूर्वक चार कक्षाएं तो उत्तीर्ण कर डाली परन्तु उस से आगे वहां पर पढ़ाई की व्यवस्था नहीं थी।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दूरे मातामहस्तस्य प्रेषणं नान्वमोदत।
दौहित्रस्येकलत्वाद्वा विप्रकर्षे भयाच्च वा॥9॥

अन्वयः – मातामहः दौहित्रास्य एकलत्वात् वा विप्रकर्षे च भयात् वा तस्य दूरे प्रेषणम् न अन्वमोदत।

दोहते के अकेला होने और दूर स्थान में कुछ भय की आशंका के कारण नाना ने उस (बालक) को दूर भेजने की स्वीकृति प्रदान नहीं की।

अगत्या विप्रविद्यायाः शिक्षणाय प्रवेशितः।
गृहे परसरामाख्यकर्मकाण्डविदोऽन्तिके॥10॥

अन्वयः – अगत्या विप्रविद्यायाः शिक्षणाय परसरामाख्यकर्म-काण्डविदः गृहे अन्तिके प्रवेशितः।

जब आगे पढ़ाई का कोई चारा न हुआ तो कर्मकाण्ड की शिक्षा देने के लिए निकट ही परसराम नामक कर्मकाण्ड के ज्ञाता के घर बालक को भेज दिया।

हंसः कमलनालादो लतापत्रवनं गतः।
कियच्चिरं मनः स्वीयं विडम्बयितुमर्हति॥11॥

अन्वयः – कमलनालादः हंसः लतापत्रवनं गतः स्वीयं मनः कियच्चिरम् विडम्बयितुम् अर्हति?

भला कमल के नाल का भक्षण करने वाला हंस लतापत्र के वन में जाकर अपने मन को कितनी देर तक बहला सकता है?

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

निर्बन्धेन तु वृद्धानां वैवश्येन तथात्मनः।
अनीप्सयापि तां विद्यां वर्षद्वयमधीतवान्॥12॥

अन्वयः – तु वृद्धानाम् निर्बन्धेन तथा आत्मनः वैवश्येन अनीप्सया अपि ताम् विद्याम् वर्षद्वयम् अधीतवान्।

परन्तु बुजुर्गों के आग्रह और अपनी विवशता के कारण अपनी विशेष इच्छा के न होने पर भी कर्मकाण्ड विद्या को उन्होंने दो वर्षों तक पढ़ा।

यथेष्टं प्राप्तवान् ज्ञानं तत्रापि द्विजकर्मणाम्।
सारग्रहणशीलत्वं सहजं धिषणावताम्॥13॥

अन्वयः – तत्रापि द्विजकर्मणाम् यथेष्टं ज्ञानम् प्राप्तवान् (यतः) धिषणावताम् सारग्रहणशीलत्वम् सहजम् (भवति)।

वहां पर भी ब्राह्मण के सभी कर्मों का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त किया। क्योंकि बुद्धि सम्पन्न लोगों में सारग्राहिता का गुण जन्मजात होता है।

उच्चविद्योपलब्ध्यर्थम् उपसर्तुं गुरूत्तमान्।
जागृताऽकुण्ठितोत्कण्ठाऽधीरबालकमानसे॥14॥

अन्वयः – अधीरबालकमानसे उच्चविद्योपलब्ध्यर्थम् गुरूत्तमान् उपसर्तुम् अकुण्ठिता उत्कण्ठा जागृता।

परन्तु उस बालक के मन में तो आगे बढ़ने के लिए अधीरता थी, इसलिए उसके मन में श्रेष्ठ विद्या की उपलब्धि के लिए महान् गुरुजनों की शरण में जाने की भारी उत्कण्ठा जाग गई।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मातामहकृताज्ञाया अव्रजन् प्रतिपक्षताम्।
अस्थादप्रकटाभीप्सो ह्यन्तर्वह्निरिवारणिः॥15॥

अन्वयः – (सः) मातामहकृताज्ञायाः प्रतिपक्षताम् अव्रजन् अप्रकटाभीप्सः अन्तर्वह्निः अरणि इव अस्थात्।

अपने नाना द्वारा की हई आज्ञा के विरुद्ध न जाते हुए अपनी इच्छा को छिपाए हुए वह बालक, अन्दर आग छिपाने वाली अरणि (एक काष्ठ) की तरह चुप रहा।

पितृव्यो विप्रविद्यायां क्षममाकर्ण्य बालकम्।
तेन साधयितुं स्वार्थं गृहमानेतुमागमत्॥16॥

अन्वयः – बालकम् विप्रविद्यायाम् क्षमम् आकर्ण्य पितृव्यः तेन स्वार्थम् साधयितुम् गृह्य आनेतुम् आगमत्।

उस बालक को यज्ञ कर्मकाण्ड आदि ब्राह्मणविद्या के योग्य सुनकर वह चाचा, बालक से अपनी स्वार्थ सिद्धि के उद्देश्य से उसे घर लाने के लिए आ पहुंचा।

अवधार्य स्वकर्तव्यं बालकं प्रति पूरितम्।
प्रत्यावर्तयितुं गेहमाज्ञां मातामहोऽप्यदात्॥17॥

अन्वयः – मातामहः अपि बालकं प्रति स्वकर्तव्यम् पूरितम् अवधार्य (तम्) गेह्य प्रत्यावर्तयितुम् आज्ञाम् अदात्।

नाना ने भी, बालक के प्रति अपने कर्तव्य को पूरा जानकर उसे घर लौटने की आज्ञा प्रदान कर दी।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स तु श्रुत्वा तयोर्वार्तां स्वभविष्यानुबन्धिनीम्।
सहसोपस्थिते विघ्ने विद्याध्ययनबाधके॥18॥

विनिद्रो यामिनीं चिन्तामग्नो दुःखादयापयत्।
अपराधं विना कारां नीयमानो यथा बलात्॥19॥

अन्वयः - सः तु तयोः स्वभविष्यानुबन्धिनीम् वार्तां श्रुत्वा सहसा विद्याऽध्ययनबाधके विघ्ने उपस्थिते, यथा अपराधम् विना बलात् काराम् नीयमानः चिन्तामग्नः विनिद्रः दुःखात् यामिनीम् अयापयत्।

वह, नाना और चाचा की अपने भविष्य को घर के कार्यों और कर्मकाण्ड की छोटी सी सीमा में बांधने से सम्बन्धित बात को सुनकर, अचानक आगे विद्या अध्ययन में बाधक विघ्न आया जानकर, चिन्ता में डूब गया। नींद न आई। बड़े दुःख से उसने रात बिताई। मानो बिनाअपराध किए बलपूर्वक जेल में डालने के लिए घसीटा जा रहा हो।

अपश्यन् गतिमन्यां स भविष्योत्थानहेतवे।
सुप्तयो वृंद्धयो रात्रौ प्रपलायितवान् रहः॥20॥

अन्वयः - सः अन्याम् गतिम् अपश्यन्, भविष्योत्थानहेतवे वृद्धयोः सुप्तयोः (सतोः) रात्रौ रहः प्रपलायितवान्।

अपने भविष्य की उन्नति के लिए वह, किसी दूसरे प्रकार को न देखकर, उन दोनों वृद्धों के सोए होने पर, रात को एकान्त पाकर वहां से भाग निकला।

विभाव्य विफलां युक्तिं पितृव्यो मर्दयन् करौ।
अमर्षज्वरसंतप्तो न्यवर्तत हतोद्यमः॥21॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः - युक्तिम् विफलाम् विभाव्य हतोद्यमः अमर्षज्वरसंतप्तः पितृव्यः करौ विमर्द्दयन् न्यवर्तत।

बालक को घर लाने की युक्ति की विफलता जानकर, अपने उस उद्योग की व्यर्थता के कारण, क्रोध के ज्वर से संतप्त चाचा हाथ मलते हुए घर लौट आया।

सोऽज्ञातपथि साशङ्कोऽप्यग्रेसरजनैः सह।
पदाति निर्भय इव ह्यूनानगरमाव्रजत्॥22॥

अन्वयः - अज्ञातपथि साशङ्कः अपि निर्भय इव सः पदाति हि अग्रेसरजनैः सह ऊनानगरम् आव्रजत्।

मार्ग अनजाना था। मन शङ्कित था। तथापि धैर्यपूर्वक निर्भय की तरह वह बालक आगे चलने वाले लोगों के साथ-साथ ऊना नगर पहुंच गया।

श्रुतपूर्वं प्रयत्नेनान्विष्य विद्यालयं ततः।
संस्कृताध्ययनार्थी स प्रवेशं तत्र लब्धवान्॥23॥

अन्वयः - ततः श्रुतपूर्वम् विद्यालयम् प्रयत्नेन अन्विष्य संस्कृताध्ययनार्थी स तत्र प्रवेशम् लब्धवान्।

वहां पहुंच कर, पहले सुने हुए विद्यालय को प्रयत्नपूर्वक ढूंढ कर वह, संस्कृत का अध्ययन करने के लिए वहां प्रविष्ट हो गया।

कथं तत्र स्वनिर्वाहं निर्द्रव्यः कृतवानिति।
विचिन्त्यापि मनो नूनमाश्चर्यचकितं भवेत्॥24॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः - (सः) निर्द्रव्यः तत्र स्वनिर्वाहम् कथम् कृतवान् इति विचिन्त्य अपि नूनं मनः आश्चर्यचकितम् भवेत्।

उस ने बिना पैसों से वहां पर अपना निर्वाह कैसे किया होगा, यह सोच कर भी मन हैरान रह जाता है।

धन्यास्ते धीरधैरेया विद्याऽभ्यर्पितजीवनाः।
भिक्षयाऽपि तनुं त्रात्वा ये ज्ञानशिखरं गताः॥25॥

अन्वयः - विद्याऽभ्यर्पितजीवनाः ते धीरधैरेयाः धन्याः ये भिक्षया अपि तनुं त्रात्वा ज्ञानशिखरं गताः।

विद्या प्राप्ति के लिए समस्त जीवन अर्पित करने वाले धैर्य-शालियों में अग्रगण्य वे विद्वान् सचमुच धन्य हैं जो सङ्कटकाल में भिक्षा द्वारा भी शरीर की रक्षा करके ज्ञान के शिखर पर आरूढ़ हुए।

पूर्वभुक्तां प्रसक्तां वाऽविगणटय परिस्थितिम्।
एकाग्रमनसाधीतौ व्यापृतः स परिश्रमात्॥26॥

अन्वयः - सः पूर्वभुक्ताम् वा प्रसक्ताम् परिस्थितिम् अविगणटय एकाग्रमनसा परिश्रमात् अधीतौ व्यापृतः।

वह, पहले भोगी हुई और उस समय पेश आ रही सब तरह की परिस्थिति की ओर ध्यान न देकर, एकाग्र मन से विद्या अध्ययन में जुट गया।

वीक्षते मार्गमेवाग्रे पदार्थान् नैव पार्श्वतः।
तदैव लक्ष्यमाप्नोति जनुर्वाहनचालकः॥27॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः - जनुर्वाहनचालकः (यदा) अग्रे मार्गम् एव वीक्षते पार्श्वतः पदार्थान् नैव (वीक्षते) तदा एव लक्ष्यम् आप्नोति।

जीवन के वाहन को चलाने वाला जब आगे मार्ग को ही देखता है इधर उधर की वस्तुओं को नहीं देखता तभी वह निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करता है।

कुशाग्रबुद्धिर्विनयी गुरुसेवापरः शुचिः।
परिश्रमपरो नित्यमध्यगाद् देवभारतीम्॥28॥

अन्वयः - सुगम एव।

वह कुशाग्र बुद्धि, विनयवान्, गुरुसेवापरायण, पवित्र मन वाला और सदा परिश्रम करने वाला बालक देवभाषा का अध्ययन करने लगा।

सार्द्धहायनपर्यन्तमत्यन्तश्रमपूर्वकम्।
अधीत्योत्त्तीर्णवान् साधु प्राज्ञकक्षां गुरुप्रियः॥29॥

अन्वयः - गुरुप्रियः (सः) अत्यन्तश्रमपूर्वकम् सार्धहायन-पर्यन्तम् साधु अधीत्य प्राज्ञकक्षाम् उत्तीर्णवान्।

वह गुरुजनों का प्रिय था। बड़े परिश्रम से डेढ़ वर्ष तक भली-भांति ग्रन्थों को पढ़ कर प्राज्ञ कक्षा को उत्तीर्ण कर गया।

साफल्यं प्रथमं प्राप्य द्विगुणोत्साहवाहनः।
विद्याऽध्ययनयात्रायां दत्तचित्तः प्रवृत्तवान्॥30॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – स्पष्टः।

पहली सफलता को पाकर दुगने उत्साह के वाहन द्वारा विद्या अध्ययन की यात्रा में दत्तचित होकर जुट गया।

विशारदाभिधां कक्षां प्रविश्य प्रगतोऽग्रिमाम्।
षण्मासाऽध्ययनादूर्ध्वं तां त्यक्तुं विवशोऽभवत्॥31॥

अन्वयः – (सः) प्रगतः अग्रिमाम् विशारदाभिधाम् कक्षाम् प्रविश्य षण्मासाऽध्ययनाद् ऊर्ध्वम् ताम् त्यक्तुम् विवशः अभवत्।

वह आगे बढ़ा। अगली विशारद कक्षा में प्रविष्ट हो गया परन्तु वहां एक बाधा उपस्थित हो गई जिस के कारण वह अध्ययन को छोड़ने के लिए विवश हो गया।

पितृव्यस्य सखा कश्चिदूनानगरमेकदा।
वणिक् पण्यक्रयार्थाय प्राप्तो दूरात् तमैक्षत॥34॥

अन्वयः – एकदा पण्यक्रयार्थाय ऊनानगरम् प्राप्तः कश्चित् वणिक् पितृव्यस्य सखा दूरात् तम् ऐक्षत।

एक दिन गांव से चाचा का कोई मित्र जो दुकानदार था, सामान खरीदने के लिए ऊना नगर को आया और उसने वहां दूर से उस बालक को देख लिया।

प्रत्यावृत्य स मित्रत्वाद् दृष्टं बालमसूचयत्।
पितृव्योऽथ पुनर्युक्तिं बालमानेतुमाचरत्॥36॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – स प्रत्यावृत्य मित्रत्वात् दृष्टं बालम् असूचयत्।अथ पितृव्यः पुनः बालम् आनेतुम् युक्तिम् आचरत्।

उसने गांव लौटकर मित्रभाव से सूचना दी कि मैंने बालक को ऊना में देखा है। अब चाचा ने फिर से बालक को घर लाने के लिए एक तरीका अपनाया।

गृहात् परसरामाख्यं बालविश्वासभाजनम्।
स्वानुजं प्राहिणोत् स्निग्धं बालकानयनाय सः ॥37॥

अन्वयः – सः गृहात् परसरामाख्यम् स्निग्धम् बालविश्वास-भाजनम् स्वानुजम् बालकानयनाय प्राहिणोत्।

उसने परसराम नाम के अपने छोटे भाई को बालक को मना कर घर लाने के लिए भेजा जो बालक का विश्वासपात्र और प्रिय था।

आग्रहं तस्य सस्नेहमस्वीकर्तुमपारयन्।
अचलत् तेन सार्धं स विमना विवशो यथा॥38॥

अन्वयः – सः तस्य सस्नेहम् आग्रहम् अस्वीकर्तुम् अपारयन् विमनाः यथा विवशः तेन सार्द्धम् अचलत्।

उसके स्नेहपूर्ण आग्रह को अस्वीकृत करने में असमर्थ वह विवश की तरह परेशान होकर उसके साथ घर को चल पड़ा।

सह्यं गेहजनक्रौर्यं हेयश्चाध्ययनक्रमः।
विचिन्त्यापीति बालान्तर्मध्येमार्गमकम्पत॥39॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – (गृहे) गेहजनक्रौर्यम् सह्यम्। अध्ययनक्रमः च हेयः। इति विचिन्त्य अपि मध्येमार्गम् बालान्तः अकम्पत।

घर पर गृहजनों की क्रूरता को सहना पड़ेगा और अपनी पढ़ाई को छोड़ देना पड़ेगा। बीच मार्ग में यह सब सोचकर भी बालक का अन्तर्हृदय कांप उठा।

दृढं सङ्कल्प्य स पथि स्वमनः पर्यवर्तयत्।
पितृव्यं सरलं स्निग्धं सहसा च मुधाऽवदत्॥40॥

अन्वयः – सः पथि दृढं सङ्कल्प्य स्वमनः पर्यवर्तयत्। च सरलम् स्निग्ध्म् पितृव्यम् मुधा अवदत्।

उसने मार्ग में दृढ सङ्कल्प कर के अपना मन बदल दिया और सरल व स्नेही चाचा को झूठमूठ कहा।

ग्रन्थमध्ये विस्मृतं मे द्रविणं दशरूप्यकम्।
प्रतिगच्छामि तस्यार्थं भवाँस्तावत् प्रतीक्षताम्॥41॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

मेरे दस रूपये एक पुस्तक के बीच में भूल गए हैं। उसके लिए मैं वापिस जाता हूँ। आप तब तक यहां प्रतीक्षा कीजिए।

प्रतीक्ष्य स कियत्कालं नायातं प्रविलोक्य च।
व्यलम्बत द्विकर्तव्यदोलायां निश्चयं बिना॥42॥

अन्वयः – सः (पित्व्यः) कियत् कालम् प्रतीक्ष्य, न आयातम् च प्रविलोक्य, निश्चयम् बिना द्विकर्तव्यदोलायाम् व्यलम्बत।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उन चाचाजी ने कुछ समय तक बालक के वापिस आने की प्रतीक्षा की और जब उसे आते न देखा तो वे दो कर्तव्यों (वापिस जाऊं या प्रतीक्षा करूं) के मध्य में फंस कर कोई निश्चय न कर सके।

जीवनप्रगतेः पन्था विषमाद् विषमायते।
नितरां कण्टकाकीर्णा संसारे हितपद्धतिः ॥43॥

अन्वयः - स्पष्ट एव।

आश्चर्य है कि जीवन की प्रगति का पथ कठिन से कठिन होता जाता है। सचमुच, संसार में उन्नति करने के लिए अत्यन्त कण्टकाकीर्ण मार्ग से निकलना पड़ता है।

अहो! समयनैष्ठुर्यं नृणामुत्साहपीडकम्।
यत्र साध्यो हि भवति निलीयापि निजोदयः ॥44॥

अन्वयः - अहो! नृणाम् उत्साहपीड़कम् समयनैष्ठुर्यम् यत्र हि निलीय अपि निजोदयः साध्यो भवति।

बड़े खेद की बात है कि समय की क्रूरता आगे बढ़ने वाले लोगों के उत्साह को बरबस पीड़ित करती रहती है जहां छिपकर भी अपना उदय सिद्ध करना पड़ता है।

ऊनास्थानेऽन्तरायः स्याद् विद्याऽध्ययनबाधकः।
पुनस्तादृगिति त्रस्तो गतोऽमृतसरःपुरम्॥45॥

अन्वयः - ऊनास्थाने पुनः विद्याऽध्ययनबाधकः तादृक् अन्तरायः स्यात् इति त्रस्तः (ततः) अमृतसरःपुरम् गतः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अब बालक बड़े असमंजस में था। उसने सोचा कि यदि मैं ऊना में रहूंगा तो वहां विद्या अध्ययन में फिर से इस प्रकार का विघ्न पैदा हो सकता है। उस डर से वह जेब में एक पैसा भी न होने पर भी अमृतसर को चला गया।

हिन्दूमहासभारब्धं संस्कृताध्यापनालयम्।
प्रविश्य सार्द्धवर्षेणोदतरच्च विशारदम्॥46॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

अमृतसर में हिन्दू महासभा के द्वारा चलाए गए संस्कृत विद्यालय में प्रवेश करके डेढ़ वर्ष तक पढ़कर विशारद कक्षा को उत्तीर्ण किया।

तत्रापि भाग्यवैधुर्यात् बाधा पुनरुपस्थिता।
विधात्रा विपदां कोषः सज्जनेभ्यो हि रक्षितः॥47॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

जब अमृतसर में अच्छे गुरुजनों के सान्निध्य में अग्रिम अध्ययन के लिए उचित व्यवस्था हो गई तो वहां भी दुर्भाग्यवश फिर से पूर्ववत् बाधा आ पड़ी। ऐसा लगता है कि विधाता ने विपत्तियों का खजाना सज्जनों के लिए ही सुरिक्षत रखा है।

पितृव्यमित्रं स वणिक् स्वकार्यार्थं कदाचन।
तत्रोपेतः पटुबटुं तमपश्यच्च दूरतः॥48॥

अन्वयः – कदाचन स (एव) पितृव्यमित्रम् वणिक् तत्रोपेतः दूरतः पटुबटुम् अपश्यत्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एक दिन वही बनिया जो चाचा का मित्र था अमृतसर आया और उसने चतुर बालक को वहां पर दूर से देख लिया।

असूचयच्च मित्राय दृष्टं बालं गृहं गतः।
पितृव्यः पुनरानेतुं हठात् तत्राप्युपस्थितः ॥49॥

अन्वयः – गृहम् गतः च (सः) मित्राय (पितृव्याय) दृष्टम् बालम् असूचयत्। पितृव्यः पुनः हठात् तम् आनेतुम् तत्र अपि उपस्थितः।

घर में जाकर उसने अपने मित्र को अमृतसर में देखे बालक के बारे में सूचना दी और चाचा फिर से हठपूर्वक उसे घर लाने के लिए अमृतसर भी पहुंच गया।

वीथ्यामन्वेषयन्तं तं पितृव्यं भवनोर्ध्वतः।
विलोक्य त्रस्तहृदयः शालग्रामस्त्वभून्मुहुः ॥50॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

और उस बालक शालग्राम ने गली में बालक को ढूंढते हुए चाचा को भवन की छत से देखा। वह उसे देख कर डर गया।

द्वयो र्दृष्टी च मिलिते सहसा सावधानयोः।
साध्वसाद् व्यचलद् बालो वृद्धक्रोधभिशङ्कितः ॥51॥

अन्वयः – सावधानयोः द्वयोः दृष्टी च सहसा मिलिते। (तदा) वृद्ध-क्रोधाभिशङ्कितः बालः साध्वसात् व्यचलत्।

दोनों सावधान थे। उनकी नजरें जब अचानक मिली तो वृद्ध के क्रोध से शंकित बालक भय से विचलित हो गया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आरोहणपरं वीक्ष्य वृद्धं स भवनोपरि।
अकूर्दत् पृष्ठतो निच्चैरपश्यन्नपरां गतिम्॥52॥

अन्वयः – सः (बालः) भवनोपरि आरोहणपरम् वृद्धं वीक्ष्य अपराम् गतिम् अपश्यन् पृष्ठतः निच्चैः अकूर्दत्।

वह वृद्ध चाचा को भवन के ऊपर चढ़ते हुए देख कर, कोई दूसरा उपाय न होने से भवन के पीछे सी नीचे कूद पड़ा और वहां से भाग निकला।

स्ववस्तून्यपि संत्यज्य रिक्तहस्तश्च सर्वथा।
स तैनैव पथा सद्यस्ततोऽपासरदुन्मनाः॥53॥

अन्वयः – सः स्ववस्तूनि अपि संत्यज्य रिक्तहस्तः उन्मनाः तेन एव पथा ततः सद्यः अपासरत्।

वह अपना सब सामान छोड़ कर खाली हाथ दुःखी मन से उसी रास्ते वहां से तत्काल भाग गया।

धनसाधनहीनः स कांदिशीकोऽतिविह्वलः।
प्रस्थितः पुनरध्येतुं ततो लवपुरं प्रति॥54॥

अन्वयः – धनसाधनहीनः कांदिशीकः अतिविह्वलः सः पुनः अध्येतुम् ततः लवपुरम् प्रति प्रस्थितः।

वह धन और अन्य साधनों से रहित था। किधर जाऊँ? इस चिन्ता से ग्रस्त और व्याकुल था। परन्तु फिर भी आगे पढ़ने की तीव्र इच्छा लेकर वहां से लाहौर को चल पड़ा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रुतमात्रं लवपुरं स्वल्पः परिचयोऽपि न।
का कथा साधनानां तु विद्योत्कण्ठा बताद्भुता ॥55॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

लाहौर का केवल नाम सुना था। थोड़ा भी कहीं ठिकाने का परिचय नहीं था और जीवन साधनों का तो क्या कहना। पर विद्या पढ़ने की उत्कण्ठा आश्चर्यजनक थी।

निपात्य संशये सर्वं यो विद्याग्रहणाग्रही।
कथं न व्याप्नुयात् तस्य रोम रोम सरस्वती ॥56॥

अन्वयः – यः सर्वम् संशये निपात्य विद्याग्रहणाग्रही (भवेत्) सरस्वती तस्य रोम रोम कथं न व्याप्नुयात्।

जो व्यक्ति अपना सब कुछ जोखिम में डालकर विद्या को पाने के लिए हठ के स्तर तक पहुंच जाता है उसके रोम-रोम में सरस्वती क्यों व्याप्त नहीं होगी।

श्री सनातनधर्मीयमहाविद्यालयं ततः।
प्रविश्य वर्षयुग्मेन शास्त्र्युपाधिमवाप्तवान् ॥57॥

अन्वयः – ततः श्रीसनातनधर्मीयमहाविद्यालयं प्रविश्य वर्षयुग्मेन शास्त्र्युपाधिम् अवाप्तवान्।

वहां पर श्री सनातनधर्म संस्कृत महाविद्यालय में प्रवेश पाकर दो वर्षों तक अध्ययन करके शास्त्री की उपाधि को प्राप्त किया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वेदव्याकरणच्छन्दःसाहित्यदर्शनादिकान्।
गम्भीरविषयान् सम्यग् गुरुभ्यः समधीतवान्॥58॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

वेद, व्याकरण, छन्द, साहित्य दर्शन आदि गम्भीर विषयों का गुरुजनों से भलीभांति ज्ञान प्राप्त किया।

गुरवः शास्त्रमर्मज्ञा नन्दान्ताः परमेश्वराः।
यस्य तं न कथं विद्या व्याप्नुयुर्गहनाशयाः॥59॥

अन्वयः – शास्त्रमर्मज्ञाः नन्दान्ताः परमेश्वराः यस्य गुरवः (स्युः) तम् गहनाशयाः विद्याः कथम् न व्याप्नुयुः।

भारत विख्यात विद्वान् श्री परमेश्वरानन्द जैसे शास्त्रमर्मज्ञ जिसके गुरु हों उसे गम्भीर आशय वाली विद्याऐं क्यों न व्याप्त करें।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पञ्चमः सर्गः

वर्द्धमानायुषोन्नीते व्यावहारिककौशले।
गृहमुज्झितसङ्कोचो गन्तुमारब्धवानसौ ॥1॥

अन्वयः – वर्द्धमानायुषा व्यावहारिककौशले उन्नीते (सति) असौ उज्झितसङ्कोचः गृह्य गन्तुम् आरब्धवान्।

अब आयु बढ़ने लग गई थी। बढ़ती हुई आयु ने उन की व्यावहारिक कुशलता भी बढ़ा दी थी। इसलिए वे निःसङ्कोच घर को जाने लग गए थे।

दूरस्थेनापि न स्वीयो गेहो विस्मर्यते नृणा।
जन्माधारधराप्रेम सर्वत्रैवानुवर्तते ॥2॥

अन्वयः – नृणा दूरस्थेन अपि स्वीयो गेहो न विस्मर्यते। जन्माधार-धराप्रेम सर्वत्र एव अनुवर्तते।

क्योंकि, मनुष्य कितना दूर क्यों न रहे, अपने घर को नहीं भूल सकता। अपने जन्म की आधार मातृभूमि का प्रेम सभी जगह साथ रहता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अक्षिण्युन्मीलिते यत्र पीतं च मधुरं पयः।
लालनं यत्र वा लब्धं मातृभूः साऽसुवासिनी॥3॥

अन्वयः - यत्र अक्षिणी उन्मीलिते मधुरम् पयः च पीतम् वा यत्र लालनम् लब्धम् सा मातृभूः असुवासिनी।

जहां मनुष्य ने पहली बार आंखें खोली, मीठा जल पिया अथवा लाड़-प्यार पाया, वह मातृभूमि तो सदा प्राणों में बसी रहती है।

मातरं मातृभूमिं वा विस्मरेद् यस्तु मानवः।
तस्मादश्मा वरतरः कृच्छ्रादुत्पाट्यते हि यः॥4॥

अन्वयः - यः मानवः तु मातरम् मातृभूमिम् वा विस्मरेत्, तस्मात् वरतरः अश्मा (भवति) यः हि कृच्छ्रात् उत्पाट्यते।

जो मनुष्य माता और अपनी मातृभूमि को भूल जाए, उससे कहीं श्रेष्ठ तो वह पत्थर होता है जो अपनी आधर भूमि से बड़ी कठिनाई से उखाड़ा जा सकता है।

बान्धवैर्गृहवृद्धैश्च गुरुशास्त्राज्ञया तथा।
प्रेरितोऽनीहमानोऽपि विवाहं विधिनाऽकरोत्॥5॥

अन्वयः - (सः) बान्धवैः गृहवृद्धैः तथा गुरुशास्त्राज्ञया प्रेरितः अनीहमानः अपि विधिना विवाहम् अकरोत्।

जब घर जाने लग गए तो उन्होंने बांधवों, घर के बड़ों गुरुओं और शास्त्र की आज्ञा से प्रेरित होकर, न चाहते हुए भी विधिपूर्वक विवाह किया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्थगितां पुनरुद्धर्तुं व्यवस्थां गृहकर्मणाम्।
स मध्येऽध्ययनं दृष्ट्वाऽऽसादयद् गृहमेधिनीम्॥6॥

अन्वयः – सः गृहकर्मणाम् स्थगिताम् व्यवस्थाम् दृष्ट्वा पुनः उद्धर्तुम् मध्येऽध्ययनम् गृहमेधिनीम् आसादयत्।

इस के अतिरिक्त विवाह का यह भी कारण था कि उन्होंने घर के सभी कामों की व्यवस्था को स्थगित जानकर उसे फिर से चलाने के लिए अध्ययन के मध्य धर्मपत्नी को ग्रहण किया।

समानकुलजां देशकालधर्मावबोधिनीम्।
विनम्रामनुरूपां च प्राप्य पत्नीममोदत॥7॥

अन्वयः – समानकुलजाम् देशकालधर्मावबोधिनीम् विनम्राम् अनुरूपाम् च पत्नीम् प्राप्य (सः) अमोदत।

पत्नी बराबर के कुल से थी। देश, काल, धर्म आदि की मर्यादाओं को जानने वाली, विनम्र और उनके अनुरूप थी। अतः उसे पाकर शालग्राम जी बहुत प्रसन्न हुए।

विदुषाऽतिथिदेवेशपतिभक्तिपरायणा।
भक्तिरित्यभिधा लब्धा श्रद्धेव विधिना बधूः॥8॥

अन्वयः – विदुषा (तेन) अतिथिदेवेशपतिभक्तिपरायणा, विधिना श्रद्धा इव भक्तिः इत्यभिधा बधूः लब्धा।

उस विद्वान् ने 'भक्ति' नाम की बधू को प्राप्त किया जो अतिथि, देव, ईश्वर और पति की भक्ति को ही अपना सर्वस्व मानती थी। ऐसा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लगा जैसे विधि ने श्रद्धा को पाया हो।

तन्वन्तौ साधु कल्याणमैहिकामुष्मिकाभिधम्।
तौ मर्मज्ञजनश्लाघ्यमपातां हि गृहाश्रमम्॥9॥

अन्वयः – तौ मर्मज्ञजनश्लाघ्यम् ऐहिकामुष्मिकाभिधम् कल्याणम् साधु तन्वन्तौ हि गृहाश्रमम् अपाताम्।

उन दोनों ने मर्मज्ञ जनों द्वारा प्रशंसनीय, सांसारिक एवं पार–लौकिक कल्याण सिद्ध करते हुए विधिपूर्वक गृहस्थ आश्रम का पालन किया।

गृहभारवहां सम्यगभिवीक्ष्यात्मनिर्भराम्।
पत्नीमध्ययनार्थाय पुनरग्रेसरोऽभवत्॥10॥

अन्वयः – (सः) गृहभारवहाम् सम्यक् आत्मनिर्भराम् पत्नीम् अभिवीक्ष्य पुनः अध्ययनार्थाय अग्रेसरः अभवत्।

पत्नी को घर का भार उठाने में समर्थ तथा भली–भांति आत्म–निर्भर जानकर वे फिर से उच्चतर अध्ययन के लिए निकल पड़े।

विद्यामर्मविदां काशीमधिष्ठानं निशम्य सः।
प्रावीण्यं वैदिकज्ञानेऽधिगन्तुं तत्र चागमत्॥11॥

अन्वयः – सः विद्यामर्मविदाम् अधिष्ठानम् काशीम् निशम्य वैदिकज्ञाने प्रावीण्यम् अधिगन्तुम् तत्र च अगमत्।

विद्या के मर्मज्ञों का ठिकाना काशी है, यह सुनकर, वैदिक ज्ञान में प्रवीणता पाने के लिए वहां चले गए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्रयीधर्ममपर्याप्तमध्यवस्यात्मलब्ध्ये।
तमुपेक्ष्य प्रवेशाय दर्शनेषु व्यचारयत्॥12॥

अन्वयः - (सः) त्रयीधर्मम् आत्मलब्धये अपर्याप्तम् अध्यवस्य तम् उपेक्ष्य दर्शनेषु प्रवेशाय व्यचारयत्।

यज्ञ आदि कर्मों की प्रधानता वाले वेदों के धर्म को आत्मज्ञान की प्राप्ति में अपर्याप्त जानकर और उस की अपेक्षा दर्शन विद्या को अधिक उपयोगी मान कर उसमें प्रवेश के लिए विचार किया।

उद्दिश्य जीवनोत्कर्षं व्यावहारिकपाटवात्।
प्राविशद् दशमीं श्रेणीं नवीनविषयात्मिकाम्॥13॥

अन्वयः - व्यावहारिकपाटवात् जीवनोत्कर्षम् उद्दिश्य नवीन-विषयात्मिकाम् दशमीम् श्रेणी् प्राविशत्।

उन्होंने पहले व्यवहार के क्षेत्र में कुशलता अर्जित करके जीवन की उन्नति के लिए, नवीन विषयों के अध्ययन के लिए दसवीं कक्षा में भी प्रवेश लिया।

निजे निःसारतां ज्ञात्वा तज्ज्ञानस्योत्तमे पथि।
अजहात् स रसालोत्का पिकीवान्यतरुं च तत्॥14॥

अन्वयः - सः तज्ज्ञानस्य निजे उत्तमे पथि निःसारताम् ज्ञात्वा रसालोत्का पिकी अन्यतरुम् इव च तत् अजहात्।

परन्तु अपने उत्तम मार्ग में उस कामचलाऊ ज्ञान की निःसारता जानकर उसे ऐसे त्याग दिया जैसे आम की मञ्जरी को पाने की उत्सुक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कोयल अन्य वृक्ष का त्याग कर देती है।

क्व ज्ञानकणिकाऽन्यत्र क्व काश्यां दर्शनार्णवः।
देवभाग्ये सुधापानं भवति क्व सरिज्झलम्॥15॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

क्योंकि, कहां तो दूसरे विषयों के अध्ययन में ज्ञान की छोटी सी बूंद और कहां काशी जैसे विद्या के गढ़ में दर्शन के महान् ज्ञान का समुद्र? सचमुच, देवता के भाग्य में अमृत का पान करना लिखा होता है न कि साधरण नदी का जल।

प्रथितं क्वींसकालेजं विद्वन्मण्डलमण्डितम्।
प्राविशद् दर्शनज्ञीप्सुः काशीप्रांशुयशोध्वजम्॥16॥

अन्वयः – विद्वन्मण्डलमण्डितम् काशीप्रांशुयशोध्वजम् प्रथितम् क्वींसकालेजम् दर्शनज्ञीप्सुः प्राविशत्।

काशी में क्वींस कालेज प्रसिद्ध था। वह अनेक विद्वानों से समृद्ध होने के कारण काशी के ऊँचे यश की ध्वजा की तरह विख्यात था। इसलिए दर्शनों का अध्ययन करने के लिए उन्होंने उस में प्रवेश लिया।

उदात्तं दर्शनज्ञानं परसत्यप्रकाशकम्।
प्राप्तपारगुरुग्रामाद् अग्रहीत् प्रतिपत्तिमान्॥17॥

अन्वयः – प्रतिपत्तिमान् (सः) प्राप्तपारगुरुग्रामात् परसत्यप्रकाशकम् उदात्तम् दर्शनज्ञानम् अग्रहीत्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गम्भीर विषयों के मर्म को समझने की योग्यता से सम्पन्न होने से उन्होंने काशी में पारङ्गत गुरुगणों से परम सत्य का प्रकाशक दर्शनों का विशद ज्ञान प्राप्त किया।

येनाक्षरपरब्रह्माधिगमः प्रशमायनम्।
जगज्ञालगुणोच्छेदी संपद्येतापुनर्भवः ॥18॥

अन्वयः - येन (दर्शनज्ञानेन) जगज्ञालगुणोच्छेदी अपुनर्भवः प्रशमायनम् अक्षरपरब्रह्माधिगमः संपद्येत।

जिस दर्शन ज्ञान से-जगत के जाल की रस्सियां (या गुण) कट जाती हैं, पुनर्जन्म का संकट नहीं रहता और जो परम शान्तिदायक है-ऐसे अक्षर परमब्रह्म की प्राप्ति होती है।

ज्ञातेनैकेन येनैव विज्ञातमखिलं भवेत्।
ज्ञायते येन तज्ज्ञेयं जिज्ञासा च शमं व्रजेत्॥19॥

अन्वयः - येन तत् ज्ञेयम् ज्ञायते येन एकेन एव ज्ञातेन अखिलम् विज्ञातम् भवेत् जिज्ञासा च शमं व्रजेत्।

जिस दर्शन के ज्ञान द्वारा उस ज्ञेय को जाना जाता है जिस एक ही के जानने पर सम्पूर्ण का ज्ञान भलीभांति हो जाता है और जिज्ञासा शान्त हो जाती है।

येनैतदखिलं दृश्यं दर्पणे प्रतिबिम्बवत्।
कल्पितं प्रतिभासेत तज्ज्ञानं येन लभ्यते॥20॥

अन्वयः - स्पष्ट एव।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जिस दर्शन के द्वारा वह ज्ञान प्राप्त हो जाता है जिसके द्वारा यह सम्पूर्ण दृश्य प्रपञ्च दर्पण में प्रतिबिम्ब की तरह कल्पित लगता है।

येनाऽन्याखिलविद्यानां वेद्यमूल्याङ्कनं भवेत्।
मृत्तिकैव तरौ यच्च सर्वासूद्देश्यतोऽन्वितम्॥21॥

अन्वयः - येन अन्याखिलविद्यानाम् वेद्यमूल्याङ्कनं भवेत्। यत् च तरौ मृत्तिका इव सर्वासु उद्देश्यतः अन्वितम्।

जिस दर्शन के द्वारा अन्य सभी विद्याओं के निष्कर्षों को परखा जाता है तथा जो उन सब में उद्देश्य चिन्तन के रूप में इस तरह समाया हुआ है जैसे वृक्ष में मिट्टी। क्योंकि, किस विद्या में पुरूषार्थ को सिद्ध करने वाली कितनी उपयोगिता है और उसका उद्देश्य क्या है- यह चिन्तन पक्ष केवल दर्शन के द्वारा ही सम्भव होता है।

विवेकादिमुमूक्षान्तं साधनानां चतुष्टयम्।
यस्य पात्रत्वजनकं तज्ज्ञानं येन लभ्यते॥22॥

अन्वयः - स्पष्टः।

जिस ज्ञान की पात्रता पैदा करने के लिए (सदसद् विवेक, सांसारिक-पारलौकिक भोगों से वैराग्य, शम दम तितिक्षा उपरति श्रद्धा व समाधान- इन छः गुणों की सम्पत्ति तथा बन्धन से मुक्ति पाने की तीव्र इच्छा) इन चार साधनों की अनिवार्य अपेक्षा रहती है, वह ज्ञान जिस दर्शन के द्वारा प्राप्त होता है।

स्थूलदृष्टिकृतो भेदः सूक्ष्मदृष्ट्याऽन्यथा भवेत्।
इति भेदभिदां युक्तिं युक्तो येनाध्यवस्यति॥23॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – स्पष्ट एव।

स्थूल दृष्टि से प्रतीत होने वाली पदार्थों की भिन्नता सूक्ष्म दृष्टि आ जाने पर उससे विपरीत सिद्ध होती है, (अर्थात् एकता के ज्ञान में बदल जाती है) जिस दर्शन ज्ञान से युक्त व्यक्ति भेद को दूर करने वाली इस युक्ति का निश्चय करता है।

बाह्यार्थमात्रमुग्धानामिन्द्रियानन्दवादिनाम्।
अपि येनात्ममीमांसां प्रति वृत्तिः प्रवर्तते ॥24॥

अन्वयः – येन बाह्यार्थमात्रमुग्धानाम् इन्द्रियानन्दवादिनाम् वृत्तिः अपि आत्ममीमांसां प्रति प्रवर्तते।

जिस दर्शनज्ञान के द्वारा–मात्र बाह्य भौतिक पदार्थों की भूल–भुलैयां में फंसे हुए विमुग्ध और केवल इन्द्रियों द्वारा विषयों की उपलब्धि से उत्पन्न तुच्छ सुख को ही एक मात्रा जीवन का उद्देश्य मानने वाले चार्वाक् आदि की वृत्ति भी, कुछ विचारपक्ष में प्रवृत्त होकर आत्मा के चिन्तन के प्रति प्रवृत्त हो जाती है। अर्थात् भौतिकवादी चार्वाक् भी जब भूतपदार्थों और उनके सुख आदि का चिन्तन करते हैं तो उन्हें भी आत्मा की प्रारम्भिक अवधरणा तो करनी ही पड़ती है जिस से उनका चिन्तन भी दर्शनों की सोपान परम्परा से जुड़ जाता है।

वपुःप्रमाणमात्मानं मन्यमानैः सहिष्णुभिः।
ज्ञानदर्शनचारित्र्यैर्विमुक्तिर्यत्र तर्क्यते ॥25॥

अन्वयः – यत्र वपुःप्रमाणम् आत्मानम् मन्यमानैः सहिष्णुभिः (जिनमतवादिभिः) ज्ञानदर्शनचारित्र्यैः विमुक्तिः तर्क्यते।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जिस दर्शन ज्ञान में, आत्मा को शरीर के बराबर मानने वाले, सप्तभंगी न्याय के अनुसार मतभेदों के सभी प्रकारों को सहने वाले जैन मतवादियों द्वारा तर्कप्रधान शैली से सम्यक् ज्ञान, दर्शन और चारित्र्य द्वारा मुक्ति का प्रतिपादन है।

आर्यसत्यचतुष्ट्वस्याभ्यासाद् योगस्य चाष्टधा।
यत्रासदात्ममननात्तथा मोक्षोऽभिधीयते ॥26॥

अन्वयः – यत्र (बौद्धैः) आर्यसत्यचतुष्ट्वस्य अष्टधा योगस्य च अभ्यासात् तथा असदात्ममननात् मोक्षः अभिधीयते।

जिस दर्शन की परम्परा में, बौद्धदार्शनिकों के द्वारा चार आर्य-सत्यों, अष्टाङ्गयोग के अभ्यास तथा आत्मा की सत्ता के अभाव के मनन से मुक्ति की प्राप्ति कही जाती है।

तर्कोपवृंहितैर्मानैः प्रमेयप्रमितिक्रमात्।
दुःखात्यन्तनिवृत्तिश्च मोक्षाख्या यत्र साध्यते ॥27॥

अन्वयः – यत्र (नैय्यायिकैः), शेषः सुगमः।

जिस दर्शनशास्त्र की परम्परा में, नैय्यायिकों द्वारा तर्क के द्वारा पुष्ट प्रमाणों से प्रमेयों का यथार्थ ज्ञान और उससे मिथ्याज्ञान के विनाश के क्रम से दुःखों की अत्यन्त निवृत्ति को मोक्ष सिद्ध किया जाता है।

अर्थसाधर्म्यवैधर्म्यज्ञानाद् यत्रावसीयते।
विमुक्तिरात्मनः सम्यग् विशेषगुणविच्युतिः ॥28॥

अन्वयः – यत्र (वैशेषिकैः) अर्थसाधर्म्यवैधर्म्यज्ञानात् आत्मनः सम्यक्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विशेषगुणविच्युतिः मुक्तिः अभिधीयते।

जिस दर्शन की परम्परा में, वैशेषिक दर्शन के द्वारा पदार्थों के साधर्म्य और वैधर्म्य के ज्ञान से आत्मा के पदार्थों के विशेष गुणों से अलग हो जाने को मुक्ति सिद्ध किया है।

आत्मकैवल्यविज्ञानादविद्याविनिवर्तनात्।
दुःखत्रयविघाताख्योऽपवर्गो यत्र चिन्त्यते ॥29॥

अन्वयः – यत्र (सांख्यैः) आत्मकैवल्यविज्ञानात् अविद्याविनिवर्तनात् दुःखत्रयविघाताख्यः अपवर्गः चिन्त्यते।

जिस दर्शन परम्परा में, प्रकृति और पुरूष के विवेक द्वारा आत्मा का असङ्ग होना जाना जाता है तथा उससे अविद्या की निवृत्ति और उससे तीन प्रकार के दुःखों का नाश होना अपवर्ग कहा जाता है।

चित्तवृत्तिनिरोधेन स्वरूपस्थितिरात्मनः।
अशेषक्लेशविश्लेषा मुक्तिर्यत्रोपदिश्यते ॥30॥

अन्वयः – यत्र (योगदर्शनज्ञैः) चित्तवृत्तिनिरोधेन आत्मनः अशेष-क्लेशविश्लेषा स्वरूपस्थितिः मुक्तिः उपदिश्यते।

जिस दर्शन परम्परा में, योगदर्शन के ज्ञानियों के द्वारा चित्त की वृत्तियों का निरोध हो जाने पर समस्त क्लेशों के नाश वाली आत्मा की स्वरूप में स्थिति ही मुक्ति कही गई है।

शुद्धब्रह्मातिरिक्तेषु मायाकल्पितवस्तुषु।
मिथ्यात्वनिश्चयान्मोक्षः परमो यत्र कथ्यते ॥31॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – यत्र (वेदान्तिभिः) शेषः स्पष्टः।

जिस दर्शन परम्परा में शुद्ध ब्रह्म से भिन्न माया द्वारा कल्पित सभी पदार्थों की मिथ्यता के निश्चय के द्वारा परम मोक्ष की प्राप्ति कही जाती है।

तद् दर्शनमहाशास्त्रं नानोपस्थानविस्तृतम्।
सनिगूढाशयं विद्भ्योऽधीतवान् विशदाशयः ॥32॥

अन्वयः – तद् दर्शनमहाशास्त्रं नानोपस्थानविस्तृतम् सनिगूढाशयम् विशदाशयः सः विद्भ्यः अधीतवान्।

उस दर्शन महाशास्त्र को, जो अनेक सम्प्रदायों में फैला हुआ है तथा जिस का तत्त्व अत्यन्त गम्भीर है, निर्मल अन्तःकरण वाले उस विद्वान् ने महान् गुरुजनों से अध्ययन द्वारा आत्मसात् किया।

उत्तीर्यातिश्रमाच्छास्त्रपरीक्षागाधवारिधिम्।
सर्वदर्शनशास्त्रीति ह्युपाधिमुपलब्धवान्॥33॥

अन्वयः – (सः) अतिश्रमात् शास्त्रपरीक्षाऽगाधवारिधिम् अतिश्रमात् उत्तीर्य सर्वदर्शनशास्त्री इति उपाधिम् उपलब्धवान्।

उन्होंने शास्त्रों की परीक्षा बड़े परिश्रम से अगाध समुद्र की तरह उत्तीर्ण करके 'सर्वदर्शनशास्त्री' इस उपाधि को प्राप्त किया।

गुरवः सर्वशास्त्रज्ञा मूर्द्धन्योऽध्ययनालयः।
दर्शनाध्ययनं चैव त्रयमेवातिदुर्लमम्॥34॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सम्पूर्ण शास्त्रों के ज्ञाता गुरुजन, सर्वश्रेष्ठ विद्याध्ययन का केन्द्र और दर्शन जैसे अति गम्भीर विषय का अध्ययन, इन तीनों का एकत्र संयोग वस्तुतः अतिदुर्लभ है जो उन्हें मिला।

शास्त्रतत्त्वमधीतं स्याद् गहनान्मननाद् दृढ़म्।
समावर्त्यापि सदने स्वाध्यायं स ततो व्यधात्॥35॥

अन्वयः – अधीतम् शास्त्रतत्त्वम् गहनात् मननात् दृढम् स्यात्। ततः समावर्त्य अपि सदने स्वाध्यायम् व्यधात्।

अध्ययन से प्राप्त शास्त्र ज्ञान गम्भीर मनन के द्वारा ही दृढ़ बनता है। इसलिए उन्होंने विद्यालय से घर को लौटकर भी सदा स्वाध्याय जारी रखा।

नैरन्तर्येण विहितात् स्वाध्यायाद्धि विपश्चितः।
परमश्नुवते पारं शास्त्राणां न ततोऽन्यथा॥36॥

अन्वयः – विपश्चितः नैरन्तर्येण विहितात् स्वाध्यायात् हि शास्त्राणाम् परम् पारम् अश्नुवते ततः अन्यथा न।

विद्वान् निरन्तर स्वाध्याय करने से ही शास्त्रों के अन्तिम छोर तक पहुंच पाते हैं। उसके बिना बिल्कुल नहीं।

अधीत्योपार्जितं ज्ञानं स्वाध्यायेनैव पुष्यते।
मृदा बीजमिवोद्भिन्नं सततं प्राप्तवारिणा॥37॥

अन्वयः – अधीत्य उपार्जितम् ज्ञानम्, मृदा उद्भिन्नम् बीजम् सततम् वारिणा इव, स्वाध्यायेन एव पुष्यते।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जैसे मिट्टी से उगा हुआ बीज पौध बनकर लगातार पानी ? देने से ही वृद्धि को प्राप्त होता है, उसी तरह अध्ययन के द्वारा अर्जित ज्ञान स्वाध्याय के द्वारा ही पुष्ट होता है।

गुरोर्मिहिरचन्द्रात् स गत्वाऽमृतसरःपुरम्।
किंचित्कालं हि शास्त्राणामन्तःसारमधीतवान्॥38॥

अन्वयः - स हि अमृतसरःपुरम् गत्वा किञ्चित्कालम् मिहिरचन्द्रात् गुरोः शास्त्राणाम् अन्तःसारम् अधीतवान्।

उन्होंने अमृतसर नगर जाकर कुछ समय तक श्रेष्ठ विद्वान् गुरु श्रीमिहिरचन्द पुष्करणा से भी शास्त्रों के गम्भीर सार का अध्ययन किया।

शाम्यन्ति सकलाभीप्सा वशिनां समयान्तरे।
शास्त्राभ्यासपिपासा तु वर्द्धते ह्युत्तरोत्तरम्॥39॥

अन्वयः - वशिनाम् समयान्तरे सकलाभीप्साः शाम्यन्ति। शास्त्राभ्यासपिपासा तु उत्तरोत्तरम् हि वर्द्धते।

आत्मसंयमी जनों की अन्य सभी इच्छाएं समय आने पर शान्त हो जाती हैं, परन्तु विद्याभ्यास की पिपासा ही ऐसी है जो उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है।

वाग्देव्या ब्रह्मरूपायास्तन्यामृतमहोऽद्भुतम्।
निपीतमपि निःशेषाद् वर्द्धयेद् यत् तृषं भृशम्॥40॥

अन्वयः - अहो! ब्रह्मरूपायाः वाग्देव्याः स्तन्यामृतम् अद्भुतम् (अस्ति) यस्याः स्तन्यामृतम् निःशेषात् निपीतम् अपि तृषम् भृशम् वर्द्धयेत्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्रह्मस्वरूपा वाग्देवी सरस्वती के स्तनों के अमृत की महिमा अत्यन्त अद्‌भुत है। जो पूर्ण रूप से पिया जाने पर भी और अधिक प्यास बढ़ा देता है। (अर्थात् शास्त्रज्ञान की पिपासा बढ़ती ही रहती है।

अब्धितुल्यानि शास्त्राणि शक्तैरप्यवगाहिभिः।
यथा यथा विलोड्यन्तेऽगाधायन्ते तथा तथा॥41॥

अन्वयः - स्पष्ट एव।

वास्तव में शास्त्र तो समुद्र के समान हैं। बड़े-बड़े शक्ति-शाली तैराक (ज्ञानी) भी उनका जैसे-जैसे अवगाहन करते हैं वे वैसे-वैसे ही अधिक अगाध लगते हैं।

स्वाध्यायपरिपक्वेन ज्ञानेनाग्रेसरोऽग्रिमाः।
समये समये नैकाः परीक्षाः पर्यपूरयत्॥42॥

अन्वयः - अग्रेसरः (सः) स्वध्यायपरिपक्वेन ज्ञानेन समये समये नैकाः अग्रिमाः परीक्षाः पर्यपूरयत्।

वे ज्ञानार्जन में सदा अग्रगामी रहे। अपने गम्भीर स्वाध्याय से परिपक्व ज्ञान से उन्होंने समय-समय पर अगली बड़ी-बड़ी उपाधियों की अनेक परीक्षाऐं देकर उन्हें उत्तीर्ण किया।

वृत्त्यर्थं रुचिपूर्त्यै वाऽध्यापनं साधयन्नपि।
अत्यजन् पठनप्रेम सदा स्वाध्यायभागभूत्॥43॥

अन्वयः - स्पष्ट एव।

आजीविका के लिए अथवा अपनी स्वाभाविक रुचि को पूरा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करने के लिए अध्यापन को करते हुए भी अध्ययन का प्रेम न छोड़ते हुए वे सदा स्वाध्यायशील रहे।

देहगेहोन्नतिनतिसंपद्विपदुपेक्षकः।
समग्रमनयत् कालं शास्त्रचिन्तनतत्परः ॥44॥

अन्वयः – देहगेहोन्नतिनतिसंपद्विपदुपेक्षकः (सः) शास्त्राचिन्तन-तत्परः समग्रम् कालम् अनयत्।

उन्होंने शरीर, घर, उन्नति, ह्रास, सम्पत्ति विपत्ति की परवाह न करते हुए, समस्त समय शास्त्रचिन्तन करते हुए बिताया।

साहाय्यहीनो धनशक्तिरिक्तो गृहस्थकर्तव्यशतैः परीतः।
विद्यावलम्बेन परामगच्छद् वैदुष्यकाष्ठां स महामनस्वी ॥45॥

अन्वयः – साहाय्यहीनः धनशक्तिरिक्तः गृहस्थकर्तव्यशतैः परीतः (अपि) महामनस्वी सः विद्याऽवलम्बेन परां वैदुष्यकाष्ठाम् अगच्छत्।

यद्यपि कोई सहायक नहीं था, धनबल से भी रिक्त थे, घर के अनेक कर्तव्यों से घिरे थे, परन्तु वे महान् मनस्वी अपनी धुन के पक्के थे और विद्या का सहारा लेकर विद्वता के शिखर पर पहुँच गए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

षष्ठः सर्गः

प्रागल्भ्यं देवभाषायां विद्यासु विविधासु च।
उपलभ्य परां काष्ठामगच्छज्ज्ञानवारिधिः ॥1॥

अन्वयः – (सः) देवभाषायाम् विविधासु विद्यासु च प्रागल्भ्यम् उपलभ्य ज्ञानवारिधिः पराम् काष्ठाम् अगच्छत्।

अब तो उन्होंने देववाणी और पुरुषार्थों की साधक विविध विद्याओं में विशेष दक्षता पाकर ज्ञान के समुद्र का अन्तिम छोर पा लिया था।

वृत्तिपूर्तिक्षमेष्विज्याज्यौतिषादिषु सत्स्वपि।
शुद्धमध्यापनं कर्म चितवान् पुण्यगर्भितम् ॥2॥

अन्वयः – (सः) वृत्तिपूर्तिक्षमेषु इज्याज्यौतिषादिषु (कर्मसु) सत्सु अपि शुद्धम् पुण्यगर्भितम् अध्यापनम् कर्म चितवान्।

यद्यपि यज्ञ सम्पादन, ज्यौतिष आदि कर्म भी आजीविका की पूर्ति के लिए समर्थ हो सकते थे परन्तु उन्होंने पवित्र और पुण्यमय अध्यापन कर्म को ही चुना।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गुरूणां ज्ञानदातॄणामृणमध्ययनार्जितम्।
अध्यापनेन शिष्येभ्यो विद्वद्भिरवतार्यते॥3॥

अन्वयः - विद्वद्भिः अध्ययनार्जितम् ज्ञानदातॄणां गुरूणाम् ऋणम् शिष्येभ्यः अध्यापनेन अवतार्यते।

ज्ञान देने वाले गुरुओं का, अध्ययन द्वारा जो ऋण शिष्यों पर चढ़ जाता है वे शिष्य, विद्वान् बनकर अपने शिष्यों को पढ़ा कर उसे उतार देते हैं।

महिमा ज्ञानबीजानां शिष्योप्तानां विलक्षणः।
फलतां पुण्यरूपेण गुरावेवोत्तरोत्तरम्॥4॥

अन्वयः - पुण्यरूपेण उत्तरोत्तरम् गुरौ एव फलताम्, शिष्योप्तानाम् ज्ञानबीजानाम् महिमा विलक्षणः (भवति)।

गुरुजनों द्वारा शिष्यों में बोए गए ज्ञान के बीजों की महिमा बड़ी विलक्षण है। वे ज्ञानबीज, न केवल शिष्यों में ही फलते हैं अपितु, पुण्यों के रूप में गुरु में भी अनन्त काल तक फलते हैं।

वंशबीजोद्भवः पुत्रस्त्वेकं वंशं विवर्द्धयेत्।
असंख्यान्वयवृद्धिः स्याद् विद्याबीजनिषेचनात्॥5॥

अन्वयः - वंशबीजोद्भवः पुत्रः तु एकम् वंशम् विवर्द्धयेत्। विद्याबीजनिषेचनात् तु असंख्यान्वयवृद्धिः स्यात्।

वंशपरम्परा के बीज से पैदा हुआ पुत्र तो केवल एक ही वंश की वृद्धि करता है, परन्तु गुरु द्वारा शिष्यों में विद्याबीज को बोने से तो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उत्तरोत्तर असंख्य वंशों की वृद्धि होती है।

जन्मवंशो हि सामान्यो यस्य कस्यापि वर्द्धते।
द्योतते ज्ञानवंशस्तु तपोविद्यावतो गुरोः ॥6॥

अन्वयः – हि सामान्यः जन्मवंशः यस्य कस्य अपि वर्द्धते। ज्ञानवंशः तु तपोविद्यावतः गुरोः (एव) द्योतते॥

जन्म वाला वंश तो सभी का समान होता है और जिस किसी का भी आगे वंश बढ़ जाता है, परन्तु ज्ञानवंश तो केवल तप और विद्या से पवित्र महान् गुरु का ही बढ़ता है।

दृश्यते बीजवंशस्य विच्छेदोऽपि महीतले।
ज्ञानवंशस्य नाशस्तु न दृष्टो न श्रुतः क्वचित्॥7॥

अन्वयः – महीतले बीजवंशस्य तु विच्छेदः अपि दृश्यते। ज्ञानवंशस्य नाशः तु क्वचित् न दृष्टः न श्रुतः।

इस पृथ्वी पर भौतिक बीज के वंश की तो कहीं–कहीं समाप्ति भी देखी जाती है परन्तु ज्ञानवंश का नाश तो न कहीं देखा है और न कहीं सुना है।

अविरामप्रवाहस्य ज्ञानवंशस्य तादृशः।
वृद्धयेऽध्यापनं तस्मात् स विधातुं व्यचिन्तयत्॥8॥

अन्वयः – तस्मात् सः तादृशः अविरामप्रवाहस्य ज्ञानवंशस्य वृद्धये अध्यापनम् विधातुम् व्यचिन्तयत्।

इसलिए, अखण्ड प्रवाह वाले, उस प्रकार के ज्ञानवंश की

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वृद्धि के उद्देश्य से, उन्होंने अध्यापन के पावन कर्म को अपनाने का निश्चय किया।

श्री सनातनधर्मीयसंस्कृताध्ययनालये।
बैजनाथस्थले पूर्वमग्रहीद् गुरुगौरवम्॥9॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

विद्या वितरण की इच्छा से, सर्वप्रथम उन्होंने बैजनाथ स्थान में श्री सनातन धर्म संस्कृत विद्यालय में, आचार्य के गौरवमय पद को ग्रहण किया।

अनासाद्य व्यवस्थां सोऽनुकूलां तत्र चेतसः।
कृताग्रहोऽपि तां संस्थां मनस्वी व्यजहाज्जनैः॥10॥

अन्वयः – मनस्वी सः तत्र चेतसः अनुकूलाम् व्यवस्थाम् अनासाद्य जनैः कृताग्रहः अपि ताम् संस्थाम् व्यजहात्।

परन्तु वहां अपने मन के अनुकूल व्यवस्था को न पाकर, लोगों द्वारा आग्रह करने पर भी, स्वाभिमान से प्रेरित होकर उस संस्था को छोड़ दिया।

दिनानि कतिचिद् गेहे निवसन् विमना इव।
कायिकीं क्षीणतां प्राप्तश्चिन्तौदासीनताभवाम्॥11॥

अन्वयः – (सः) विमना इव कतिचित् दिनानि गेहे निवसन् चिन्तौ-दासीनताभवाम् कायिकीम् क्षीणताम् प्राप्तः।

अब वे अनमने से होकर कुछ दिन तक घर पर रहते हुए, चिन्ता

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और उदासीनता से उत्पन्न शारीरिक क्षीणता से ग्रस्त हो गए।

श्रीमन्मिहिरचन्द्रात् स गुरोः पुष्करणाभिधात्।
अयादाह्वानमासाद्य ततोऽमृतसरःपुरम्॥12॥

अन्वयः – ततः सः पुष्करणाभिधात् गुरोः श्रीमन्मिहिरचन्द्रात् आह्वानम् आसाद्य अमृतसरःपुरम्ः अयात्।

कुछ समय बाद वे श्री मिहिरचन्द पुष्करणा नामक अपने गुरु जी से निमन्त्रण पाकर अमृतसर नगर को चले गए।

स्वतन्त्रमभ्यसन् विद्या ज्यौतिष्कर्मादि वा श्रयन्।
अनयत् समयं प्रीत्या निश्चिन्तो गुरुसन्निधौ॥13॥

अन्वयः – (सः) स्वतन्त्रम् विद्याः अभ्यसन् ज्यौतिष्कर्म आदि वा श्रयन् गुरुसन्निधौ निश्चिन्तः प्रीत्या समयम् अनयत्।

वहां पर गुरुबर के पास रहते हुए निश्चिन्त होकर परीक्षा आदि के बन्धन से रहित स्वतन्त्रता पूर्वक उन से विद्याभ्यास करते हुए और ज्योतिष कर्मकाण्ड आदि से वृत्ति का अर्जन करते हुए प्रेम पूर्वक समय का सदुपयोग करने लगे।

कदाचिद् दरियाखानक्षेत्रात् पाकेऽधुना स्थितात्।
संस्कृताध्ययनस्थानात् प्राप्तः कश्चित् प्रबन्धकः॥14॥

अन्वयः – कदाचित् अधुना पाके स्थितात् दरियाखानक्षेत्रात् संस्कृताध्ययनस्थानात् कश्चित् प्रबन्धकः प्राप्तः।

तभी, एक समय, दरियाखान नामक स्थान से, जो अब पाकिस्तान

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

में स्थित है, वहां के संस्कृत विद्यालय से एक विद्यालय का प्रबन्धक अधिकारी आया।

संस्थासंचालको भूरिप्रभावो जनसम्मतः।
सुयोग्याध्यापकान्वेषी समुपेतो गुरोः पुरः ॥15॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

वह संस्कृत संस्था को चलाता था। प्रभावशाली और समाज में सम्मानित था। संस्कृत विद्यालय के लिए योग्य अध्यापक की खोज में गुरुवर श्री पुष्करणा जी के पास पहुंचा।

विमृश्य गुरुणा सम्यक् शास्त्राध्यापनपेशलम्।
मत्वाऽनयद् गुरोराज्ञापालनैकव्रतं हि तम् ॥16॥

अन्वयः – सः (प्रबन्धकः) गुरुणा सम्यक् विमृश्य, गुरोः आज्ञा-पालनैकव्रतम्, शास्त्राध्यापनपेशलम् मत्वा अनयत्।

वह गुरुजी से भलीभांति विचार विमर्श करके तथा उन्हें (शालग्राम जी को) शास्त्र-अध्यापन में कुशल जान कर आदरपूर्वक ले गया। वे तो गुरु की आज्ञा के पालक थे ही, और उसके साथ चले गए ।

महाविद्यालये तत्र प्राचार्यत्वमधिष्ठितः।
प्रतिष्ठां वर्द्धयामास प्रतिष्ठानस्य विद्वरः ॥17॥

अन्वयः – विद्वरः (सः) तत्र महाविद्यालये प्राचार्यत्वम् अधिष्ठितः (सन्) प्रतिष्ठानस्य प्रतिष्ठाम् वर्द्धयामास।

विद्वानों में श्रेष्ठ उन्होंने वहां पर, महाविद्यालय में प्राचार्य पद

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पर आसीन होकर उस प्रतिष्ठान की प्रतिष्ठा को बढ़ाया।

शास्त्रमर्मस्पृशा शिष्यान् साधुनाऽध्यापनेन सः।
विद्याविषयनिष्णातान् अकरोद् विनयान्वितान्॥18॥

अन्वयः - सः शास्त्रमर्मस्पृशा साधुना अध्यापनेन विनयान्वितान् शिष्यान् विद्याविषयनिष्णातान् अकरोत्।

विद्यालय में उन्होंने शास्त्रों के मर्मस्पर्शी उत्तमकोटि के अध्यापन के द्वारा, विनम्र छात्रों को विद्याओं के विषय में पूर्ण जानकार बना दिया।

शास्त्ररत्नाकराकुण्ठावगाहासादितामृतम्।
वितीर्यान्तेवसायिभ्योऽवाप्तवानद्भुतं यशः॥19॥

अन्वयः - सः अन्तेवसायिभ्यः शास्त्ररत्नाकराकुण्ठावगाहासादिता-मृतम् वितीर्य अद्भुतम् यशः अवाप्तवान्।

शास्त्रों के समुद्र के निरन्तर अवगाहन द्वारा प्राप्त अमृत, प्रिय शिष्यों को प्रचुर प्रयास से बांट कर उन्होंने अद्भुत ख्याति को अर्जित किया।

गम्भीरविषयग्रन्थीः सरलस्फुटभाषया।
सद्यो मधुरया शैल्या विशेषज्ञो व्यभेदयत्॥20॥

अन्वयः - विशेषज्ञः (सः) सरलस्फुटभाषया मधुरया शैल्या गम्भीरविषयग्रन्थीः सद्यः व्यभेदयत्।

वे तो शास्त्रों के विशेषज्ञ थे। बड़ी सरल और स्पष्ट भाषा के द्वारा, मधुर शैली से गम्भीर से गम्भीर शास्त्रीय विषयों की ग्रन्थियाँ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तत्काल सुलझा देते थे।

वैदुष्ययशसा धात्रा दुर्भाग्यमपि योजितम्।
केषांचिद् येन हृदयेऽमर्षवह्निर्ज्वलत्यहो ॥21॥

अन्वयः - धात्रा वैदुष्ययशसा दुर्भाग्यम् अपि योजितम्। येन केषाञ्चित् हृदये अमर्षवह्निः ज्वलति, इत्यहो।

विद्वत्ता के यश के साथ विधाता ने एक दुर्भाग्य भी जोड़ दिया है जिसके कारण कुछ लोगों के हृदय में असहनशीलता की आग भी भड़क जाती है। यह खेद ही है।

सारल्यं कुटिलैर्ग्रस्तं वैदुष्यमसहिष्णुभिः।
सौजन्यं दुर्जनैश्चेति विडम्बनमरुन्तुदम् ॥22॥

अन्वयः - सारल्यम् कुटिलैः, वैदुष्यम् असहिष्णुभिः, सौजन्यम् च दुर्जनैः ग्रस्तम्-इति अरुन्तुदम् विडम्बनम्।

सरलता कुटिल लोगों के द्वारा, विद्वत्ता असहिष्णुओं द्वारा तथा सज्जनता दुर्जनों के द्वारा ग्रस्त है- यह प्राणों को पीड़ा देने वाली विडम्बना है।

हेतुनाऽल्पीयसोत्पन्नविवादेनाधिकारिणा।
स तां संस्थां परित्यक्तुं निजनिश्चयमभ्यधात् ॥23॥

अन्वयः - सः अल्पीयसा हेतुना, अधिकारिणा उत्पन्नविवादेन ताम् संस्थाम् परित्यक्तुम् निजनिश्चयम् अभ्यधात्।

किसी छोटे से कारण से, विद्यालय के प्रबन्धक से मतभेद

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पैदा हो जाने पर उन्होंने उस संस्था का त्याग करने का अपना निश्चय अधिकारी वर्ग से कह दिया।

स्वाभिमानधनानां हि स्वभावः परमाद्भुतः।
अपि ये सङ्कटापन्ना नाङ्गीकुर्वन्ति लाघवम्॥24॥

अन्वयः – स्वाभिमानधनानाम् स्वभावः परमाद्भुतः (भवति) ये हि सङ्कटापन्नाः अपि लाघवम् न अङ्गीकुर्वन्ति।

क्योंकि, स्वाभिमान के धनी पुरुषों का स्वभाव तो बड़ा विलक्षण होता है, जो संकट आ पड़ने पर भी अन्याय से समझौता स्वीकार नहीं करते।

मनस्विनः सुमनसो वा तुल्या सुकुमारता।
स्वल्पाऽपि क्षोभकणिका ययोर्वैवर्ण्यमावहेत्॥25॥

अन्वयः – मनस्विनः सुमनसः वा सुकुमारता तुल्या (भवति) ययोः स्वल्पा अपि क्षोभकणिका वैवर्ण्यम् आवहेत्।

संसार में स्वाभिमानी जनों और फूलों में एक समान नाजुकता होती है जिन्हें थोड़ी–सी क्षोभ की कणिका कुम्हला देती है।

विद्वद्विकलसंस्थाया हानिं संभाव्य भूयसीम्।
प्रबन्धकजनाः पश्चात्तापमन्वभवन् परम्॥26॥

अन्वयः – प्रबन्धकजनाः विद्वद्विकलसंस्थायाः भूयसीम् हानिम् संभाव्य परम् पश्चात्तापम् अन्वभवन्।

उस श्रेष्ठ विद्वान् के बिना, संस्था की भारी हानि की संभावना

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

से प्रबन्धक जन अत्यन्त पश्चात्ताप का अनुभव करने लगे।

व्यक्तखेदैरपि स तैरनुनीतः क्षमार्थिभिः।
नाचलन्निश्चयात् क्व द्विर्निर्णयन्ति मनस्विनः॥27॥

अन्वयः – तैः क्षमार्थिभिः व्यक्तरवेदैः अनुनीतः अपि सः निश्चयात् न अचलत्। मनस्विनः क्व द्विः निर्णयन्ति।

संस्था के उन प्रबन्धकों ने बड़ी क्षमा मांगी और खेद भी प्रकट किया किन्तु वे अपने निश्चय से हटे नहीं। भला स्वाभिमानी पुरुष दो बार निर्णय कहां करते हैं?

तदवेत्यान्यसंस्थानं डेरेस्माइलखां स्थलम्।
उपामन्त्रयितुं लोकाः प्रार्थयन्त तमादरात्॥28॥

अन्वयः – तत् अवेत्य, लोकाः डेरा इस्माइलखां स्थलम् अन्य संस्थानम् उपामन्त्रयितुम् आदरात् तम् प्रार्थयन्त।

उनका संस्था छोड़ने का निश्चय जानकर लोग डेरा इस्माइलखां नामक स्थान में स्थित अन्य विद्यालय में अध्यापन के लिए बुलाने की इच्छा से उन से आदरपूर्वक प्रार्थना करने लगे।

सोऽवोचत् प्रतियाम्येवाऽधुनाऽमृतसरःपुरम्।
यः पूर्वं प्राप्नुयात् तत्र करिष्यामि तदीप्सितम्॥29॥

अन्वयः – सः अवोचत्–अधुना अमृतसरःपुरम् प्रतियामि एव। यः पूर्वं तत्र प्राप्नुयात् तदीप्सितम् करिष्यामि।

परन्तु, उन्होंने अपना निश्चय दोहराते हुए यही कहा कि –अभी तो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अमृतसर नगर को जाऊँगा ही। हाँ, आप में से जो वहां पहले मुझे बुलाने के लिए पहुंचेगा उसी की इच्छा पूरी करूंगा। (उस की संस्था में काम करूंगा)।

स धर्मनगरे भूयः प्राप्तोऽमृतसरस्यथ।
यदृच्छावृत्तिरभवत् स्वाभिमानमसंत्यजन्॥30॥

अन्वयः – अथ सः भूयः धर्मनगरे अमृतसरसि प्राप्तः स्वाभिमानम् असंत्यजन् यदृच्छावृत्तिः अभवत्।

अब फिर से वे धर्मनगर अमृतसर में पहुंच गए। वहां पर भी अपना स्वाभिमान न छोड़ते हुए, स्वतन्त्र कर्म से जो उपलब्ध हो जाय उसी में निर्वाह करने लगे।

डेरेस्माइलखां स्थानात् संस्कृताध्यापकेच्छुकाः।
ज्ञाताभिसन्धयः पूर्वं प्राप्ताः प्रार्थयितुं जनाः॥31॥

अन्वयः–ज्ञाताभिसंधयः संस्कृताध्यापकेच्छुकाः जनाः (तम्) प्रार्थयितुम् डेरेस्माइलखां स्थानात् पूर्वम् प्राप्ताः।

उनके द्वारा रखी गई शर्त से परिचित, संस्कृत अध्यापक के रूप में उन्हें चाहने वाले महानुभाव डेरा इस्माइलखाँ स्थान से, उन्हें निवेदन करने के लिए पहले पहुंच गए।

तेषां नम्रानुरोधेन भूरिणाऽऽवर्जितः स च।
संस्कृताध्यापनप्रेमी तत्रागच्छन्निराग्रहः॥32॥

अन्वयः – तेषाम् भूरिणा नम्रानुरोधेन आवर्जितः च निराग्रहः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

संस्कृताध्यापनप्रेमी सः तत्र अगच्छत्।

उनके अत्यन्त नम्रतापूर्वक किए गए अनुरोध से सहमत होकर, संस्कृत अध्यापन के प्रेमी, वे भी बिना किसी आग्रह के उन लोगों के साथ उस डेरा स्थान में चले गए।

प्राचार्योदग्रपदवीमधिष्ठायादरार्पिताम्।
परिश्रमपरो विद्याऽध्यापनादिपरोऽभवत्॥33॥

अन्वयः – आदरार्पिताम् प्राचार्योदग्रपदवीम् अधिष्ठाय परिश्रमपरः (सः) विद्याऽध्यापनादिपरः अभवत्।

प्रबन्धकवर्ग के द्वारा बड़े आदर से समर्पित प्राचार्य के श्रेष्ठ पद पर आसीन होकर, परिश्रमी स्वभाव वाले वे, विद्याअध्यापन, प्रशासन आदि कार्यों में जुट गए।

शास्त्रसारं समाहृत्य प्रविविच्य स विस्तरात्।
अध्यापनकलाकाष्ठामस्पृशत् स विलक्षणाम्॥34॥

अन्वयः – सः शास्त्रसारम् समाहृत्य विस्तरात् प्रविविच्य च विलक्षणाम् अध्यापनकलाष्ठाम् अस्पृशत्।

उन्होंने शास्त्रों के सार को निकाल कर और उसे विस्तारपूर्वक पृथक्-पृथक् करके अपनी विलक्षण अध्यापन कला की पराकाष्ठा को छुआ।

सार्द्धत्रिवर्षसमयावधि तत्रस्थितोऽखिलाम्।
मनोऽनुरूपामासाद्य समतुष्यत् परिस्थितिम्॥35॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – (सः) सार्द्धत्रिवर्षसमयावधि तत्र स्थितः अखिलाम् परिस्थितम् मनः अनुरूपाम् आसाद्य समतुष्यत्।

साढ़े तीन वर्ष तक वहां रहकर, समस्त व्यवस्था को अपने मन के अनुकूल पाकर पूर्णतया सन्तुष्ट थे।

अत्रान्तरेऽतिदुर्भाग्यादेका दुर्घटनाऽभवत्।
हिन्दूयवनसङ्घर्षः प्रारब्धोऽतिविभीषणः॥36॥

अन्वयः – अत्रान्तरे अतिदुर्भाग्यात् एका दुर्घटना अभवत् (यत्र) अतिविभीषणः हिन्दूयवनसङ्घर्षः प्रारब्धः।

इसी बीच, अति दुर्भाग्य वश एक दुर्घटना हो गई कि अत्यन्त भयंकर हिन्दू-मुगल सङ्घर्ष प्रारम्भ हो गया।

प्रविभाजयितुं लोकान् हिन्दुमुस्लिमधर्मिणः।
आंग्लैर्व्यधायि षड्यन्त्रं भ्रातृवद् वसतोऽपि हा!॥37॥

अन्वयः – भ्रातृवद् वसतः अपि हिन्दुमुस्लिमधर्मिणः लोकान् प्रविभाजयितुम् आंग्लैः षड्यन्त्रम् व्यधायि। (इति हा!)

चालबाज अंग्रेज अधिकारियों ने, भाईयों की तरह सौहार्दपूर्वक रहने वाले हिन्दू और मुस्लिम धर्मावलम्बियों को बांटने के लिए कुटिल षड्यन्त्र रच दिया। यह खेदजनक बात थी।

द्विधा विभज्य ते देशमैच्छन् प्रक्षेप्तुमापदि।
निष्प्रयोजनमन्येषां हितं घ्नन्ति दुराशयाः॥38॥

अन्वयः – ते देशम् द्विधा विभज्य आपदि प्रक्षेप्तुम् ऐच्छन्। दुराशयाः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

निष्प्रयोजनम् अन्येषाम् हितम् धनन्ति।

वे देश को, फूट डाल कर इसके दो टुकड़े करवा कर, संकट में डालना चाहते थे। संसार में दुर्भावनाग्रस्त लोग बिना किसी प्रयोजन से दूसरों के हित की हानि करते हैं।

क्रूराणां दुष्प्रचारेण प्रेरितानां विभीषणम्।
हिंसाताण्डवमारब्धमन्योऽन्यं विजिघांसताम्॥39॥

अन्वयः – दुष्प्रचारेण प्रेरितानाम् अन्योऽन्यं विजिघांसताम् क्रूराणाम् (उभयपक्षीयानाम्) विभीषणम् हिंसाताण्डवम् आरब्धम्।

शत्रुओं की कुटिल नीति के अन्तर्गत किए गए दुष्प्रचार से प्रेरित क्रूर लोग परस्पर मारकाट मचा रहे थे। उनका भयंकर हिंसा ताण्डव आरम्भ हो गया।

अभ्यघ्नन् यवना हिन्दून् प्रत्यघ्नन् यवनाँश्च ते।
इति हत्यामहात्रासः प्रासरत् सर्वतोदिशम्॥40॥

अन्वयः – यवनाः हिन्दून् अभ्यघ्नन् ते च यवनान् प्रत्यघ्नन्। इति हत्यामहात्रासः सर्वतोदिशम् प्रासरत्।

मुस्लमान हिन्दुओं को मारने लगे और हिन्दू भी बदले में उन्हें मारने लगे। इस प्रकार हत्या का महाभय चारों ओर फैल गया।

प्रपलायितुकामानां हिन्दूनां प्राणसङ्कटे।
परितः प्रतिरुद्धानां त्राणमासीत् सुदुष्करम्॥41॥

अन्वयः – परितः प्रतिरुद्धानाम् प्राणसङ्कटे प्रपलायितुकामानाम्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हिन्दूनां त्राणम् सुदुष्करम् आसीत्।

उस उन्माद से उत्पन्न युद्ध में चारों ओर से घिरे और प्राणसंकट आ पड़ने पर, बचकर निकल भागना चाहने वाले हिन्दूजनों को प्राण बचाना मुश्किल हो गया।

शालग्रामोऽपि वा प्राणरक्षायै सखिभिः सह।
मन्दिरान्मन्दिरं गुप्तं भ्रमन् दिष्ट्या सुरक्षितः॥42॥

अन्वयः – शालग्रामः अपि प्राणरक्षायै सखिभिः सह मन्दिरात् मन्दिरम् गुप्तम् भ्रमन् दिष्ट्या सुरक्षितः।

पण्डित शालग्राम भी प्राणों की रक्षा के लिए साथियों के समेत गुप्त रूप से मन्दिर से मन्दिर घूमते रहे और सौभाग्य से बच निकले।

यत्रान्तिकेऽन्तकातङ्कः श्वासे नाऽश्वस्तता तथा।
ततो घोरविपत्पाताद् रक्षितो गृहमागमत्॥43॥

अन्वयः – यत्र अन्तिके अन्तकातङ्कः तथा श्वासे (अपि)आश्वस्तता न (आसीत्) ततः घोरविपत्पातात् रक्षितः गृहम् आगमत्।

जहां काल का आतङ्क बिल्कुल सामने था और अगला श्वास ले सकने का भी विश्वास नहीं था, ऐसी उस घोर विपत्ति पड़ने से भी वह किसी तरह बच कर सीधे अपने घर आ गए।

वृत्तिहानिभवं क्रूरोन्मादजन्यं च दारुणम् ।
विमृश्य विपदुत्पातं धीरोऽप्यक्लिश्यत द्विधा॥44॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – (सः) धीरः अपि वृत्तिहानिभवम् क्रूरोन्मादजन्यं च दारुणम् विपद्उत्पातम् विमृश्य द्विधा अक्लिश्यत।

यद्यपि वे अत्यन्त धैर्यवान् थे तथापि वृत्ति के छूट जाने, और देश में निर्दयी दुष्टों के पागलपन से उत्पन्न हृदय विदारक विपत्ति आ पड़ने से, दोहरा क्लेश सहन करने को विवश हुए।

सज्जनाः संकटग्रस्ता हृष्टा क्रौर्येण दुर्जनाः।
विचित्रैषा कृता धात्रा विदुषाऽपि विडम्बना ॥45॥

अन्वयः – सज्जनाः क्रौर्येण संकटग्रस्ताः दुर्जनाः (च) हृष्टाः (भवन्ति) विदुषा अपि धात्रा एषा विचित्रा विडम्बना कृता।

जब क्रूरता का ताण्डव होता है तो सज्जनों को संकट का ग्रास होना पड़ता है और दुर्जन बड़े प्रसन्न होते हैं। विधाता ने जानकार होते हुए भी संसार में यह बड़ी विचित्र विडम्बना बनाई है।

धर्मोन्नतिप्रियैः श्रद्धावद्भिः सद्भिः स्थले स्थले।
अभूवन् देववाग्विद्यालयाः सञ्चालितास्तदा ॥46॥

अन्वयः – तदा धर्मोन्नतिप्रियैः श्रद्धावद्भिः सद्भिः स्थले स्थले देववाग्विद्यालयाः सञ्चालिताः अभूवन्।

उस समय प्रदेश में, धर्म की उन्नति चाहने वाले श्रद्धालु सज्जनों के द्वारा स्थान स्थान पर संस्कृत विद्यालय चलाए हुए थे।

वैरल्येन प्रदेशे ते शास्त्रज्ञानां विपश्चिताम्।
अन्वेषणपरा नित्यमतिष्ठन् पुरुषार्थिनः ॥47॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – प्रदेशे शास्त्रज्ञानां विपश्चिताम् वैरल्येन, ते पुरुषार्थिनः नित्यम् (तादृशाम्) अन्वेषणपराः अतिष्ठन्।

परन्तु प्रदेश में उस समय शास्त्रज्ञ विद्वान् विरले ही मिलते थे। इस कारण, वे पुरुषार्थी संस्था संचालक, सदा उन (शालग्राम) जैसों को सदा ढूंढते रहते थे।

तस्य वैदुष्ययशसा दिश आसन्नलङ्कृताः।
तस्मादभीप्सितः सर्वैः स गुणज्ञजनैरभूत्॥48॥

अन्वयः – तस्य वैदुष्ययशसा दिशः अलङ्कृताः आसन्। तस्मात् सः सर्वैः गुणज्ञैः अभीप्सितः अभूत्।

उस समय शालग्राम जी के यश से दिशाएं विभूषित हो गई थीं। इस कारण उन्हें सभी गणुज्ञ अपनी संस्था की उन्नति के लिए चाहते थे।

ऊनासंस्कृतसंस्थाया उपेत्याथ-प्रबन्धकाः।
सादरं साग्रहं चैवाध्यापनायानयन् हि तम्॥49॥

अन्वयः – अथ, ऊना संस्कृतसंस्थायाः प्रबन्धकाः उपेत्य अध्यापनाय सादरम् साग्रहं चैव तम् अनयन्।

उस समय, ऊना की संस्कृत संस्था के प्रबन्धक उनके पास आकर अध्यापन कार्य के लिए उन्हें बड़े आदर और आग्रह से वहां ले गए।

पूर्वाध्युषितसंस्थां स गौरवानुभवाद् गतः।
उद्बुद्धातीतसंस्कारः प्रसन्नहृदयोऽभवत्॥50॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – सः पूर्वाध्युषितसंस्थां गतः उद्बुद्धातीतसंस्कारः गौरवानुभवात् प्रसन्नहृदयः अभवत्।

जिस संस्था में अध्ययन काल में रहे थे उसी में पहुंचकर, पिछली स्मृतियों के संस्कारों के जागने से गौरव की अनुभूति के कारण प्रसन्नता की अनुभूति करने लगे।

नियुक्तो ब्राह्मणसभासंस्कृताध्यापनालये।
अध्यतिष्ठद् गुणोदग्रः प्राचार्यपदमादृतम्॥51॥

अन्वयः – गुणोदग्रः सः, ब्राह्मणसभासंस्कृताध्यापनालये नियुक्तः (सन्) आदृतम् प्राचार्यपदम् अध्यतिष्ठत्।

विद्वत्ता के गुणों से उन्नत व्यक्तित्व से सम्पन्न वे, ब्राह्मणसभा संस्कृत विद्यालय में प्राचार्य के सम्मानित पद पर विराजमान हो गए।

गृहाददूरदेशस्थो ज्ञातपूर्वजनस्थले।
मनोऽनुरूपमासाद्य गुरुकर्माभवत् सुखी॥52॥

अन्वयः – (सः) गृहात् अदूरदेशस्थः ज्ञातपूर्वजनस्थले मनोऽनुरूपम् गुरुकर्म आसाद्य सुखी अभवत्।

अब तो अपने घर के निकटवर्ती स्थान में व्यवस्थित हो गए। वहां पूर्वपरिचित लोगों के बीच मन के अनुकूल गौरवपूर्ण आचार्यत्वप्राप्त कर सन्तोष अनुभव करने लगे।

जन्मभूमौ निवासः स्यात् प्रत्यासत्तिः प्रिया सताम्।
कर्म चित्तानुरूपं वा किमु सौख्यमितः परम्॥53॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः - स्पष्टः।

अपनी जन्मभूमि में निवास सुलभ हो, सज्जनों की प्रीतिकारक निकटता हो और हृदय के अनुकूल अभीष्ट कार्य करने को मिल जाए तो इस से अधिक सुख क्या हो सकता है।

विविधान् शास्त्रविषयान् साशयानाशुगम्यया।
प्रत्यपादयदाञ्जस्यान्मृदुशैल्या विचक्षणः॥54॥

अन्वयः - विचक्षणः (सः) साशयान् विविधन् शास्त्रविषयान् आशुगम्यया मृदुशैल्या आञ्जस्यात् प्रत्यपादयत्।

वे तो वाणी के वैभव से ऐसे सम्पन्न थे कि सभी शास्त्रीय विषयों को, गूढ़ रहस्य सहित, जल्दी ही समझ में आने वाली कोमल शैली के द्वारा आसानी से स्पष्ट कर देते थे।

वाग्मी सरलगम्भीरो मधुरोदारमानसः।
छात्रानाकर्षयामास व्यवहारेण साधुना॥55॥

अन्वयः - वाग्मी सरलगम्भीरः मधुरोदारमानसः (सः) साधुना व्यवहारेण छात्रान् आकर्षयामास।

वाणी के धनी, सरल, गम्भीर, मधुर और उदार हृदय वाले वे बड़े ही सद्व्यवहार से छात्रों को आकर्षित करते थे।

पितृमातृसुहृद्भ्रातृप्रेम विस्मृत्य बालकाः।
ऐकाग्र्यमभजन् अन्तेवासिनोऽस्य गुरोः पुरः॥56॥

अन्वयः - अन्तेवासिनः बालकाः गुरोः अस्य पुरः पितृमातृसुहृद्-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भ्रातृप्रेम विस्मृत्य ऐकाग्र्यम् अभजन्।

शिष्य बालक उस प्रभावशाली गुरु के समक्ष पिता, माता, मित्र, भाई आदि सभी के स्नेह को भूलकर पूर्णतया एकाग्र हो जाते थे।

इत्थमध्यापकत्वस्य पराकाष्ठामधिष्ठितम्।
आदर्शं स्थापयामास सारस्वतमहाव्रती ॥57॥

अन्वयः – इत्थम् सारस्वतमहाव्रती सः अध्यापकत्वस्य पराकाष्ठाम् अधिष्ठितम् आदर्शम् स्थापयामास।

इस प्रकार उस वाग्देवी के महाव्रती ने अध्यापन कला की पराकाष्ठा में पहुंचा हुआ आदर्श विद्वत्समाज के सम्मुख स्थापित किया।

प्रबन्धकुशलो गोविन्दरामाख्योऽथ सज्जनः।
शुचिर्नम्रोऽत्युदारश्च संस्थाहृदयसन्निभः ॥58॥

दुर्दैवात् त्रिदिवं यातो रविरस्ताचलं यथा ।
प्रसृतं हि तदारभ्य तमो विद्यालयान्तरे ॥59॥

अन्वयः – अथ प्रबन्धकुशलः शुचिः नम्रः अति उदारः संस्थाहृदय-सन्निभः च गोविन्दरामाख्यः सज्जनः दुर्दैवात् यथा रविः अस्ताचलम् तथा त्रिदिवम् यातः। ततः आरभ्य विद्यालयान्तरे तमः प्रसृतम्।

इसी बीच एक अप्रिय घटना हो गई। एक संस्था के समर्पित सञ्चालक थे, गोविन्दराम। बड़े प्रबन्धकुशल, शुद्धहृदय, विनम्र, अति उदार, सज्जन। मानो संस्था हृदय ही थे वे दुर्भाग्य से स्वर्ग चले गए। जैसे संस्था का सूर्यअस्त हो गया। उसके बाद विद्यालय में जैसे अंधेरा छा गया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तदाप्रभृति तत्रत्यैरनुदारप्रबन्धकैः।
संस्थोत्पीड़नमारब्धं विद्यागरिमपश्चिमैः ॥60॥

अन्वयः - तदाप्रभृति विद्यागरिमपश्चिमैः तत्रत्यैः अनुदारप्रबन्धकैः संस्थोत्पीडनम् आरब्धम्।

तभी से लेकर वहां के विद्या की गरिमा के प्रतिकूल, अल्पमति, अनुदार, प्रबन्धकों ने संस्था का उत्पीड़न आरम्भ कर दिया।

सा सेवा सार्जुता श्रद्धा सा धर्मोद्धारभावना।
लुप्ताः कार्पण्यकान्तारे सा च सौजन्यदीधितिः ॥61॥

अन्वयः - सा सेवा, सा ऋजुता सा श्रद्धा सा धर्मोद्धारभावना, सा च सौजन्यदीधितिः कार्पण्यकान्तारे लुप्ता।

अब क्या था-वह पहले जैसी सेवा, नम्रता, श्रद्धा तथा धर्म के उद्धार की भावना कृपणता के महारण्य में कहीं विलुप्त हो गई।

परिवाराश्च संस्थाश्च समानपरिणामिनः।
धुर्यौदार्येण नह्यन्ते विकीर्यन्ते तदन्यथा ॥62॥

अन्वयः - परिवाराः च संस्थाः च समानपरिणामिनः (भवन्ति) धुर्यौदार्येण नह्यन्ते तदन्यथा विकीर्यन्ते।

परिवारों और संस्थाओं का परिणाम एक सा होता है जो प्रमुख व्यक्ति के उदार होने से सगंठित रहते हैं तथा उसके विपरीत होने पर बिखर जाते हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अतस्त्यक्त्वा स तां संस्थां गत्वाऽमृतसरःपुरम्।
तत्र कन्यामहाविद्यालयेऽध्यापयदादरात्॥63॥

अन्वयः – अतः स ताम् संस्थाम् त्यक्त्वा अमृतसरःपुरम् गत्वा तत्र आदरात् कन्यामहाविद्यालये अध्यापयत्।

इस कारण से वे उस संस्था को छोड़ कर और अमृतसर नगर जाकर वहां आदरपूर्वक कन्या महाविद्यालय में नियुक्त होकर पढ़ाने लगे।

खगा सख्यालसालं: वा धेनवः सविषं सरः।
सन्तो जहति च स्थानं परीतं कुटिलैर्जनैः॥64॥

अन्वयः – खगाः सख्यालसालम् वा धेनवः सविषम् सरः सन्तः च कुटिलैः जनैः परीतम् स्थानम् जहति।

यह उचित भी है क्योंकि पक्षी सांपों वाले वृक्षों, गायें जहरीले तालाबों तथा सज्जन लोग कुटिल जनों से घिरे हुए स्थान को छोड़ देते हैं।

शास्त्रसेवाऽपि कर्तव्या वर्तितव्यं खलैरपि।
स्वमानोऽपि न हातव्यः कष्टं खलु सतां व्रतम्॥65॥

अन्वयः – स्पष्टः एव।

सज्जनों का नियम भी कितना कष्टप्रद होता है जिसमें शास्त्रों की सेवा भी करनी है, दुष्टों के साथ भी मर्यादापूर्वक रहना है और स्वाभिमान को भी बचाना है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उच्चस्तरीयवृत्त्याऽपि महाविद्यालयीयया।
स्वादर्शप्रतिकूलत्वाद् दोषज्ञो न ह्यतुष्यत॥66॥

अन्वयः – दोषज्ञः (सः) महाविद्यालयीयया उच्चस्तरीयवृत्त्या अपि (तस्याः) स्वादर्शप्रतिकूलत्वात् नहि अतुष्यत।

वे तो दोषज्ञ (विद्वान् थे)। अतः महाविद्यालय की उच्चस्तरीय वृत्ति से भी इसीलिए सन्तुष्ट नहीं हुए क्योंकि वह उनके आदर्शों के प्रतिकूल थी।

सन्ति यद्यपि भूयांसो भूतले तुङ्गपर्वताः।
परं नान्यत्र रमते शिवो गौरीगुरुं बिना॥67॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

यह ठीक भी है क्योंकि यद्यपि पृथ्वी पर अन्य भी बहुत ऊँचे अनेक पर्वत हैं, परन्तु शङ्कर तो गौरी के पिता हिमाचल के बिना कहीं अन्यत्र आनन्दित नहीं होते।

संक्षिप्तशब्दैर्मधुरैः स्फुटार्थैर्मनः
प्रियप्राञ्जलसौम्यशैल्या।
गूढातिगूढं सरलं विधाय व्याख्यातवान्
शिष्यहिताय शास्त्रम्॥68॥

अन्वयः – (सः) मधुरैः स्फुटार्थैः संक्षिप्तशब्दैः मनः प्रियप्राञ्जल-सौम्यशैल्या गूढातिगूढम् शास्त्रम् शिष्याहिताय सरलं विधाय व्याख्यातवान्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वे, मधुर और विस्पष्ट अर्थ से युक्त संक्षिप्त शब्दों द्वारा, तथा हृदय को प्रिय लगने वाली प्रौढ़ और सौम्य शैली से, गम्भीर से गम्भीर शास्त्र तत्त्व को, शिष्य की पात्रता और हित को ध्यान में रखते हुए व्याख्या करके सरल कर देते थे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सप्तमः सर्गः

सर्वत्रोत्कृष्टविद्वत्ताकीर्तिस्तस्योच्चयं गता।
ययासीदीप्सितः सर्वैः शास्त्राध्यापनहेतवे ॥1॥

अन्वयः – तस्य उत्कृष्टविद्वत्ताकीर्तिः सर्वत्र उच्चयं गता (अभूत्), यया शास्त्राध्यापनहेतवे सर्वैः ईप्सितः आसीत्।

अब तो, उनकी श्रेष्ठ विद्वत्ता की कीर्ति सर्वत्र उच्च शिखर पर पहुंच गई थी जिस के कारण उन्हें सभी लोग अपनी संस्थाओं में शास्त्रों का अध्यापन के लिए चाहते थे।

परिश्रमसदाचारतपोविद्यादिभिर्गुणैः।
प्रभावितजनैश्चाभूत् सादरं प्रतिपालितः ॥2॥

अन्वयः – (तस्य) परिश्रमसदाचारतपोविद्यादिभिः गुणैः प्रभावित-जनैः सादरम् च प्रतिपालितः अभूत्।

तथा उनके परिश्रम, सदाचार, तप, विद्या आदि महान् गुणों से प्रभावित लोग उनकी सर्वत्र प्रतीक्षा करते थे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शक्तिसंस्कृतवाग्विद्यालयात्श्रद्धालुसज्जनाः।
सम्प्राप्ता नयनादेवीपीठात् तमनुरोधिनः ॥3॥

अन्वयः – नयनादेवीपीठात् शक्तिसंस्कृतवाग्विद्यालयात् तमनुरोधिनः श्रद्धालुसज्जनाः सम्प्राप्ताः।

नयनादेवी पीठ के शक्ति संस्कृत विद्यालय से, श्रद्धालु संचालक सज्जन विद्यालय में अध्यापन के लिए अनुरोध करने के लिए आ पहुंचे।

आध्यक्ष्ये हरिरामाख्यविद्यागेहाधिकारिणः।
अनयन् ते सविनयं तं संस्थोन्नतिकांक्षिणः ॥4॥

अन्वयः – संस्थोन्नतिकांक्षिणः ते हरिरामाख्यविद्यागेहाधिकारिणः आध्यक्ष्ये तम् सविनयम् अनयन्।

अपनी संस्था की समृद्धि के इच्छुक वे, हरिराम नामक विद्यालय के अधिकारी की अध्यक्षता में, श्री शालग्राम जी को विनयपूर्वक नयनादेवी ले गए।

प्रेमैकप्रवणाः प्राज्ञा विनयेन निवेदिताः।
द्रवन्ति करुणापूर्णाः परस्मै स्वहितत्यजः ॥5॥

अन्वयः – स्पष्टः।

विद्वान् तो प्रेम के अधीन होते हैं। वे करुणापूर्ण हृदय दूसरों के लिए अपना हित छोड़ देते हैं। यदि कोई विनयपूर्वक प्रार्थना करता है तो वे तत्काल द्रवित होकर निवेदन स्वीकार कर लेते हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यौगपद्येन सेवाया वागम्बाजगदम्बयोः।
दुर्लभावसरं लब्ध्वाऽन्वभवन्मोदमद्भुतम्॥6॥

अन्वयः – (सः) यौगपद्येन वागम्बाजगदम्बयोः सेवायाः दुर्लभावसरं लब्ध्वा अद्भुतम् मोदम् अन्वभवत्।

वहां पर एक साथ सभी वाणियों की माता देवभाषा संस्कृत तथा जगदम्बा नयना की सेवा का दुर्लभ अवसर पाकर वे अभूतपूर्व आनन्द का अनुभव करने लगे।

नयनाम्बांघ्रियुगलच्छत्रच्छायामुपाश्रितः।
सानन्दं देववाक्सेवामारभत परिश्रमी॥7॥

अन्वयः – नयनाम्बांघ्रियुगलच्छत्रछायाम् उपाश्रितः परिश्रमी सः सानन्दम् देववाक्सेवाम् आरभत।

परिश्रमी तो थे ही। नयना देवी माता के चरणयुगल की छत्र-छाया में आश्रय पाकर बड़े आनन्द से देववाणी संस्कृत के अध्यापन की सेवा में जुट गए।

देव्याश्च देववाण्याश्च हृद्यो यात्रश्रयो भवेत्।
विदुषे खलु तत्स्थानं स्वर्गादप्यतिरिच्यते॥8॥

अन्वयः – (सः) यत्र देव्याः च देववाण्याः च हृद्यः आश्रयः भवेत् तत् स्थानम् खलु विदुषे स्वर्गात् अपि अतिरिच्यते।

इस में कोई संशय नहीं कि जहां पर जगदम्बा और देववाणी का साथ-साथ हार्दिक आश्रय उपलब्ध हो वह स्थान विद्वान् के लिए

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वर्ग से भी अधिक प्रिय होता है।

देव्यारार्तिक्यरणितो घंटानादः श्रुतिं गतः।
अनाहताभिधं नादमतिशेते मुदान्तरम्॥9॥

अन्वयः - देव्यारार्तिक्यरणितः श्रुतिम् गतः घण्टानादः अनाहता-भिधम् आन्तरम् नादम् मुदा अतिशेते।

मन्दिर में देवी की आरती के समय किया गया घंटानाद सुनाई देने पर, ऐसा आनन्द देता है जिससे ध्यानावस्था में अनुभूत अनाहत नाद भी पीछे रह जाता है।

सोपानारोहणं देव्या मनोज्ञं मन्दिरं प्रति।
स्वर्गारोहणसौभाग्यमवधीरयति ध्रुवम्॥10॥

अन्वयः - देव्याः मनोज्ञं मन्दिरं प्रति सोपानारोहणम् ध्रुवम् स्वर्गा-रोहणसौभाग्यम् अवधीरयति।

नयना देवी के ऊँचे और मनोहर मन्दिर के लिए सीढ़ियों पर चढ़ने का अद्भुत आनन्द ऐसा विलक्षण है जो स्वर्ग को चढ़ने के सौभाग्य को भी निश्चित रूप से फीका कर देता है।

आरार्तिक्यस्तुतिस्तोमाह्लादो देव्यर्चनाविधौ।
सस्वरश्रुतिपाठोत्थादानन्दादतिरिच्यते॥11॥

अन्वयः - देव्यर्चनाविधौ (अनुभूयमानः) आरार्तिक्यस्तुतिस्तोमाह्लादः सस्वरश्रुतिपाठोत्थात् आनन्दात् (अपि) अतिरिच्यते।

देवी के पूजाविधान के समय आरती में जो स्तुतियां गाई जाती

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

है उनका आह्लाद, सस्वर वेदपाठ सुनने से प्राप्त आनन्द से भी अधिक रहता है।

प्रातः सूर्यकरस्पृष्टः कलशो मन्दिरोर्ध्वतः।
त्विषा भक्तिजुषामन्तस्तमोऽपि व्यपसारयेत्॥12॥

अन्वयः – प्रातः मन्दिरोर्ध्वतः सूर्यकरस्पृष्टः कलशः त्विषा भक्तिजुषाम् अन्तस्तमः अपि व्यपसारयेत्।

प्रातःकाल जब मन्दिर के शिखर पर सजे कलश से सूर्य की किरणें स्पर्श करती हैं तो उन से न केवल बाहर का अपितु भक्ति करने वालों का आन्तरिक अन्धकार भी दूर हो जाता है।

देव्या महिषमर्द्दिन्या येन साक्षात्कृताच्छविः।
ततोऽधिकतरं द्रष्टुं किं तस्य त्ववशिष्यते॥13॥

अन्वयः – येन महिषमर्द्दिन्या देव्याः छविः साक्षात् कृता तस्य ततः अधिकतरम् तु द्रष्टुम् किम् अवशिष्यते।

जिसका सौभाग्य महिषमर्दिनी श्रीनयनादेवी की छवि को देखने का हो गया, उसके लिए तो उससे अधिक दर्शनीय और क्या रह जाता है।

श्रद्धालोर्यस्य वासोऽभूद् देवीतीर्थस्थलेऽमले।
तस्य वैकुण्ठवासेऽपि ह्युत्कण्ठा शिथिलायते॥14॥

अन्वयः – यस्य श्रद्धालोः अमले देवीतीर्थस्थले वासः अभूत्, तस्य वैकुण्ठवासे अपि उत्कण्ठा शिथिलायते।

श्रद्धा से भरपूर हृदय वाले जिस भाग्यवान् व्यक्ति का इस

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

निर्मल तीर्थ में निवास हो गया, उसकी वैकुण्ठ वास के प्रति भी उत्कण्ठा शिथिल हो जाती है।

मृद्रजः स्वर्णकणिका मानवा मुनिसन्निभाः।
विद्वांसश्च सुरप्रख्या देवीधामनिवासिनः ॥15॥

अन्वयः - देवीधामनिवासिनः मृद्रजः स्वर्णकणिका, मानवाः मुनिसन्निभाः, विद्वांसः च सुरप्रख्याः सन्ति।

देवी के दिव्य धाम में रहने वाली मिट्टी की धूल भी सोने के कण हैं, मनुष्य भी मुनि समान हैं तथा विद्वान् तो साक्षात् देवाताओं के समान ही हैं।

जगन्मातुः पवित्राङ्के विस्रब्धं निवसन् जनः।
निर्वृत्तो नेहते सौख्यं स्वर्गापवर्गयोरपि॥16॥

अन्वयः - जगन्मातुः पवित्राङ्के विस्रब्धं निर्वृत्तो जनः स्वर्गापवर्गयोः सौख्यम् अपि नेहते।

जगन्माता भगवती की गोदी में निश्चिन्त होकर निवास करने वाला मनुष्य इतना तृप्त हो जाता है कि वह फिर स्वर्ग और मुक्ति के सौख्य को भी नहीं चाहता।

अहो जगन्महाजालतीक्ष्णकण्टकवेधिताः।
छत्रच्छायामधो देव्या लभन्तेऽवर्ण्यविश्रमम्॥17॥

अन्वयः - जगन्महाजालतीक्ष्णकण्टकवेधिताः (जनाः) देव्याः छत्रच्छायाम् अधः अवर्ण्यविश्रमम् लभन्ते इत्यहो।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

संसार के महाजाल में कामनाओं और संकटों के तीखे काँटों से घायल मनुष्य, जगदम्बा की छत्रछाया में आकर अवर्णनीय विश्राम को पाता है। यह एक सौभाग्यमय आश्चर्य है।

स्तोकेनैव स कालेन गुणमण्डलमण्डितः।
महाविद्यालयोत्कर्षं वर्द्धयामास पण्डितः॥18॥

अन्वयः – गुणमण्डलमण्डितः सः पण्डितः स्तोकेन एव कालेन महाविद्यालयोत्कर्षम् वर्द्धयामास।

वे तो गुणों के समुदाय से अलङ्कृत विद्वान् थे। अतः थोड़े ही समय में उनके कारण महाविद्यालय की महिमा में वृद्धि हो गई।

उत्कृष्टाध्यापनात् साधोर्व्यवहारात् परिश्रमात्।
संस्थापर्यायतां प्राप्तः प्रभावाच्च विसृत्वरात्॥19॥

अन्वयः – (सः) उत्कृष्टाध्यापनात् साधोः व्यवहारात्, परिश्रमात् विसृत्वरात् प्रभावात् च संस्थापर्यायताम् प्राप्तः।

वे अब, अपनी श्रेष्ठ अध्यापनकला, सज्जनता वाले व्यवहार तथा चारों और फैलते प्रभाव के कारण एक तरह से उस संस्था के पर्याय ही बन गए थे।

प्रायशो विदुषां कीर्तिर्बन्धनायापि जायते।
जटिलेऽस्मिन् जगज्जाले वने सारङ्गश्रृङ्गवत्॥20॥

अन्वयः – अस्मिन् जटिले जगज्जाले प्रायशः विदुषाम् कीर्तिः वने सारङ्गश्रृङ्गवत् बन्धनाय अपि जायते।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इस जगत् के गहन जाल में, प्रायः विद्वानों की कीर्ति, जंगल में फंस जाने वालें हिरण के सींगों की तरह, बन्धन का कारण भी बन जाती है।

परिवर्तिनि संसारे क्षणभङ्गुरजीवने।
कः संयुज्याद् वियुज्यात् को वेति को वेत्ति दभ्रवित्॥21॥

अन्वयः – परिवर्तिनि संसारे क्षणभङ्गुरजीवने (च), कः संयुज्यात् कः वा वियुज्यात् इति कः दभ्रवित् वेत्ति।

यह संसार परिवर्तनशील है और जीवन भी क्षणभर में नष्ट होने वाला है। ऐसे में यहां कौन मिल जाए और कौन बिछुड़ जाए, इस बात को, अल्पज्ञ प्राणियों में ऐसा कौन है जो जानने में समर्थ है।

प्रियो वा विप्रियो वा स्यान्निजोवाऽन्योऽथवा जनः।
युक्तो वियुज्यते नूनमिति तथ्यं हि शाश्वतम्॥22॥

अन्वयः – प्रियः वा विप्रियः वा निजः अथवा अन्यः जनः स्यात्, युक्तः नूनम् वियुज्यते, इति हि शाश्वतम् तथ्यम्।

चाहे कोई प्रिय हो, चाहे अप्रिय हो, अपना हो अथवा पराया, जो मिलता है वह अवश्य कभी न कभी बिछुड़ जाता है–यह एक अटल सत्य है।

सार्द्धं ज्येष्ठेन पुत्रेण वसतो नयनालये।
अरुन्तुदाऽभूद् घटना गृहे तस्य तपस्विनः॥23॥

अन्वयः – ज्येष्ठेन पुत्रेण सार्द्धम् नयनालये वसतः तस्य तपस्विनः गृहे अरुन्तुदा घटना अभूत्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अपने ज्येष्ट पुत्र के साथ नयनादेवी में रहते हुए उस तपोमूर्ति विद्वान् के घर पर एक ऐसी दुर्घटना हो गई जिसने उनका प्राणपीड़न कर दिया।

आत्मजान् त्रीन् पालयन्ती गृहकर्मशतैः सह।
गृहिणी सन्निपातोग्रज्वरग्रस्ताऽभवत् सती ॥24॥

अन्वयः – गृहकर्मशतैः सह त्रीन् आत्मजान् पालयन्ती सती गृहिणी, सन्निपातोग्रज्वरग्रस्ता अभवत्।

एक समय घर के सैंकड़ों कार्यों को निभाते हुए तीन पुत्रों को पालती हुई उनकी धर्मपरायणा गृहिणी (भक्ति देवी) अचानक सन्निपात ज्वर से ग्रस्त हो गई।

पितृव्यादिभिरस्निग्धै र्दूरस्थपतिसन्निधौ।
सूचनाऽपि न दत्ताऽभूत् क्वोपचारे सहायता ॥25॥

अन्वयः – अस्निग्धैः पितृव्यादिभिः दूरस्थपतिसन्निधौ (तस्याः रुग्णताविषये) सूचना अपि न दत्ताऽभूत्।

स्नेह से रहित चाचा आदि ज्ञातिजनों ने उनकी बीमारी के विषय में, दूर रहने वाले पति के पास सूचना तक न दी, भला इलाज में सहायता करना तो दूर की बात रही।

यत्किञ्चिदौषधव्याजात् स्वकर्तव्यप्रदर्शिभिः।
उपेक्षिताऽसहाया सा पारवश्यमपद्यत ॥26॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इधर-उधर की कुछ औषधियां देकर, उस बहाने से अपनी कर्तव्यपूर्ति का प्रदर्शन करने वाले उन लोगों ने, उसकी उपेक्षा की। वह असहाय होकर रोग के अधिक हो जाने से परवश हो गई।

यदाऽभून्मरणासन्ना तदा बन्धुविडम्बिभिः।
शालग्रामाय संदेशः प्रहितस्तैरुपेक्षया॥27॥

अन्वयः - यदा (सा) मरणासन्ना अभूत् तदा बन्धुविडम्बिभिः तैः उपेक्षया शालग्रामाय संदेशः प्रहितः अभूत्।

जब वह मरणासन्न स्थिति में हो गई थी तो बन्धुता का दिखावा करने वाले ज्ञातिजनों ने उपेक्षापूर्वक पं० शालग्राम जी को संदेश भेज दिया।

श्रृण्वन्नेव स वैयग्रयात् त्वरया प्रस्थितो गृहम्।
गत्वाऽद्राक्षीत् स्वदयितां परलोकोत्सुकामिव॥28॥

अन्वयः - सः श्रृण्वन् एवं वैयग्रयात् त्वरया गृह्म प्रस्थितः। गत्वा परलोकोत्सुकाम् इव स्वदयिताम् अद्राक्षीत्।

शालग्राम जी, सन्देश को सुनते ही व्याकुल हो गए और अतिशीघ्रता में घर को चल पड़े। वहां पहुँच कर अपनी प्रिय धर्मपत्नी को ऐसी स्थिति में देखा जैसे परलोक गमन के लिए तैयार बैठी हों।

पश्यतस्तस्य करुणं विवशा विवशस्य हा।
प्राणकल्पाऽल्पकालेन भौतिकीं तनुमत्यजत्॥29॥

अन्वयः - विवशस्य करुणं पश्यतः तस्य, विवशा प्राणकल्पा (सा) अल्पकालेन भौतिकीम् तनुम् अत्यजत्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उनके विवशतापूर्वक करुणापूर्ण दृष्टि से देखते-देखते, वह प्राणतुल्य पत्नी विवश होकर थोड़ी देर में उस भौतिक शरीर को छोड़ गईं।

चतुष्पुत्रपिता पत्नीवियुक्तो निःसहायवान्।
विपज्जाले महाघोरे न्यपतद् दुरतिक्रमे॥30॥

अन्वयः - पत्नीवियुक्तः निःसहायवान् चतुष्पुत्रपिता महाघोरे दुरतिक्रमे विपज्जाले न्यपतत्।

धर्मपत्नी के अकालमृत्यु जनित वियोग को सहने के लिए विवश, बेसहारा, चार पुत्र के पालन पोषण के उत्तरदायित्व से बोझिल हुए श्री शालग्राम जी महाघोर, अपार विपत्ति के जाल में पड़ गए।

शोकाश्रुसिक्तो सम्पूर्य क्रियाः स ह्यौर्ध्वदैहिकीः।
गृहिण्या गृहचिन्ताया न्यमज्जद् गहनाम्बुधौ॥31॥

अन्वयः - शोकाश्रुसिक्तः सः गृहिण्याः और्ध्वदैहिकीः क्रियाः सम्पूर्य गृहचिन्तायाः गहनाम्बुधौ न्यमज्जत्।

शोक के आंसुओं से भीगे मुख वाले, उन्होंने प्रिय गृहिणी के समस्त और्ध्वदैहिक कृत्यों को पूरा किया। अब घर और परिवार का कार्य कैसे चलेगा, इस चिन्ता के गहरे सागर में डूब गए।

स्थगितं पुनरुद्धर्तुं गृहकर्मरथं निजाः।
पुनर्विवाहप्रस्तावं चक्रुस्तस्मै हि बान्धवाः॥32॥

अन्वयः - निजाः बान्धवाः स्थगितम् गृहकर्मरथम् पुनः उद्धर्तुम् तस्मै पुनः विवाहप्रस्तावम् हि चक्रुः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गृह के समस्त कार्यकलाप रूपी रथ को स्थगित देखकर, उसका पुनः सञ्चालन के इरादे से उनके बन्धुजनों ने उनके विवाह का प्रस्ताव रखा।

तेषां दृढाग्रहं मूलान्निरस्यन्नवदद् बुधः।
सन्तत्यर्थं विवाहः स्यात् सम्पन्नं तत्प्रयोजनम्॥33॥

अन्वयः – तेषाम् दृढाग्रहम् मूलात् निरस्यन् बुधः अवदत्–विवाहः सन्तत्यर्थम् स्यात् तत् प्रयोजनम् सम्पन्नम्।

उन हितैषी जनों के भारी आग्रह को सिरे से नकारते हुए उस विद्वान् ने कहा कि– विवाह का उद्देश्य तो सन्तति की प्राप्ति होता है। सन्तान होने पर वह प्रयोजन सम्पन्न हो चुका है।

न मामतः पुनर्वक्तुं विवशं कर्तुमर्हथ।
प्रत्युक्तं यन्मया पूर्वं तदेव प्रतिवक्ष्यते॥34॥

अन्वयः – अतः (कारणात्) माम् पुनः वक्तुम् विवशम् कर्तुम् न अर्हथ। मया पूर्वम् यत् प्रत्युक्तम् तत् एव प्रतिवक्ष्यते।

इस कारण, आप लोग मुझे इसके अतिरिक्त और कहने को विवश न करें। मैंने जो कह दिया है वही फिर भी कहा जाएगा, और कुछ नहीं।

शीतातपाभ्यामाकाशो न सरिद्भिरपांपतिः।
विकार्यो नोपलैः शैलो न तितिक्षुः प्रलोभनैः॥35॥

अन्वयः – शीतातपाभ्याम् आकाशः, सरिद्भिः अपांपतिः, उपलैः शैलः प्रलोभनैः तितिक्षुः च न विकार्यः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शीत और घाम से आकाश कभी प्रभावित नहीं होता, अनेकानेक नदियों के निरन्तर प्रवेश से समुद्र कभी मर्यादा नहीं लांघता, कठोर ओलावृष्टि से कभी पर्वत नहीं बिगड़ता, इसी प्रकार संयमी पुरुष कभी भी प्रलोभनों से विचलित नहीं होता।

समीक्ष्य धीरधौरेयं तमुद्वाहपराङ्मुखम्।
न्यवर्तन्त हतोद्योगाश्चिन्तामग्ना अवाङ्मुखाः ॥36॥

अन्वयः – धीरधैरेयम् तम् उद्वाहपराङ्मुखम् समीक्ष्य, (ते बान्धवाः) हतोद्योगाः अवाङ्मुखाः चिन्तामग्नाः न्यवर्तन्त।

उस धैर्यधारियों के अग्रणी विद्वान् को विवाह के प्रति उदासीन देखकर, वे बन्धुजन उसे मनाने में असफल हो जाने के कारण चुप हो गए, तथा सिर झुकाए चिन्ताग्रस्त मुद्रा से लौट गए।

बालकाँश्चतुरो गेहाद् देहे सक्तान् कथञ्चन।
आदाय स दयामूर्तिरयादम्बां दयामयीम्॥37॥

अन्वयः – दयामूर्तिः सः कथञ्चन देहे सक्तान् चतुरः बालकान् आदाय गेहात् दयामयीम् अम्बाम् नयनादेवीम् अयात्।

अब शालग्राम जी दया की साक्षात् मूर्ति हो गए । घर से चले तो किसी तरह चार छोटे पुत्रों को शरीर में चिपकाए हुए दयामयी जगदम्बा नयना के द्वार पहुंचे।

रुद्रानन्दाश्रमात् केचित् तमामन्त्रयितुं जनाः।
वृद्धस्वामिसमादिष्टा ससन्देशा उपागमन्॥38॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – रुद्रानन्दाश्रमात् वृद्धस्वामिसमादिष्टाः केचित् जनाः ससन्देशाः तम् उपागमन्।

बाबा रुद्रानन्द के आश्रम से, वृद्धमहन्त जी की आज्ञा से, उन्हें आश्रम के विद्यालय के सञ्चालनार्थ आमन्त्रित करने के लिए सन्देश लेकर कुछ लोग पहुंच गए।

नम्रः सहृदयः शान्तो निःस्वार्थकरुणाकरः।
सुखाराध्यो भवेद् विद्वान् नित्यमन्यहितव्रतः ॥39॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

जो विनम्र, सहृदय, शान्त, निःस्वार्थी, दयालु तथा सदा अन्यों के कल्याण का व्रती विद्वान् होता है उसे अपने कार्य के लिए मनाना सरल होता है।

स्वभावो मृदुरत्यन्तं संसारेऽस्मिन् विपश्चिताम्।
दीनं प्रार्थयतां चेतों नैव ये भंक्तुमीशते ॥40॥

अन्वयः – अस्मिन् संसारे विपश्चिताम् स्वभावः अत्यन्तम् मृदुः (भवति) ये दीनम् प्रार्थयताम् चेतः भंक्तुम् न ईशते।

इस संसार में वास्तविक विद्वानों का स्वभाव अत्यन्त कोमल होता है। जो दीनभाव से निवदेन करने वालों के हृदय को ठेस नहीं पहुंचा सकते।

तेषामत्याग्रहाकृष्टः सन्तुष्टोऽप्यम्बिकागृहे।
गतवाँस्तत्र सुरगीर्धुरीणोऽध्यापनाय सः ॥41॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – अम्बिकागृहे सन्तुष्टः अपि स सुरगीर्धुरीणः तेषाम् अत्याग्रहाकृष्टः अध्यापनाय तत्र गतवान्।

यद्यपि देवभाषा के अग्रणी वे विद्वान् नयनाम्बा के पावन सदन में सन्तुष्ट होकर रह रहे थे परन्तु बाबा के डेरा से आए उन लोगों के अत्यन्त आग्रह के वशीभूत होकर अध्यापन के लिए वहां चले गए।

अहोऽनवग्रहा धातुर्विधित्सा या विवर्तयेत्।
जीवनं जन्मिनां सद्यो नावमूर्मिरिवोदधेः ॥42॥

अन्वयः – धातुः विधित्सा अनवग्रहा (भवति) या जन्मिनाम् जीवनम् उदधेः ऊर्मिः नावम् इव सद्यः विवर्तयेत् इत्यहो।

विधाता जो करना चाहता है उस पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लग सकता। वह इच्छा तो समुद्र की तरङ्ग जैसे नाव को उलट देती है वैसे ही जन्मधारियों के जीवन को बदल देती है।

द्रव्यस्य विदुषश्चैव समानैव गतिः क्षितौ।
सर्वत्रापेक्षितत्वेन नैकत्रावस्थितिर्द्वयोः ॥43॥

अन्वयः – क्षितौ द्रव्यस्य विदुषश्च समाना एव गतिः (यतः) द्वयोः सर्वत्र अपेक्षितत्वेन एकत्र अवस्थितिः न (भवति)।

इस संसार में, धनमुद्रा और विद्वान् व्यक्ति की गति समान ही होती है क्योंकि दोनों की सर्वत्र आवश्यकता होने से एक जगह स्थिति नहीं होती।

अधीताखिलवेदाङ्गः शास्त्रसिद्धान्तमर्मवित्।
तत्रैव दर्शनाचार्यपरीक्षापारणोद्यतः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सम्पूर्णानन्ददैवीवाग्विश्वविद्यालयादथ।
वाराणस्या स तां कक्षामुत्तीर्याप्नोत् परं यशः ॥44॥

अन्वयः – अथ अधीताखिलवेदाङ्गः शास्त्रसिद्धान्तमर्मवित् सः तत्र एव दर्शनाचार्यपरीक्षापारणोद्यतः (सन्) वाराणस्याः

सम्पूर्णानन्ददैवीवाग्विश्वविद्यालयात् ताम् कक्षाम् उत्तीर्य परं यशः आप्नोत्।

उन्होंने समस्त वेदाङ्गों का अध्ययन कर डाला था और सभी शास्त्रों के मर्म की अभिज्ञता प्राप्त कर ली थी। अब, वहीं रहकर सर्वदर्शनाचार्य परीक्षा उत्तीर्ण करने का विचार किया और बनारस के सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय से उस कक्षा को सहज में उत्तीर्ण करके उस समय बिरले लोगों द्वारा प्राप्य भारी यश पाया।

सर्वशास्त्रामृतस्नाते परीक्षोत्तरणं कियत्।
पारावारमहामत्स्यः क्व नद्यां मन्थरायते॥45॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

समस्त शास्त्रों के अमृत से नहाए व्यक्ति के लिए परीक्षा उत्तीर्ण करना भला कितना कठिन है? जो महामत्स्य समुद्र में तैरता है वह एक नदी में कहां कुण्ठित हो सकता है?

उपाधिं प्राप्य न तथा स प्रतिष्ठामविन्दत।
उपलभ्य यथोपाधिस्तमगाद् हि यशस्विताम्॥46॥

अन्वयः – सः उपाधिम् प्राप्य तथा प्रतिष्ठाम् न अविन्दत यथा तम्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उपलभ्य उपाधिः यशस्वितामू अगात्।

उन्होंने उच्च उपाधि को पाकर उतनी प्रतिष्ठा को नहीं पाया जितनी उन्हें पाकर उपाधि की प्रतिष्ठा हुई।

विख्याते सर्वतो बाबारुद्रानन्दाश्रमेऽपि च।
सुग्रीवानन्दनामानं भाविनं तन्मठाधिपम्॥
स्वयमध्यापितं पूर्वं पुनरध्यापयन् मठे।
वेदान्ताचार्यकक्षां स परिपूर्य तदाग्रहम्॥47॥

अन्वयः – अपि च सर्वतो विख्याते बाबारुद्रानन्दाश्रमे सुग्रीवानन्द-नामानम् भाविनम् तन्मठाधिपम्, पूर्वं स्वयम् अध्यापितम्, तदाग्रहम् परिपूर्य मठे वेदान्ताचार्यकक्षाम् पुनः अध्यापयत्।

सर्वत्र प्रसिद्ध बाबारुद्रानन्द के आश्रम में, पहले पढ़ाए शिष्य सुग्रीवानन्द को, जो भावी आश्रमाधीश थे, उनका आग्रह पूर्ण करके वेदान्ताचार्य कक्षा का कठिन अध्यापन किया।

निष्कामं ज्ञानदानस्य विदुषां पुण्यपद्धतिः।
जगद्गुरुपदं वन्द्यं प्रापयामास भारतम्॥48॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

उन जैसे विद्वानों द्वारा अपनाई गई निष्काम ज्ञान प्रदान करने की पुण्य परम्परा ने ही भारतवर्ष को वन्दनीय विश्वगुरु के पद तक पहुंचाया था।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विद्वद्विहीनसंस्थायाः पश्चात्तापपरा नराः।
उपेता नयनादेव्याः पुनस्तत्र निनीषवः ॥49॥

अन्वयः - विद्वद्विहीनसंस्थाया पश्चात्तापपराः नराः तम् पुनः तत्र निनीषवः नयनादेव्याः उपेताः।

अब नयनादेवी की संस्कृत संस्था वाले लोग, विद्वान् से वंचित होकर पछता रहे थे। वे उन्हें फिर से नयनादेवी ले जाने के लिए वहां से आ पहुंचे।

तेषामतितरामृज्व्या द्रुतः प्रार्थनया पुनः।
व्यलम्बतान्तरे विद्वानुभयोः प्रियसंस्थयोः ॥50॥

अन्वयः - तेषाम् अतितराम् ऋज्व्या प्रार्थनया पुनः द्रुतः (सः) विद्वान् उभयोः प्रियसंस्थयोः अन्तरे व्यलम्बत।

वे नयनादेवी से आए सज्जनों की अति विनम्र प्रार्थना से द्रवित हो गए । परन्तु उन्हें तो दोनों संस्थाऐं प्रिय थीं। अतः उन दोनों के बीच में असमंजस में पड़ गए।

शिष्यं गम्भीरमध्याप्य निर्वृत्तः स विदां वरः।
नावशिष्टं च कर्तव्यं स्वस्तरीयममन्यत ॥51॥

अन्वयः - विदाम् वरः सः, शिष्यम् (श्रीसुग्रीवानन्दम्) गम्भीरम् अध्याप्य निर्वृत्तः (सन्) स्वस्तरीयम् कर्तव्यम् अवशिष्टम् न अमन्यत।

अग्रणी विद्वान् (श्री शालिग्राम) ने शिष्य श्री सुग्रीवानन्द को

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आचार्य कक्षा के गम्भीर वेदान्त विषय को पढ़ाने से निर्वृत्त होकर वहां अपने स्तर के किसी कर्तव्य को शेष न माना।

प्रार्थितो नयनादेवीं पुनः प्रत्यागतस्ततः।
जगदम्बाश्रये हृष्टः सारस्वतमधाद् व्रतम्॥52॥

अन्वयः – ततः प्रार्थितः (सः) पुनः नयनादेवीम् प्रत्यागतः (सन्) जगदम्बाश्रये हृष्टः सारस्वतम् व्रतम् अधात्।

उसके उपरान्त, लोगों की प्रार्थना से पुनः नयनादेवी लौट कर, जगदम्बा के आश्रम में प्रसन्नता पूर्वक ज्ञानवितरण के सरस्वती की सेवा के व्रत को अपना लिया।

मनसा कर्मणा वाचाऽध्यापनैकपरायणः।
अनपेक्ष्य किमप्यन्यत् तत्रास्थात् श्रद्धयान्वितः॥53॥

अन्वयः – (सः) अन्यत् किमपि अनपेक्ष्य श्रद्धया अन्वितः मनसा कर्मणा वाचा अध्यापनैकपरायणः तत्र अस्थात्।

व्यक्तिगत हित की कुछ भी परवाह न करते हुए वे श्रद्धापूर्वक मन, वाणी और कर्म से अध्यापन करते हुए कार्य में लग गए।

जगदम्बासपर्या चेल्लभ्येतानपबाधिता।
तदा परतरं कार्यं नूनं गौणायतेऽखिलम्॥54॥

अन्वयः – चेत् अनपबाधिता जगदम्बासपर्या लभ्येत तदा परतरम् अखिलं कार्यम् नूनम् गौणायते।

यदि उन जैसे सत्कर्मियों को जगदम्बा–वाग्देवी की बाधारहित

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सेवा उपलब्ध हो जाए तो उसके समक्ष दूसरे समस्त कार्यकलाप निश्चित रूप से गौण हो जाते हैं।

न तु लोकाग्रहाकृष्टो नार्थलिप्सापरोऽथ वा।
श्रद्धापरः स तत्रास्थाद् देववाग्जदम्बयोः ॥55॥

अन्वयः – सः न तु लोकाग्रहाकृष्टः अथवा न अर्थलिप्सापरः (परम्) देववाग्जगदम्बयोः श्रद्धापरः तत्र अस्थात्।

वस्तुतः वे वहां पर, न तो लोगों के आग्रह से आकृष्ट होकर, और न ही धन आदि की इच्छा से टिके थे। वे तो देववाणी और जगदम्बा के प्रति अपार श्रद्धा के कारण ही वहां रह रहे थे।

त्रिवर्षानन्तरं सूनोरग्रिमाध्यापनाय सः।
विवशोऽन्यत्र प्रस्थातुं संस्थाध्यक्षं न्यवेदयत् ॥56॥

अन्वयः – सः त्रिवर्षानन्तरम् सूनोः अग्रिमाध्यापनाय अन्यत्र प्रस्थातुम् विवशः (भूत्वा) संस्थाऽध्यक्षम् न्यवेदयत्।

अब, उन्हें तीन वर्ष के बाद अपने पुत्र रमेश को अग्रिम पढ़ाई करवाने के लिए अन्यत्र जाने के लिए विवश होना पड़ा और संस्था के अध्यक्ष को उस आशय का निवेदन करना पड़ा।

तादृशं स तु विद्वांसं संस्थाकीर्तिधुरंधरम्।
शक्नोति स्म पृथक् कर्तुं शास्त्रापारंगतम् कथम् ॥57॥

अन्वयः – सः तु तादृशम् संस्थाकीर्तिधुरंधरम् शास्त्रपारंगतम् विद्वांसम् पृथक् कर्तुम् कथम् शक्नोति स्म।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

परन्तु वह संस्था का अध्यक्ष तो विद्यालय की कीर्ति के धुरन्धर शास्त्रों के पारङ्गत उस जैसे विद्वान् को भला कैसे छोड़ पाता?

तेन सर्वैः सदस्यैश्च प्रार्थितोऽपि मुहुर्मुहुः।
इच्छन्नपि स वैवश्यान्न स्थातुमुद्यतोऽभवत्॥58॥

अन्वयः – तेन सर्वैः सदस्यैः च मुहुर्मुहुः प्रार्थितः अपि सः इच्छन् अपि वैवश्यात् स्थातुम् उद्यतः न अभवत्।

उस अधिकारी और अन्य सभी सदस्यों के द्वारा बार–बार अनुरोध करने पर भी, चाहते हुए भी वे (शालिग्राम जी) विवशता के कारण वहां रहने को तैयार न हुए।

प्रार्थनाभङ्गकोपेन संमूढः स्नेहवानपि।
कटुवाक्यं ततोऽवोचत् सोऽध्यक्षो मर्मपीड़कम्॥59॥

अन्वयः – स्नेहवान् अपि प्रार्थनाभङ्गकोपेन संमूढः सः अध्यक्षः ततः मर्मपीड़कम् कटुवाक्यम् अवोचत्।

यद्यपि वह अध्यक्ष पण्डित जी से बहुत स्नेह करता था परन्तु प्रार्थना के भङ्ग से उत्पन्न कोप से विचलित होकर मन को पीड़ा देने वाले कटुवचन कहने लगा।

अस्तु तद् गम्यतां कामं संस्थायाः कापि न क्षतिः।
नयत्र कुक्कुटो रौति तत्र प्रातर्भवेन्न किम्?॥60॥

अन्वयः – अस्तु, तत् कामम् गम्यताम् संस्थायाः कापि क्षतिः न (भवेत्) यत्र कुक्कुटः न रौति तत्र किम् प्रातः न भवेत्?

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तो ठीक है, अगर जाना ही है तो स्वेच्छा से जाइये । आपके बिना विद्यालय को कोई आंच आने वाली नहीं। भला, जहां मुर्गा बाँग नहीं देता, क्या वहां सुबह होती ही नहीं ?

इतीव विप्रियाक्षेपमाकर्ण्य स च तत्क्षणात्।
त्यक्तुकामोऽभवत् संस्थां स्वतन्त्रा हि मनस्विनः ॥61॥

अन्वयः – सच, इति इव विप्रियाक्षेपम् आकर्ण्य तत्क्षणात् संस्थाम् त्युक्तकामः अभवत्। मनस्विनः हि स्वतन्त्राः भवन्ति।

और फिर तो वे (श्री शालग्राम) इस प्रकार का अप्रिय ताना सुनकर उसी क्षण संस्था को छोड़कर जाने को तैयार हो गए । क्योंकि स्वाभिमानी लोग तो स्वतन्त्र होते हैं।

असंभावितमुत्साहं विभाव्याथ विपश्चितः।
अयुक्तोक्तिविनिर्विण्णः स पश्चात्तापमन्वभूत्॥62॥

अन्वयः – अथ सः विपश्चितः असंभावितम् उत्साहम् विभाव्य अयुक्तोक्तिविनिर्विण्णः पश्चात्तापम् अन्वभूत्।

अब तो, वे अध्यक्ष, विद्वान् के असंभावित उत्साह को देखकर, अपने अनुचित वचन से खिन्न होकर पश्चात्ताप का अनुभव करने लगे।

संस्थाध्यक्षानुरोधं द्राग् विगणय्यासकृत्कृतम्।
प्रत्यावर्तत धीराग्र्या न परावर्त्यनिश्चयाः॥63॥

अन्वयः – (सः) असकृत् कृतम् संस्थाध्यक्षानुरोधम् विगणय्य द्राक् प्रत्यावर्तत। धीराग्र्याः परावर्त्यनिश्चयाः न (भवन्ति)।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वे संस्थाध्यक्ष के बार-बार अनुरोध की उपेक्षा कर के तत्काल वहां से लौट आए। वस्तुतः धीर पुरुषों का निर्णय बदलता नहीं।

धातुरिच्छामिमां मन्ये सर्वश्रेयस्करीं यया।
सौजन्यव्याप्तये विश्वक् सुजनान् भ्रामयेत् स हि॥64॥

अन्वयः - इमाम् सर्वश्रेयस्करीम् धातुः इच्छाम् मन्ये यया सः विश्वक् सौजन्यव्याप्तये सुजनान् भ्रामयेत्।

ऐसा प्रतीत होता है कि यह विधाता की सर्वकल्याणकारिणी इच्छा ही होगी जिस के कारण वह सौजन्य के प्रसार करने के लिए ही सज्ञनों को सर्वत्र घुमाता रहता है।

अपां च सज्ञनानां च स्वभावेऽस्ति समानता।
गतिः सर्वोपकाराय स्थितिर्न खलु तादृशी॥65॥

अन्वयः - अपाम् सज्ञनानां च स्वभावे समानता अस्ति। (येषाम्) गतिः सर्वोपकाराय स्थितिः खलु तादृशी न।

वस्तुतः जल और सज्ञनों के स्वभाव में समानता होती है जिनकी गतिशीलता सभी के उपकार के लिए होती है जब कि स्थिति वैसी नहीं होती।

विनम्रैरनुनीतोऽथ जनैरागत्य भूयशः।
खैरातीरामसंस्थायां नीतो जालन्धरे पुरे॥66॥

अन्वयः - अथ विनम्रैः जनैः आगत्य भूयशः अनुनीतः (सः) जालन्धरे पुरे खैरातीरामसंस्थायाम् नीतः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अब कुछ विनीत लोगों ने आकर बार–बार अनुरोध करके उन्हें जालन्धर नगर की खैरातीराम नामक संस्कृत संस्था में बुला लिया।

औरैण्टियलकालेजो लाहौरात् परिवर्तितः।
योजितोऽभूत् हि पञ्चाम्बुविश्वविद्यालयेन च ॥67॥

अन्वयः – लाहौरात् परिवर्तितः औरैण्टियलकालेजः पञ्चाम्बुविश्व-विद्यालयेन च योजितः अभूत्।

इसी दौरान लाहौर से औरैण्टियल कालेज का परिवर्तन हो गया और उसे पंजाब विश्वविद्यालय से जोड़ दिया गया।

गुरुभिस्तत्र परमेश्वरानन्दैः समर्थितः।
स्वस्थानेऽध्यापकत्वाय स्वनिवृत्तिसमये हि सः ॥68॥

अन्वयः – तत्र सः परमेश्वरानन्दैः गुरुभिः स्वनिवृत्तिसमये स्वस्थाने अध्यापकत्वाय समर्थितः अभूत्।

वहां पर गुरुवर श्री परमेश्वरानन्द जी ने अपनी सेवानिवृत्ति के समय उन्हें अपने स्थान पर अध्यापन के लिए समर्थित किया।

अभूच्चण्डीगढ़पुरे विश्वविद्यालये तथा।
वैदुष्यगुणमर्मज्ञैर्नियुक्तो ह्यधिकारिभिः ॥69॥

अन्वयः – तथा वैदुष्यगुणमर्मज्ञैः अधिकारिभिः चण्डीगढ़पुरे विश्व-विद्यालये हि नियुक्तः अभूत्।

और उन्हें, विद्वत्तागुण के मर्मज्ञ अधिकारियों द्वारा चण्डीगढ़ नगर में, विश्वविद्यालय में शास्त्रों के अध्यापन के लिए नियुक्त किया गया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तत्राचार्यादिकक्षाणां व्यधादध्यापनं बुधः।
विद्यार्णवतलस्वैरावगाहानन्दितान्तरम् ॥70॥

अन्वयः – तत्र (सः) बुधः, आचार्यादिकक्षाणाम् विद्यार्णवतल-स्वैरावगाहानन्दितान्तरम् अध्यापनम् व्यधात्।

वहां पर, उन्होंने आचार्य आदि उच्च कक्षाओं का ऐसा गम्भीर अध्यापन किया जिस से शिष्य गणों के अन्तःकरण, विद्या के समुद्रतल का स्वच्छन्द अवगाहन होने से आनन्दित हो जाते थे।

सामान्यतोऽन्यशास्त्राणां दर्शनानां विशेषतः।
व्यतरद् गहनं ज्ञानं शिष्येभ्यः प्रौढ़पण्डितः ॥71॥

अन्वयः – प्रौढ़पण्डितः सः, सामान्यतः अन्यशास्त्राणाम् विशेषतः दर्शनानाम् गहनम् ज्ञानम् शिष्येभ्यः व्यतरत्।

वे तो सभी विद्याओं के प्रौढ़ विद्वान् थे, अतः उन्होंने सामान्यतया अन्य शास्त्रों का तथा विशेषतः सभी दर्शन प्रस्थानों का गहन ज्ञान शिष्यों को दिया।

एकाग्रनयनो ग्रन्थग्रन्थीर्भिन्दन्नशेषतः।
सरलोदारमधुरभारत्यादरभागभूत् ॥72॥

अन्वयः – एकाग्रनयनः सरलोदारमधुरभारत्या ग्रन्थग्रन्थीः अशेषतः भिन्दन् आदरभाक् अभूत्।

अध्यापन करते हुए एकाग्र नयनों से सरल, मीठी और अतिस्पष्ट वाणी द्वारा ग्रन्थों की जटिल ग्रन्थियों को पूर्णतया खोल-खोल कर समझा देने वाले वे शिष्यों से अत्यन्त आदर पाते थे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

किञ्चिदाकुञ्चिताक्षिभ्यां भुग्नया ग्रीवया मनाक्।
मृदुवाण्या च शास्त्रान्तर्मर्म स प्रत्यपादयत्॥73॥

अन्वयः – सः किञ्चित् आकुञ्चिताक्षिभ्याम्, मनाक्, भुग्नया, ग्रीवया, मृदुवाण्या व शास्त्रान्तर्मर्म प्रत्यपादयत्।

उनकी पढ़ाने की शैली और कला अद्भुत थी। वे कुछ आंखे सङ्कुचित करके, थोड़ी सी गर्दन झुकाकर और अत्यन्त मृदु वाणी के द्वारा शास्त्रों का आभ्यन्तर मर्म उजागर कर देते थे।

यन्न मूले स्थितं तत्त्वं न च टीकासु वा क्वचित्।
बुधबुद्ध्याऽप्यवेद्यं च तदप्याविरभावयत्॥74॥

अन्वयः – यत् तत्त्वं मूले न स्थितम् वा न च क्वचित् टीकासु (लभ्येत) बुध्बुद्ध्या अपि च अवेद्यम् तत् अपि आविरभावयत्।

सूक्ष्मज्ञता ऐसी थी कि जो अतिगूढ़ आशय तत्त्व न तो मूल में स्पष्ट होता और न कहीं टीका आदियों में मिलता तथा बड़े-बड़े विद्वानों की बुद्धि भी जिसे जान नहीं पाती थी, उसे भी अभिव्यक्त कर देते थे।

न्यायवैशेषिकद्वय्या दृढ़तर्कोत्कराढ्यया।
प्रपुष्टः प्रौढ़या शैल्या न्यगृह्णात् प्रतिवादिनः॥75॥

अन्वयः – न्यायवैशेषिकद्वय्या दृढ़तर्कोत्कराढ्यया प्रौढ़या शैल्या प्रपुष्टः प्रतिवादिनः न्यगृह्णात्।

शास्त्रार्थ कला में तो अतीव कुशल थे। न्याय और वैशेषिक दर्शन युगल की पक्के तर्कों के अम्बार से समृद्ध प्रौढ़ शैली से परिपुष्ट थे और प्रतिपक्षी का पूर्ण निग्रह कर देते थे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शास्त्रसूक्ष्मातिसूक्ष्मार्थं व्याचक्षाणं पुरःस्थिताः।
विद्वांसोऽपि तमालोक्याभवन् विस्मितमानसाः॥76॥

अन्वयः - शास्त्रासूक्ष्मातिसूक्ष्मार्थम् व्याचक्षाणम् तम् आलोक्य पुरःस्थिताः विद्वांसः अपि विस्मितमानसाः अभवन्।

शास्त्रों के अति सूक्ष्म अर्थ को भी सहज में खोल कर स्पष्ट करते हुए उन्हें देखकर विद्वानों के मन भी चकित हो जाते थे।

सूक्ष्मज्ञता शास्त्रमतान्तराणां
विचारसञ्चारकलाऽतुला च।
साधुस्वभावश्च गुणज्ञवर्गे परां
प्रतिष्ठामनयन् तमाप्तम्॥77॥

अन्वयः - शास्त्रमतान्तराणाम् सूक्ष्मज्ञता, अतुला विचारसञ्चार-कला, साधुस्वभावः च आप्तम् तम् गुणज्ञवर्गे पराम् प्रतिष्ठाम् अनयन्।

न केवल शास्त्रों, अपितु उनसे मतान्तरों की भी सूक्ष्म पकड़, विचारों को पहुंचाने की अनुपम कला तथा अत्यन्त साधु स्वभाव इत्यादि विशेषताओं के कारण गुणज्ञ समाज में उनकी अत्यधिक प्रतिष्ठा हुई।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अष्टमः सर्गः

विश्वविद्यालये वृत्तिं स्वानुरूपामवस्थितः।
यावन्निश्चिन्ततां प्राप्तस्तदाऽन्यद् वृत्तमापतत्॥1॥

अन्वयः – विश्वविद्यालये स्वानुरूपाम् वृत्तिम् अवस्थितः यावत् निश्चिन्ततां प्राप्तः तदा अन्यद् वृत्तम् आपतत्।

विश्वविद्यालय में अपनी योग्यता के अनुरूप वृत्ति पर स्थित होकर, जब तक निश्चिन्त हो पाए थे कि एक दूसरा प्रसङ्ग आ पड़ा।

हिमाचलप्रदेशस्य शिक्षानिर्देशकः सुधीः।
कदाचित् कार्यतः प्राप्तो मिलितस्तं च विद्वरम्॥2॥

अन्वय :– कदाचित् हिमाचल प्रदेशस्य सुधीः शिक्षानिर्देशकः कार्यतः (तत्र) प्राप्तः तम् विद्वरम् च मिलितः।

कदाचित् हिमाचल प्रदेश के सर्वकारीय शिक्षा विभाग के विचार-शील निर्देशक किसी कार्यवश चण्डीगढ़ आए और विद्वानों में अग्रणी उन पण्डित जी से उनकी भेंट हो गई।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विभाव्य प्रौढ़विद्वांसं देववागुन्नतिक्षमम्।
तं हिमाचलमागत्याध्यापनाय न्यवेदयत्॥3॥

अन्वयः – तम् प्रौढ़विद्वांसम् देववागुन्नतिक्षमम् विभाव्य हिमाचलम् आगत्य अध्यापनाय न्यवेदयत्।

शिक्षा निर्देशक ने उन्हें प्रौढ़ विद्वान् तथा देववाणी संस्कृत की उन्नति में समर्थ जानकर, हिमाचल प्रदेश में आकर अध्यापन के लिए अनुरोध किया।

विश्वविद्यालये वृत्तिः प्रकामं गौरवावहा।
संस्कृतस्य परं सेवा संभवेदधिका गिरौ॥4॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

वह कहने लगा– यद्यपि विश्वविद्यालय में सेवा करना गौरव की बात है परन्तु संस्कृत की अधिक सेवा तो हिमाचल में ही हो पाएगी।

वैदुष्यात् स्वप्रदेशस्थाः संस्कृताध्ययनार्थिनः।
प्राप्नुयुर्लाभमधिकं श्रेयो गुरुतरं ततः॥5॥

अन्वयः – (भवतः) वैदुष्यात् स्वप्रदेशस्थाः संस्कृताध्ययनार्थिनः अधिकम् लाभम् प्राप्नुयुः ततः गुरुतरम् श्रेयः (भवेत्)।

आपकी विद्वत्ता से आपके अपने प्रदेश में स्थित संस्कृत के विद्यार्थी गण अध्कि लाभ प्राप्त करेंगे। जिससे भारी कल्याण होगा।

अभ्यर्हिततरार्थाय तात्कालिकहितक्षतिः।
न येन गणिता तेन परमार्थः समर्थ्यते॥6॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – येन अभ्यर्हिततरार्थाय तात्कालिकहितक्षतिः न गणिता, तेन परमार्थः समर्थ्यते।

जिसने अधिक प्रशस्त सर्वहित के कार्य के लिए, अपने तात्कालिक हित में आंच आने पर भी उसकी परवाह नहीं की, वही पारमार्थिक लाभ पाता है।

आर्थिकी या भवेद् हानिः सेवयाऽवरया गिरौ।
तत्र वेतनवृद्ध्या सा कृतया पूरयिष्यते॥7॥

अन्वयः – (अपिच) गिरौ अवरया सेवया या आर्थिकी हानिः भवेत्, सा तत्र वेतनवृद्ध्या कृतया पूरयिष्यते।

और फिर, हिमाचल में विश्वविद्यालय की अपेक्षा कुछ छोटी सेवा से जो थोड़ी बहुत आर्थिक कमी रहेगी, वह विशेष वेतन वृद्धि देकर पूरी कर दी जाएगी।

इतीवाकर्षकैस्तर्कैः प्रस्तुतैरधिकारिणा।
विश्वविद्यालयमपि त्यक्तवान् स कृताग्रहः॥8॥

अन्वयः – इति इव, अधिकारिणा प्रस्तुतैः आकर्षकैः तर्कैः प्रस्तुतैः कृताग्रहः सः विश्वविद्यालयम् अपि त्यक्तवान्।

उस शिक्षानिर्देशक द्वारा इस प्रकार के आकर्षक तर्क प्रस्तुत करके आग्रह करने पर, उन्होंने विश्वविद्यालय को भी छोड़ दिया और हिमाचल की ओर प्रस्थान किया।

तारिणीसंस्कृतमहाविद्यालयमनुत्तमम्।
प्राविशित् प्रथितं प्राज्ञो नियुक्तिं प्राप्य सोलने॥9॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – अथ) प्राज्ञः (सः) सोलने नियुक्तिं प्राप्य प्रथितम् अनुत्तमम् तारिणीसंस्कृतमहाविद्यालयम् प्राविशत्।

तथा, सोलन में नियुक्ति को पाकर उस विद्वान् ने प्रदेश में विख्यात श्रेष्ठ श्री तारिणी संस्कृत महाविद्यालय में प्रवेश कर कार्यभार सम्भाल लिया।

श्रीदुर्गासिंहराज्ञा यो धर्मप्राणेन वर्द्धितः।
विदुषां साधकानां वाधिष्ठानं च सतामभूत्॥10॥

अन्वयः – यः (विद्यालयः) धर्मप्राणेन श्रीदुर्गासिंहराज्ञा वर्द्धितः विदुषाम् साधकानाम् सताम् वा अधिष्ठानम् च अभूत्।

जो विद्यालय सोलन के धर्मप्राण राजा श्री दुर्गासिंह के द्वारा आगे बढ़ाया तथा विद्वानों, साधकों सज्ज्नों का ठिकाना होता था।

यत्र शास्त्रार्थगोष्ठीषु प्रौढ़पण्डितमण्डलैः।
प्रीयमाणा गिरां देवी स्मेरास्यैव व्यराजत॥11॥

अन्वयः – यत्र शास्त्रार्थगोष्ठीषु प्रौढ़पण्डितमण्डलैः प्रीयमाणा इव गिरां देवी स्मेरास्या इव व्यराजत।

जिस विद्यालय में, शास्त्रों के प्रौढ़ पण्डित मण्डलों के द्वारा, मानों प्रसन्न की जाती हुई वाणी की देवी, मुस्कराते हुए मुखमण्डल वाली सी, अत्यन्त शोभायमान होकर विराजती थी।

राक्षसेभ्य इव त्रातुं प्रपन्नजनतां सदा।
तीक्ष्णं शूलं समुद्यम्य शूलिनी यत्र राजते॥12॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः - यत्र, राक्षसेभ्यः प्रपन्नजनताम् त्रातुम् इव सदा तीक्ष्णम् शूलम् समुद्यम्य शूलिनी राज़ते।

जिस विद्या के सुन्दर मन्दिर में, मानों श्रद्धा से शरणागत जनता की, राक्षसों से रक्षा करने के लिए शूलिनी भगवती त्रिशूल को हाथों में उठाकर विराजती है।

यत्र संस्कृतसंस्थायाः समृद्धायाश्च सर्वथा।
देशे षोडशसंस्थासु श्रेष्ठासु गणनाऽभवत्॥13॥

अन्वयः - यत्र, सर्वथा समृद्धायाः संस्कृसंस्थायाः देशे श्रेष्ठासु षोडशसंस्थासु गणना अभवत्।

जहां पर संस्कृत संस्था, सब प्रकार से इतनी समृद्ध रही कि देश में सर्वश्रेष्ठ सोलह संस्थाओं में गिनी जाती थी।

एकादशसमास्तत्र प्राध्यापकपदस्थितः।
कक्षा आचार्यपर्यन्ता अध्यापयदमन्थरः॥14॥

अन्वयः - सः तत्र एकादशसमाः प्राध्यापकपदस्थितः अमन्थरः आचार्यपर्यन्ताः कक्षाः अध्यापयत्।

वे भी, उस संस्था में ग्यारह वर्षों तक रहे और बड़े मनोयोग से आचार्य पर्यन्त संस्कृत कक्षाओं को पढ़ाते रहे।

न केवलमसंख्यातान् शिष्यानध्यापयच्छ्रमात्।
विद्वज्जनानां शास्त्रान्तर्गूढग्रन्थिभिदप्यभूत्॥15॥

अन्वयः - न केवलम् असंख्यातान् शिष्यान् श्रमात् अध्यापयत्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विद्वज्जनानां शास्त्रान्तर्गूढग्रन्थिभित् अपि अभूत्।

वे उस संस्था में, न केवल असंख्य शिष्यों को ही पढ़ाते रहे अपितु, विद्वान्जनों को भी शास्त्रों के बीच जहां कहीं गूढ़ ग्रंथि फँस जाती थी उसको खोलने का काम भी भली–भान्ति कर देते थे।

अपि शास्त्रीयविषयव्यूहजिज्ञासवोऽस्य वा।
शङ्कापङ्कापनोदार्थं दूराद् दूरादयुः पुरः॥16॥

अन्वयः – वा, शास्त्रीयविषयव्यूहजिज्ञासवः अपि शङ्कापङ्का-पनोदार्थम् दूरात् दूरात् अस्य पुरः अयुः।

तथा इनके पास अनेक शास्त्रीय कठिन विषयों पर समाधान की जिज्ञासा के लिए तथा शङ्काओं का पङ्क हटाने के लिए दूर–दूर से आते रहे।

विद्वद्गोष्ठीशताहूतो विषयान् जटिलानपि।
सद्यो विशदयामास सरहस्यप्रकाशनम्॥17॥

अन्वयः – विद्वद्गोष्ठीशताहूतः जटिलान् विषयान् अपि सद्यः सरहस्यप्रकाशनम् विशदयामास।

उन्हें सैंकड़ों विद्वत् सभाओं में आमन्त्रित किया जाता था और वे वहां जटिल से जटिल विषयों को रहस्य प्रकाशन सहित तत्काल विस्तार से समझा देते थे।

स्वाध्यायं पाठनं गार्हं धर्मं प्रवचनं तथा।
विलक्षणोद्यमद्वारा स धीरो निरवाहयत्॥18॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – स्पष्टः।

वे बड़ी धीरता पूर्वक और विलक्षण उद्यम के द्वारा स्वाध्याय, अध्यापन, गृहधर्म तथा धार्मिक प्रवचन आदि सब कुछ निभाते थे।

देवर्षिपितृसङ्घानामुपासामीश्वरस्य च।
अप्रमत्तः स यथाशास्त्रमशेषां नित्यमाचरत्॥19॥

अन्वयः – अप्रमत्तः सः, देवर्षिपितृसङ्घाना ईश्वरस्य च अशेषाम् उपासाम् यथाशास्त्रम् नित्यम् आचरत्।

प्रमाद तो उनके आस-पास भी नहीं फटकता था। अतः बड़ी सावधानी से, शास्त्रविधि का पालन करते हुए, देवों, ऋषियों, पितृगणों की सम्पूर्ण उपासना नित्य करते थे।

अद्वितीयसहायः स चतुरोऽपालयत् सुतान् ।
व्यवहारोच्चसंस्कारश्रेष्ठशिक्षाप्रदानतः॥20॥

अन्वयः – अद्वितीयसहायः सः, व्यवहारोच्चसंस्कारश्रेष्ठशिक्षा-प्रदानतः चतुरः सुतान् अपालयत्।

घर में कोई दूसरा सहायक तो था नहीं। अतः अकेले ही चार पुत्रों को, व्यवहार ज्ञान, उच्च संस्कार तथा श्रेष्ठ शिक्षा आदि प्रदान करके भली-भांति पालन कर पितृदायित्व का सम्पर्णू भार वहन करते थे।

न हृष्टोऽभ्युदयेऽत्यर्थं न दूनो वापि चापदि।
साम्येनागमयत् सर्वं जीवनं सिद्धसंयमः॥21॥

अन्वयः – सिद्धसंयमः सः, अभ्युदये न हृष्टः न च आपदि अत्यर्थम्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दूनो वा, सर्वम् जीवनम् साम्येन अगमयत्।

जीवन के रहस्य को सूक्ष्मता से जान कर वे न तो अभ्युदय होने पर अधिक हर्षित होते, और न ही विपत्ति आने पर दुःखी होते। फलतः संयम को सिद्ध करके सम्पूर्ण जीवन को समानता पूर्वक बिताने लगे।

वैदुष्यामर्शिणोऽसाध्वाचरतोऽप्यविमर्शिणः।
मन्दस्मितेनाभिनन्दन् प्रशंसाविवशान् व्यधात्॥22॥

अन्वयः – (सः तस्य) वैदुष्यामर्शिणः, अविमर्शिणःअसाधु आचरतः अपि, मन्दस्मितेन अभिनन्दन् प्रशंसाविवशान् व्यधात्।

संसार में तरह-तरह के लोग सम्पर्क में आते हैं। अतः यदि कोई उनकी अगाध विद्वत्ता के प्रति असहनशील होकर, बिना विचारे उनके प्रति अनुपयुक्त व्यवहार भी करता, तो भी अपनी स्वाभाविक मन्द-मन्द मुस्कराहट मात्र से उसे प्रशंसा करने के लिए विवश कर देते थे।

नैरन्तर्येण शास्त्राणां स्वाध्यायेन तलस्पृशा।
परिपक्वावबोधत्वादभूत् सूक्ष्मातिसूक्ष्मवित्॥23॥

अन्वयः – शास्त्राणाम् नैरन्तर्येण तलस्पृशा स्वाध्यायेन परिपक्वावबोधत्वात् (सः) सूक्ष्मातिसूक्ष्मवित् अभूत्।

सभी शास्त्रों के निरन्तर तलस्पर्शी स्वाध्याय के कारण उनका ज्ञान पूर्णतया परिपक्व हो गया था जिससे वे अत्यन्त सूक्ष्मा थे।

अतो व्याकरणाचार्यपरीक्षां कठिनां तदा।
प्रथमस्थानमासाद्योत्तीर्णवाननतिश्रमात्॥24॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – अतः अनतिश्रमात् तदा कठिनां व्याकरणाचार्यपरीक्षाम् प्रथमस्थानमासाद्य उत्तीर्णवान्।

इस कारण, उन दिनों अत्यन्त कठिन व्याकरणाचार्य परीक्षा भी विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त करके उन्होंने सहज में उत्तीर्ण की।

तद्धि शिष्यहितायाभूत् कृतिनस्तु कियच्छ्रिये।
सर्वथैव परार्थाय पुरुषार्थो महात्मनाम्॥25॥

अन्वयः – तत् हि शिष्यहिताय अभूत् कृतिनः तस्य तु कियत् श्रिये? महात्मनाम् पुरुषार्थः सर्वथा परार्थाय एव (भवति)।

उनका वह परीक्षा उत्तीर्ण करना भी (विषय सम्बन्धी विपुल ज्ञान से सम्पन्न होने से) शिष्यों का हित कारक ही हुआ । वे तो, यूं भी उच्च कोटि के विद्वान थे। वस्तुतः महान् पुरुषों का पुरुषार्थ पूर्णतया औरों के हित के लिए होता है।

स्वप्रियं गूढविषयं न्यायवैशेषिकाभिधम्।
अवगाह्याणुशस्तस्मिन् अधिकारमवाप्तवान्॥26॥

अन्वयः – (सः) स्वप्रियम् न्यायवैशेषिकाभिधम् गूढ़विषयम् अणुशः अवगाह्य तस्मिन् अधिकारम् अवाप्तवान्।

इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने सर्वप्रिय विषय न्यायवैशेषिक दर्शन का पूरा–पूरा अवगाहन कर उसमें विलक्षण अधिकार प्राप्त किया।

ततस्तद्विषयां दत्वा परीक्षां विपुलश्रमात्।
न्यावैशेषिकाचार्यप्रशस्तपदमाप्तवान्॥27॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – ततः विपुलश्रमात् तद्विषयां परीक्षां दत्वा (सः) न्याय-वैशेषिकाचार्यप्रशस्तपदम् आप्तवान्।

तदुपरान्त उन्होंने उन गम्भीर दर्शनों के स्वाध्याय में प्रचुर श्रम किया और कठिन परीक्षा देकर सफलता पूर्वक न्यायवैशेषिक आचार्य की प्रशस्त उपाधि प्राप्त की।

प्राज्ञमर्मज्ञभूपालाश्रितपण्डितमण्डलात्।
सोलने पृथगेवाभाद् ऋक्षराशेः शशीव सः ॥28॥

अन्वयः – सः सोलने प्राज्ञमर्मज्ञभूपालाश्रितपण्डितमण्डलात् ऋक्ष-राशेः शशी इव पृथक् एव अभात्।

यद्यपि सोलन संस्कृत विद्यालय सरकार के नियन्त्राण में आ गया था, पर विद्वानों के मर्मज्ञ वहां के राजा का आश्रय सभी पण्डितों को मिलता रहता । उस पण्डितमण्डल में, वे, ऐसे अलग शोभायमान होते थे जैसे आकाश में तारों के मण्डल में चन्द्रमा।

परं परमनम्रेण स्वभावेनातिचारुणा।
उपालभत सर्वेषां विदुषां हार्दिकादरम्॥29॥

अन्वयः – परम् परमनम्रेण अतिचारुणा स्वभावेन सर्वेषाम् विदुषाम् हार्दिकादरम् उपालभत।

परन्तु उनका स्वभाव अति विनम्र और सुन्दर था इसलिए वे सभी विद्वानों का हार्दिक आदर पाते थे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पुरतस्तस्य सर्वेषां विशिष्टविदुषो विदाम्।
उपस्थापयतां पक्षं समकुच्यत वैदुषी ॥30॥

अन्वयः – विशिष्टविदुषः तस्य पुरतः पक्षम् उपस्थापयताम् सर्वेषाम् विदुषाम् वैदुषी समकुच्यत।

वे सभी शास्त्रीय विषयों के विशिष्ट विद्वान् थे। उनके सामने शास्त्रों का कोई भी पक्ष उपस्थित करने वाले विद्वानों की विद्वत्ता सङ्कुचित हो जाती थी।

तेन येऽध्यापिताः शिष्या विचक्षणजनोचितम्।
प्राप्नुवन् तेऽपि सम्मानं समाजे व्यपदिश्य तम् ॥31॥

अन्वयः – तेन ये शिष्याः अध्यापिताः ते अपि तम् व्यपदिश्य समाजे विचक्षणजनोतिचम् सम्मानम् प्राप्नुवन्।

समाज में विद्वत्ता के कारण उनका इतना प्रभाव था कि–उनके पढ़ाए शिष्य भी उन की परम्परा का होने से श्रेष्ठ विद्वानों जैसा सम्मान पाते थे।

दीर्घकालमवस्थानात् संस्थया सोलनेन च।
अविनाभावसम्बन्धं प्राप्तवानिव हार्दिकम् ॥32॥

अन्वयः – दीर्घकालम् अवस्थानात् (सः) संस्थया सोलनेन च हार्दिकम् अविनाभावसम्बन्धम् इव प्राप्तवान्।

सोलन में लम्बे समय तक रहने के कारण संस्कृत महाविद्यालय और सोलन से उनका ऐसा सम्बन्ध जुड़ गया था कि वे उनसे अविभाज्य से प्रतीत होते थे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सर्वकारीयसेवायां वैवश्यमिदमार्तिदम्।
पारवश्याद् यदेकत्र निवासो नैव लभ्यते ॥33॥

अन्वयः – सर्वकारीयसेवायाम् इदम् आर्तिदम् वैवश्यम् (भवति) यत् पारवश्यात् एकत्र निवासः नैव लभ्यते।

राजकीय सेवावृत्ति में यह एक कष्टदायक विवशता है कि एक जगह निवास नहीं हो पाता, यह अपने वश में नहीं होता।

सोलनात् शिमलास्थानं शास्तृभिः परिवर्तितः।
श्रीनेहरुमहाविद्यालयेऽध्यापपितुं बुधः ॥34॥

अन्वयः – सः बुधः, शास्तृभिः श्रीनेहरूमहाविद्यालये अध्यापयितुम् सोलनात् शिमलास्थानम् परिवर्तितः।

उस विद्वान् को, आवश्यकता पड़ने पर अधिकारियों ने शिमला के श्री नेहरू संस्कृत महाविद्यालय में पढ़ाने के लिए सोलन से वहां स्थानान्तरित कर दिया।

राजधानीमपि प्राप्तोऽनेकसौविध्यसंभृताम्।
अमनस्क इव व्यस्तं कार्यभारमथावहत् ॥35॥

अन्वयः – अथ सः, अनेकसौविध्यसंकुलाम् राजधनीम् प्राप्तः अपि अमनस्कः इव व्यस्तं कार्यभारम् अवहत्।

और फिर उन्होंने अनेक सुविधाओं से सम्पन्न राजधानी पहुंच कर भी अनमने से भाव द्वारा वहां का व्यस्त कार्यभार ग्रहण कर लिया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तत्रत्यविदुषां सद्योऽतिस्नेहादरपात्रताम्।
अगच्छत् क्व सतां सद्भिः सामञ्जस्यं हि दुर्लभम्॥36॥

अन्वयः – सः तत्रात्यविदुषाम् सद्यः अतिस्नेहादरपात्रताम् अगच्छत्। सताम् सद्भिः सामञ्जस्यम् क्व हि दुर्लभम्।

वे वहां पर भी विद्वानों के अत्यन्त स्नेह और आदर के पात्र बन गए। यह सच ही है कि सज्जनों का सज्जनों से सामञ्जस्य कहां दुर्लभ होता है?

विदुषां सौहृदं यत्रच्छात्राणां पात्रता तथा।
स्वल्पीयस्तत्र काठिन्यं न हि कष्टाय कल्पते॥37॥

अन्वयः – यत्र विदुषाम् सौहृदम् तथा छात्राणां पात्रता (भवेत्) तत्र स्वल्पीयः काठिन्यम् कष्टाय न हि कल्पते।

जहां विद्वानों की मैत्री उपलब्ध हो तथा संस्था का छात्रवर्ग पात्र हो, वहां पर थोड़ी-सी कठिनाई कष्ट को नहीं देती।

यथानिर्धारितान् पाठ्यविषयान् जटिलानपि।
विदग्धोऽध्यापयत् सम्यक् सरलीकृत्य शास्त्रवित्॥38॥

अन्वयः – विदग्धः शास्त्रवित् (सः) यथानिर्धारितान् जटिलान् अपि पाठ्यविषयान् सरलीकृत्य सम्यक् अध्यापयत्।

वे तो परिपक्व शास्त्रज्ञ थे अतः निर्धारित जटिल पाठ्यविषयों को भी सरल करके भलीभांति पढ़ाते थे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ज्ञानधाराप्रवाहेण छात्रान्तर्हितकश्मलम्।
अनायासं पटुतयाऽक्षालयत् स विचक्षणः॥39॥

अन्वयः - विचक्षणः सः ज्ञानधाराप्रवाहेण छात्रान्तर्हितकश्मलम् पटुतया अनायासम् अक्षालयत्।

अपनी विलक्षण विद्वता के कारण, ज्ञान की धारा को प्रवाहित करके, छात्रों के अन्तर्मन में निगूढ़ अज्ञान के मैल को कुशलतापूर्वक अनायास ही धो देते थे।

व्यपनीतमलस्वच्छे छात्रमानसमन्दिरे।
प्रत्यस्थापयदभ्यस्तां चिरं विद्याधिदेवताम्॥40॥

अन्वयः - (सः) चिरम् अभ्यस्ताम् विद्याधिदेवताम् व्यपनीतमलस्वच्छे छात्रमानसमन्दिरे प्रत्यस्थापयत्।

उन्होंने, लम्बे समय तक अभ्यास करके आराधित विद्यादेवी सरस्वती को, मल को हटा कर स्वच्छ किए छात्रों के मनमन्दिर में कुशलतापूर्वक प्रतिष्ठित किया।

सम्यगध्यापितच्छात्राव्रातस्फुरितविद्यया।
यशः स्फीतसहस्रांशुः प्रत्याशं व्याप्तवान् विदः॥41॥

अन्वयः - सम्यगध्यापितच्छात्रव्रातस्फुरितविद्यया, विदः (तस्य) प्रत्याशम् यशःस्फीतसहस्रांशुः व्याप्तवान्।

जब गम्भीरतापूर्वक पढ़ाए गए छात्रवर्ग में विद्या प्रतिबिम्बित हुई, तो उस विद्वान् के उज्ज्वल यश का सूर्य दिशा-दिशा में चमकने और फैलने लगा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सर्वथा यावदभवत् शिमलायां व्यवस्थितः।
तावद् विद्यालयात् तस्मात् सोऽन्यत्र परिवर्तितः ॥42॥

अन्वयः - स्पष्टः।

जब शिमला में भली-भांति व्यवस्थित हो गए तो प्रशासन ने उस विद्यालय से दूसरे स्थान को परिवर्तित कर दिया।

आदिष्टः सुन्दरपुरे मण्डीमण्डलवर्तिनि।
परिवर्त्योररीकर्तुं कार्यमध्यापनालये ॥43॥

अन्वयः - मण्डीमण्डलवर्तिनि सुन्दरपुरे अध्यापनालये परिवर्त्य कार्यम् उररीकर्तुम् आदिष्टः।

और, मण्डी मण्डल में स्थित सुन्दरनगर के संस्कृतमहाविद्यालय में बदल कर वहां कार्यभार सम्भालने के लिए आदेश किया गया।

अगत्या विमना गत्वा नीडात् पक्षीव विच्युतः।
प्राचार्यपदवीपीठमध्यातिष्ठत् प्रतिष्ठितम् ॥44॥

अन्वयः - नीडात् विच्युतः पक्षी इव अगत्या विमना (इव तत्र) गत्वा प्रतिष्ठितम् प्राचार्यपदवीपीठम् अध्यतिष्ठत्।

शिमला में प्रेमी सज्जनों के साथ सुखपूर्वक रहे। परिवर्तन के कारण जाने को ऐसे विवश हुए जैसे नीड़ से बिछुड़ा पक्षी। सुन्दरनगर में प्रतिष्ठित प्राचार्य पद रिक्त होने पर, उस आसन पर विराजमान हुए।

तत्र विद्वद्गणाभ्यर्णं वैदुष्यांशुत्विषं किरन्।
प्रातरर्क इव प्राप्तो व्यभात् स्वर्णगिरेः पुरः ॥45॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः - तत्र विद्वद्गणाभ्यर्णम् वैदुष्यांशुत्विषं किरन् (सः) स्वर्णगिरेः पुरः प्राप्तः प्रातः अर्कः इव व्यभात्।

वहाँ पर वे विद्वत्ता की प्रभा को विद्वानों के सम्मुख बिखेरते हुए वे ऐसे शोभायमान हुए जैसे प्रातःकाल उदित सूर्य सुमेरुपर्वत के सान्निध्य में।

युवप्रायान् निजच्छन्दान् अध्येतॄन् तनयानिव।
अविनेयानपि प्रीत्या व्यधात् स विनयान्वितान्॥46॥

अन्वयः - स्पष्ट एव।

वहां अध्येता युवक जो स्वतन्त्र और अननुशासित स्वभाव के थे, उन्हें भी बड़े प्रेम से उन्होंने विनम्र बना दिया।

विद्याशीलसमिद्धान्तस्तेजसा तद्विपश्चितः।
अन्वव्रजन् सतां छात्राः पन्थानं नातिशासिताः॥47॥

अन्वयः - तद्विपश्चितः विद्याशीलसमिद्धान्तस्तेजसा (हेतुना) छात्राः नातिशासिताः (अपि) सताम् मार्गम् अन्वव्रजन्।

वे तो विद्या, सुशीलता आदि गुणों से उज्ज्वल तेज सम्पन्न विद्वान् थे। इस कारण संस्था के छात्र बिना किसी कठोर शासन से सज्जनों के पथ पर अग्रसर हो गए।

गुणज्ञानां समाजेऽथ गुणैरत्यन्तदुर्लभैः।
मानमप्रतिमं विद्वत्स्पृह्यमासादयच्च स॰॥48॥

अन्वयः - अथ सः अत्यन्तदुर्लभैः गुणैः गुणज्ञानाम् समाजे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विद्वत्स्पृह्यम् अप्रतिमम् मानम् आसादयत्।

इन दुर्लभ विशेषताओं के कारण, फिर उन्होंने गुणज्ञ लोगों के समाज में ऐसा अनुपम सम्मान पाया जिसकी कामना विद्वान् सदा करते हैं।

न केवलमधाज्ज्ञानादर्शमध्ययनार्थिषु।
शिक्षकाणामपि प्राप्नोद् गुरुतां स रहस्यवित्॥49॥

अन्वयः – रहस्यवित् सः, न केवलम् अध्ययनार्थिषु (एव) ज्ञानादर्शम् अधात्, शिक्षकाणाम् अपि गुरुताम् प्राप्नोत्।

वे तो शास्त्रों के रहस्य के ज्ञाता थे। अतः न केवल शिष्यों में ही विद्या के आदर्श को स्थापित करते अपितु शिक्षकों से भी गूढ़ मर्म समझाने के कारण गुरु की तरह आदर पाते थे।

पुनः स शिमलाविद्यालये प्राज्ञप्रतीक्षके।
प्रशासकैः समाहूतः "क्व विदां नोपयोगिता?" ॥50॥

अन्वयः – सः पुनः प्रशासकैः प्राज्ञप्रतीक्षके शिमलाविद्यालये समाहूतः। विदाम् उपयोगिता क्व न (भवति)?

लेकिन प्रशासकों ने उन्हें फिर से वैसे विद्वान् की आवश्यकता वाले शिमलाविद्यालय में वापिस स्थानातंरित कर दिया। विद्वानों की उपयोगिता कहां नहीं होती?

निर्विण्णाध्यापकच्छात्रैः प्रेमाश्रुस्नपिताननैः।
शासकादेशविवशस्ततः प्रस्थापितोऽभवत्॥52॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः - ततः शासकादेशविवशः (सः) प्रेमाश्रुस्नपिताननैः निर्विण्णाध्यापकच्छात्रैः प्रस्थापितः अभवत्।

उस के उपरान्त शासकों के आदेश से विवश उन्हें, खिन्न अध्यापकों और शिष्यों ने सुन्दरनगर से विदा कर दिया।

शिमलामपि संप्राप्तो नाधिकावधि सोऽवसत्।
सेवितुं पुनरादिष्टः संस्थां सोलनसंस्थिताम्॥53॥

अन्वयः - शिमलाम् प्राप्तः अपि सः (तत्र) अधिकावधि न अवसत्। पुनः सोलनसंस्थिताम् संस्थाम् सेवितुम् आदिष्टः।

शिमला विद्यालय में आकर भी वे अधिक समय तक वहां नहीं रहे। अधिकारियों ने उन्हें फिर से सोलन के संस्कृतमहाविद्यालय को कृतार्थ करने के उद्देश्य से वहां सेवा करने का आदेश दे दिया।

प्रत्यागत्य पुनः स्थानं प्रथमाध्युषितं प्रियम्।
प्राचार्यत्वमलङ्कुर्वन् कार्यमारभताथ सः॥54॥

अन्वयः - सः, प्रथमाध्युषितं प्रियं स्थानं पुनः प्रत्यागत्य अथ प्राचार्यत्वम् अलङ्कुर्वन् कार्यम् आरभत।

तब वे, पहले रह चुकने से प्रिय स्थान सोलन में पुनः लौटकर, तथा प्रधानाचार्य पद को शोभित करके अपना कार्य करने लगे।

शिष्या जिज्ञासवः प्राज्ञाः सोलनस्थानवर्तिनः।
सामाजिकाश्च प्रत्याप्तं विज्ञं वीक्ष्यातिहर्षिताः॥55॥

अन्वयः - शिष्याः जिज्ञासवः प्राज्ञाः सोलनस्थानवर्तिनः सामाजिकाः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

च विज्ञम् प्रत्याप्तम् वीक्ष्य अतिहर्षिताः (अभूवन्)।

शिष्य समुदाय, जिज्ञासु, विद्वान् तथा सोलनवासी सामाजिक उस विद्वान को पुनः लौटा देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए।

धर्मोन्निनीषवः सन्तः श्रद्धावन्तो जनास्तथा।
तममन्यन्त सम्प्राप्तं शूलिन्या आशिषं यथा ॥56॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

धर्म की उन्नति चाहने वाले, सज्जन, तथा श्रद्धालु लोगों ने भी उनका पुनः सोलन आना ऐसा माना जैसे शूलिनी देवी (सोलन की अधिष्ठात्री) का आशीर्वाद ही आ गया हो।

महाविद्यालयोऽमेयं गरिमाणं ततोऽस्पृशत्।
पुनर्विद्या बुधप्राप्त्या व्यलसन् समलङ्कृताः ॥57॥

अन्वयः – ततः महाविद्यालयः अमेयं गरिमाणम् अस्पृशत्। पुनः बुधप्राप्त्या समलङ्कृता विद्याः व्यलसन्।

इस कारण महाविद्यालय ने अपरिमित गरिमा को छू दिया तथा फिर से विद्वान् की प्राप्ति से अलङ्कृत विद्याएं शोभायमान हुईं।

विद्यामन्दिरसम्मानं परमामुन्नतिं गतम्।
तेन प्राप्तेन विदुषा हिमाद्रेरिव शम्भुना ॥58॥

अन्वयः – तेन विदुषा प्राप्तेन, शम्भुना हिमाद्रेः इव, विद्यामन्दिर सम्मानम् परमाम् उन्नतिम् गतम्।

उस विद्वान् की पुनः प्राप्ति से विद्यालय का सम्मान ऐसी परम

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उन्नति को पहुंचा जैसे शिव के आगमन से हिमालय।

शास्त्रज्ञवर्चसा विश्वग् विद्योतितमभूत् पुरम्।
महीमण्डलमर्केण व्योम्नीव समुषेयुषा ॥59॥

अन्वयः – व्योम्नि समुपेयुषा अर्केण महीमण्डलम् इव शास्त्रज्ञवर्चसा पुरम् विश्वक् विद्योतितम् अभूत्।

जिस प्रकार आकाश में सूर्य के आने पर पृथ्वीमण्डल प्रकाशित हो जाता है वैसे ही उस शास्त्रज्ञ के तेज से सम्पूर्ण नगर जगमग हो गया।

सेवावसानसमयोऽथाष्टपञ्चाशतायुषि।
वर्तमानस्य विदुषः समुपेतो यथाञ्जसा ॥60॥

अन्वयः – अथ अष्टपञ्चाशतायुषि वर्तमानस्य विदुषः सेवावसान-समयः यथा अञ्जसा समुपेतः।

अब, वे परम विद्वान् अट्ठावन (58) वर्षों की आयु में चल रहे थे। वर्षान्त में जैसे अचानक ही, सेवानिवृत्ति का समय आ पहुँचा।

मर्मज्ञाः सकलाः खिन्ना म्लानिमानमवाप्नुवन्।
अस्ताचलमनुप्राप्ते पद्मिन्यस्तरणाविव ॥61॥

अन्वयः – अस्ताचलम् अनुप्राप्ते तरणौ पद्मिन्यः इव सकलाः मर्मज्ञाः खिन्नाः (सन्तः) म्लानिमानम् अवाप्नुवन्।

जैसे सूर्य के अस्ताचल को चले जाने पर कमलिनियां मुरझा जाती हैं, उसी तरह उनकी योग्यता के सभी मर्मज्ञ खिन्न हो कर मुरझा गए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

संध्यायामिव संस्थायां तमश्छाया समन्ततः।
व्यपगन्तुं समारब्धे व्याप्नोद् विद्वद्दिवाकरे ॥62॥

अन्वयः – विद्वद्दिवाकरे व्यपगन्तुम् समारब्धे संध्यायाम् इव संस्थायाम् समन्ततः तमश्छाया व्याप्नोत्।

जैसे सूर्य के अस्ताचल की ओर बढ़ने से संध्याकाल में चारों ओर अंधेरे की छाया फैल जाती है, उसी प्रकार महाविद्यालय में भी अन्धकार सा छा गया।

सम्पूर्योरीकृतं सर्वं कार्यमप्रतिमश्रमी।
निर्वृत्तिं लब्धवान् विद्वान् कृतकृत्यः सगौरवम् ॥63॥

अन्वयः – अप्रतिमश्रमी कृतकृत्यः (सः) विद्वान् ऊरीकृतम् सर्वम् कार्यम् सम्पूर्य सगौरवम् निर्वृत्तिम् लब्धवान्।

अपने सेवाकाल में अनुपम श्रम करके वह विद्वान् शास्त्रपरम्परा की रक्षा और अभिवृद्धि का सम्पूर्ण सारस्वत व्रत कर्म पूरा करके गौरव सहित कृतकृत्य होकर सेवानिवृत्त हो गए।

साश्रुचक्षुर्भिरखिलैर्मित्रैश्छात्रैश्च विह्वलैः।
सम्भूय प्रेषितो गेहं साभिनदनवन्दनम् ॥64॥

अन्वयः – साश्रुचक्षुर्भिः विह्वलैः अखिलैः मित्रैः छात्रैः च सम्भूय साभिनदनवन्दनम् गेह्म प्रेषितः।

उनके वियोग से विह्वल सभी सहयोगी, मित्र और छात्रों ने मिल कर हार्दिक वन्दना और अभिनन्दन के सहित उन्हें विदा किया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सर्वकारीयसेवाया निवृत्तोऽप्युचितायुषि।
सक्रियं जीवनं कृत्स्नं कल्याणकृदयापयत्॥65॥

अन्वयः – उचितायुषि सर्वकारीयसेवायाः निवृत्तः अपि (सः) कृत्स्नम् जीवनम् सक्रियं कल्याणकृत् अयापयत्।

निर्धारित आयु की पूर्ति पर राजकीय सेवा से निवृत्त हो जाने पर भी, उन्होंने सम्पूर्ण शेष जीवन सक्रिय और विविध कल्याणकार्यों में व्यस्त रह कर बिताया।

स आजीवनमभ्यस्तं मननं शास्त्रमर्मणः।
निदिध्यासयितुं सम्यगेकतानं मनोऽकरोत्॥66॥

अन्वयः – सः आजीवनम् अभ्यस्तम् शास्त्रमर्मणः मननम् निदिध्यासयितुम् मनः सम्यक् एकतानम् अकरोत्।

उन्होंने आजीवन अभ्यस्त शास्त्रों के सार के मनन को जीवन में उतारने के लिए निदिध्यासन करने को, अपना मन भली-भांति एकाग्र कर दिया।

न्यस्य पात्रेषु पुत्रेषु कर्तव्यं व्यावहारिकम्।
पारमार्थिकनिःश्रेयःपथे प्रावर्ततान्वहम्॥67॥

अन्वयः – (सः) व्यावहारिकम् कर्तव्यम् पात्रेषु पुत्रेषु न्यस्य अन्वहम् पारमार्थिकनिःश्रेयःपथे प्रावर्तत।

वे सांसारिक व्यवहार के समस्त कर्तव्य को योग्य पुत्रों को सौंपकर निरन्तर पारमार्थिक कल्याण के पथ पर अग्रसर हो गए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गुह्यातिगुह्यगम्भीरसाधनां प्रचुरश्रमात्।
विधातुं श्रद्धया युक्तः समारभत तत्त्ववित्॥68॥

अन्वयः - श्रद्धया युक्तः तत्त्ववित् (सः) प्रचुरश्रमात् गुह्यातिगुह्य-गम्भीरसाधनाम् विधातुम् समारभत।

असीमित श्रद्धा से सम्पन्न उस तत्त्व के ज्ञाता ने प्रचुर श्रम से अत्यन्त गोपनीय और गम्भीर साधना को आरम्भ कर दिया।

जिज्ञासुसंशयोच्छेदं विपश्चित्साधुसङ्गतिम्।
श्रौतधर्मोपदेशं च प्रयुञ्जन् पुण्यमार्जयत्॥69॥

अन्वयः - यथाविन्यास एव।

अब तो, उन का काम था-जिज्ञासुजनों के हृदय में उत्पन्न कठिन से कठिन संशयों का शास्त्रीय विधि से निराकरण, विद्वानों और साधुसन्तों की सङ्गति करना तथा शुद्ध वेदोक्त धर्म का उपदेश देना, जिससे उन्होंने प्रचुर पुण्य का अर्जन किया।

पुण्यतीर्थाटने यज्ञे पौराणिककथादिषु।
सत्सङ्गेषु तथा चेतो निरन्तरमयोजयत्॥70॥

अन्वयः - स्पष्टः।

उन की जीवनचर्या अत्यन्त सात्विक थी। पुण्यमय तीर्थों की यात्राओं यज्ञादि कर्म, पौराणिक कथा प्रवचनों और सत्सङ्गों में वे अपना मन निरन्तर लगाए रखते थे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विचित्रोऽयं तु संसारः परमार्थपथस्थितैः।
यथा यथा ह्युपेक्ष्येत बध्नीयात् ताँस्तथा तथा ॥71॥

अन्वयः – अयम् संसारः तु विचित्रः परमार्थपथस्थितैः यथा यथा हि उपेक्ष्येत, तान् तथा तथा बध्नीयात्।

परन्तु, यह संसार बड़ा विचित्र है। परमार्थ पथ में स्थित महा-पुरुषों द्वारा जैसे जैसे इसकी उपेक्षा की जाती है, यह उन्हें वैसे-वैसे ही अधिकाधिक बन्धन में डाल देता है।

गुणा हि विदुषां द्वेधा दोषाय च गुणाय च।
दोषाय जगति व्यस्ता गुणायात्मरतास्तथा ॥72॥

अन्वयः – हि, विदुषाम् गुणाः द्वेधा, दोषाय गुणाय च (भवन्ति) जगति व्यस्ता दोषाय तथा आत्मरताः गुणाय।

क्योंकि विद्वानों के गुण भी दो प्रकार के परिणाम देते हैं। वे यदि सांसारिक प्रपञ्चों में बिखर गए तो हानि ही करते हैं, और यदि आत्मनिष्ठ हो गए तो कल्याणकारक हो जाते हैं।

विभाव्य राजसेवातो निवृत्तं कृतिनं जनाः।
सम्प्राप्ता नयनास्थानात् पुनस्तत्र निनीषवः ॥73॥

अन्वयः – जनाः, कृतिनम् (तम्) राजसेवातः निवृत्तम् विभाव्य पुनः तत्र निनीषवः नयनास्थानात् सम्प्राप्ताः।

इसी बीच, उन्हें राजकीय सेवाकार्य से निवृत्त हुए जानकर नयनादेवी स्थान से लोग उन्हें फिर से वहां ले जाने के लिए पहुँच गए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अस्वीकुर्वन्तमपि तेऽतितीव्रेणाग्रहेण तम्।
अनयन् विवशीकृत्य "सुखाराध्या हि सज्जनाः" ॥74॥

अन्वयः – ते, अस्वीकुर्वन्तम् अपि तम् अतितीव्रेण आग्रहेण विवशीकृत्य अनयन्। हि, सज्जनाः सुखाराध्याः।

यद्यपि शालग्राम जी बार-बार अस्वीकार करते थे परन्तु वे अति तीव्र आग्रह पूर्वक उन्हें विवश करके नयना देवी ले गए। क्योंकि सज्जनों को मनाना सरल होता है।

पादयोर्जगदम्बाया विस्रब्धहृदयोऽवसत्।
सुखमध्यापनव्याजात् चितिशक्तिं प्रसादयन्॥75॥

अन्वयः – सः अध्यापनव्याजात् चितिशक्तिं प्रसादयन् जगदम्बायाः पादयोः विस्रब्धहृदयः सुखम् अवसत्।

अब वे अध्यापन के बहाने मानो उस चैतन्यमयी महाशक्ति को प्रसन्न करते हुए, जगदम्बा के चरणों में निश्चिन्त होकर सुखपूर्वक रहने लगे।

जगद्रामेण विदुषा प्रियेण सहयोगिना।
सङ्गतोऽगमयत्तत्रज्ञातकालकलाः समाः॥76॥

अन्वयः – प्रियेण सहयोगिना विदुषा जगद्रामेण सङ्गतः (सः) तत्र अज्ञातकालकलाः समाः अगमयत्।

वहां पर प्रिय सहयोगी विद्वान् श्री जगद्राम की प्रसन्नता दायिनी सङ्गति में उन्होंने ऐसा समय बिताया कि समय के वे वर्ष ज्ञात ही न हुए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मितवागपि वाग्मित्वे यशस्वित्वेऽप्यगर्वितः।
विज्ञातृत्वेऽपि जिज्ञासु वैंभवेऽपि च संयमी ॥77॥

अन्वयः – वाग्मित्वे अपि मितवाक्, यशस्वित्वे अपि अगर्वितः, विज्ञातृत्वे अपि जिज्ञासुः वैभवे अपि च संयमी (आसीत्)।

यद्यपि वे कुशल वक्ता थे फिर भी कम बोलने लगे, विस्तृत यश होने पर भी कभी गर्व नहीं करते थे, तलस्पर्शी ज्ञानी थे, परन्तु सदा जिज्ञासु बने रहते थे और धनवैभव से सम्पन्न होने पर भी अत्यन्त संयम रखते थे।

पश्यन्नपि बहिर्दृग्भ्यां मनसा द्रष्टरि स्थिरः।
व्यवहारपरः सम्यग् विरक्तोऽप्यनुरक्तवत् ॥78॥

अन्वयः – दृग्भ्याम् बहिः पश्यन् अपि मनसा द्रष्टरि स्थिरः विरक्तः अपि अनुरक्तवत् सम्यक् व्यवहारपरः (आसीत्)।

चाहे वे आंखों से बाहर देख रहे हों परन्तु मन से द्रष्टा आत्मा से जुड़े रहते थे और यद्यपि परम विरक्त थे परन्तु अनुरक्त व्यक्ति की तरह प्रत्येक व्यवहार के पूर्णतया निभाते थे।

स्वानुभूतिरसस्नातः श्रद्धावारिधिमज्जितः ।
विज्ञाताखिलविज्ञेयो व्यधात् पूर्वकृतक्षयम् ॥79॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

वह अपने आत्मानुभव के रस मे डूबे रहते, श्रद्धा के समुद्र में अवगाहन करते, और समस्त ज्ञातव्य का ज्ञान सम्हाले हुए पूर्व जन्मों के

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कर्मों का क्षय करते हुए समय बिता रहे थे।

विस्मृतासत्यसंसारामखण्डाद्वैतधारणाम्।
नित्यमाचरदच्छिन्नां ज्ञानगर्भामुपासनाम् ॥80॥

अन्वयः – नित्यम् विस्मृतासत्यसंसाराम् अखण्डाद्वैतधारणाम् ज्ञान-गर्भाम् अच्छिन्नाम् उपासनाम् आचरत्।

वे निरन्तर, असत्य संसार को भुला देने वाली, अखण्ड अद्वैत की धारणा वाली परिपुष्ट ज्ञानमूलक अविच्छिन्न उपासना में लीन रहने लगे।

एकदा नयनास्थाने घटनाऽभूद् विलक्षणा।
अप्रकाश्यापि हि 'सतां किं गोप्य' मिति वर्ण्यते ॥81॥

अन्वयः – एकदा नयनास्थाने विलक्षणा घटना अभूत् (सा) हि अप्रकाश्या अपि सताम् किम् गोप्यम् इति वर्ण्यते।

एक दिन नयना देवी में उनके साथ विलक्षण चमत्कार वाली घटना हुई वह प्रचारणीय न होने पर भी इसलिए लिखी जा रही है कि "महापुरुषों की ऐसी कोई बात नहीं जो न कही जाये"।

एकाकी स्वासनासीनः प्रणिधानपरः स्थिरः।
आसीदतीतदेहादिभानावस्थोऽन्तरात्मनि ॥82॥

अन्वयः – (सः) स्वासनासीनः प्रणिधानपरः अतीतदेहादिभानावस्थः अन्तरात्मनि स्थिरः आसीत्।

किसी समय वे आसन पर बैठे, ध्यानमग्न देह इन्द्रिय की हलचल से दूर, अन्तरात्मा में एकाग्र व स्थिर बैठे जप में मगन थे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शैत्याधिकत्वात् प्रावृत्य कम्बलं स तदन्तरे।
वह्निभाजनमावृत्य स्थितवान् रुद्धवृत्तिमान्॥83॥

अन्वयः - सः शैत्याधिकत्वात् कम्बलं प्रावृत्य तदन्तरे वह्निभाजनम् आवृत्य रुद्धवृत्तिमान् स्थितवान्।

वे, शीत अधिक होने के कारण, गर्म कम्बल ओढ़े, उसके अन्दर अग्निपात्र (कांगड़ी) को ढककर, समस्त मनोवृत्तियों को एकाग्र किए हुए बैठै थे।

करे च गोमुखाकारां मालागुप्तिं निधाय सः।
जपन् कंचन मन्त्रं संप्रविष्टोऽभवदात्मनि॥84॥

अन्वयः - सः, करे गोमुखाकाराम् मालागुप्तिम् निधाय कञ्चन मन्त्रम् च जपन् अन्तरात्मनि संप्रविष्टः अभवत्।

और वे, हाथ में गोमुख के आकार वाली माला की गुप्ति लिए, किसी मन्त्र को जपते हुए स्वान्तरात्मा में प्रविष्ट थे।

गुप्तिस्पर्शसमुद्भूतः कृशानुः करमस्पृशत्।
ध्यानैकाग्र्यात् त्वचः प्लोषं कष्टदं नानुभूतवान्॥85॥

अन्वयः - स्पष्ट एव।

माला की गुप्ति के स्पर्श से पैदा हुई आग हाथ में भी लग गई और हाथ की चमड़ी जलने लगी। परन्तु ध्यान की एकाग्रता के कारण उस कष्टदायी जलने का उन्हें अनुभव ही न हुआ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अर्धप्राये करे प्लुष्टेऽनुभूतिरहिते बुधे।
महाकष्टागमात् पूर्वं चमत्कारोऽद्भुतोऽभवत्॥86॥

अन्वयः - स्पष्टः।

अब, करीब आधा हाथ जल गया था परन्तु उन्हें कोई अनुभव नहीं हुआ। फिर महाकष्ट (शरीर में आग के पूरी तरह फैलने) के आने से पहले एक अद्भुत चमत्कार हो गया।

द्वारं पिहितमुद्घाट्य कपिः कोऽपि जवाद् गतः।
तत्तीव्रध्वनिना ध्यानं व्ययुज्यत विपश्चितः॥87॥

अन्वयः - कोऽपि कपिः जवात् पिहितम् द्वारम् उद्घाट्य गतः। तत्तीव्रध्वनिना विपश्चितः ध्यानम् व्ययुज्यत।

अचानक एक (न जाने उसके रूप में कौन था) बन्दर आया और दृढ़ता से बन्द द्वार को झटका देकर खोलकर जाने लगा। उसकी तीव्र ध्वनि से उस विद्वान् का ध्यान वहां से वियुक्त हो गया जहां एकाग्र था।

प्लवंगेनातिवेगेन मूर्तिमत्कृपया यथा।
सहसा व्युत्थितो ध्यानाद् रक्षितश्च महाभयात्॥88॥

अन्वयः - यथा मूर्तिमत्कृपया (तथा) अतिवेगेन प्लवंगेन सहसा ध्यानात् (सः) व्युत्थितः महाभयात् च रक्षितः।

जैसे मूर्त कृपा हुई हो, वैसे तीव्र वेग वाले उस बन्दर ने अचानक उन्हें ध्यानावस्था से बाहर कर दिया। इस प्रकार उनकी उस विपत्ति से रक्षा हो गई।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वयं सर्वे जनाश्चैव विदित्वा वृत्तमार्तिदम्।
तथाश्चर्यमयीं रक्षामभूवन्नतिविस्मिताः ॥89॥

अन्वयः – स्वयम् सर्वे एव च जनाः आर्तिदम् वृत्तम् तथा आश्चर्यमयीम् रक्षाम् विदित्वा अतिविस्मिताः अभूवन्।

अपने आप और अन्य सभी लोग, उस सङ्कटदायी वृत्तान्त को तथा उससे अद्भुत प्रकार से हुई रक्षा को जान कर आश्चर्यचकित रह गए।

पुत्राः शिष्या बुधाः पौराः सखायो बान्धवास्तथा।
श्रुत्वा दुर्घटनां घोरां व्यचलन् भयविह्वलाः ॥90॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

उनके चारों पुत्र (सपरिवार), शिष्यवर्ग, नागरिक, मित्रगण तथा बन्धुगण उस भयङ्कर दुर्घटना को सुनकर भय से व्याकुल और विचलित हो गए।

केचिद् देवीकृपां केचिदाशीर्वादं हनूमतः।
तपसो वा फलं केचिद् रक्षाहेतूनचिन्तयन्॥91॥

अन्वयः – केचित् देवीकृपाम् केचित् हनूमतः आशीर्वादम् केचित् तपसः फलम् वा रक्षाहेतून् अचिन्तयन्।

उन की रक्षा में, कुछ ने देवीकृपा, कुछ ने हनूमान् का आशीर्वाद तथा कुछ ने उनके दीर्घ तप को कारण समझा।

दीर्घावधिकभैषज्याज्ज्ञातं व्रणविरोपणम्।
अदृष्टाश्रुतवृत्तं तन्न स्पष्टमधुनाप्यहो ॥92॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – दीर्घावधिकभैषज्यात् (तस्य) व्रणविरोपणम् जातम्। (परम्) तत् अदृष्टाश्रुतवृत्तम् (तु) अधुना अपि स्पष्टम् न इत्यहो।

लम्बे समय तक की गई चिकित्सा से उनका घाव तो ठीक हो गया किन्तु आश्चर्य है कि देखने सुनने में न आने वाली ऐसी घटना आज तक भी स्पष्ट न हो पाई।

सन्त्यन्येऽनेकवृत्तान्ता दिव्यशक्तिचमत्कृतेः।
तस्य वोपासकाग्र्यस्यानिच्छया नेह वर्णिता ॥93॥

अन्वयः – (अथ) तस्य उपासकाग्र्यस्य दिव्यशक्तिचमत्कृतेः अन्ये अपि अनेकवृत्तान्ताः सन्ति (परं तस्य) अनिच्छया इह न वर्णिताः।

वे तो उच्च कोटि के उपासक थे। उनके साथ हुई दिव्यशक्ति के चमत्कार वाली अन्य भी अनेक घटनाएं हैं परन्तु उन्हीं की इच्छा न होने से वे यहां वर्णित नहीं की गईं।

स्वयशोनिरपेक्षत्वं पराणुगुणवर्णनम्।
आत्मनात्मनि तुष्टिर्वा महतां सहजा गुणाः ॥94॥

अन्वयः – यथाविन्यासः।

सच तो यह है कि–अपने यश की अपेक्षा न रखना, औरों के अल्पगुणों का भी वर्णन करना तथा अपने में स्वयं सन्तुष्ट रहना, ये महापुरुषों के स्वाभाविक गुण होते हैं।

स देववाणीश्रुतिशास्त्ररक्षाक्रतोः कृते स्वार्थमुपेक्षमाणः।
स्वपूर्वजत्यागतपःप्रणालीमजीवयद् जीवनमर्पयित्वा ॥95॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः - सः देववाणीश्रुतिशास्त्ररक्षाक्रतोः कृते स्वार्थम् उपेक्षमाणःजीवनम् अर्पयित्वा स्वपूर्वजत्यागतपःप्रणालीम् अजीवयत्।

उन्होंने अपने स्वार्थ की पूर्णतया उपेक्षा करके, देवभाषा संस्कृत, वेदों, शास्त्रों की रक्षा के यज्ञ के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पण करके पूर्व विद्वानों के त्याग और तप की पावन परम्परा को पुनर्जीवित कर दिया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नवमः सर्गः

ग्रन्थान् प्राचां सभाष्यान् स प्रायः प्रौढविपश्चिताम्।
सगभीररहस्यार्थान् अशेषान् समधीतवान्॥1॥

अन्वयः – सः प्राचाम् प्रौढविपश्चिताम् सभाष्यान् सगभीररहस्यार्थान् प्रायः अशेषान् ग्रन्थान् अधीतवान्।

उन्होंने प्राचीन प्रौढ़विद्वानों के अत्यन्त गम्भीर रहस्यपूर्ण अर्थों वाले प्रायः सभी ग्रन्थों का भाष्य आदि सहित गहन अध्ययन किया था।

तेषां सारसुधां दिव्यां वितरीतुं परानपि।
अनेकानलिखद् ग्रन्थान् मथित्वा शास्त्रसागरम्॥2॥

अन्वयः – (सः) तेषाम् दिव्याम् सारसुधाम् परान् अपि वितरीतुम् शास्त्रसागरम् मथित्वा अनेकान् ग्रन्थान् अलिखत्।

उन प्राचीन महाग्रथों में निहित साररूपी दिव्य अमृत को अन्य जिज्ञासु जनों को भी वितरित करने के लिए, शास्त्रसागर का मन्थन करके अनेक ग्रन्थों की रचना भी उन्होंने की।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शास्त्रसिद्धान्तसारेषु दर्शनेषु विशेषतः।
गम्भीरोदारमनसो रुचिस्तस्याधिकाऽभवत्॥3॥

अन्वयः – गम्भीरोदारमनसः तस्य विशेषतः शास्त्रसिद्धान्तसारेषु दर्शनेषु अधिका रुचिः अभवत्।

वे बहुत गम्भीर और विशालहृदय थे। इसलिए सभी शास्त्र सिद्धान्तों के साररूप दर्शन शास्त्रों में उनकी विशेष और अधिक रुचि थी।

गौत्तमऋर्षिकृतन्यायसूत्राणां गहनाशयम्।
अशेषाद् विशदीकर्तुं टीकामरचयच्छ्रमात्॥4॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

उन्होंने गौतम ऋषि द्वारा प्रणीत न्यायसूत्रों के गम्भीर मर्मस्थलों को पूर्णतया स्पष्ट करने के लिए भारी परिश्रम से एक टीका की रचना की।

यस्यामाजीवनं स्वीयं मननं सोऽतिविस्तृतम्।
संक्षिप्य न्यदधात् तत्त्वजिज्ञासोरुपकारकम्॥5॥

अन्वयः – यस्याम् सः तत्त्वजिज्ञासोः उपकारकम् आजीवनम् स्वीयम् अतिविस्तृतम् मननम् संक्षिप्य न्यदधात्।

जिस न्यायटीका में उन्होंने जीवनपर्यन्त श्रमपूर्वक किया हुआ, जिज्ञासुओं का उपकारक, विस्तृत मनन संक्षिप्त करके स्थापित किया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भाष्यवार्तिकटीकानां दुरूहविषयाशयः।
सद्यःप्रपद्यसूक्ष्मार्थशैल्याऽऽप्तविदुषोद्धृतः॥6॥

अन्वयः - (यस्याम् टीकायाम्) आप्तविदुषा सद्यः प्रपद्यसूक्ष्मार्थ-शैल्या भाष्यवार्तिकटीकानाम् दुरूहविषयाशयः उद्धृतः।

जिस टीका में उस प्रामाणिक विद्वान् ने, न्यायभाष्य, वार्तिक तथा तात्पर्यटीका आदि अनेक ग्रन्थों के विषयगत कठिन आशय का उद्धार ऐसी सरल शैली में किया जिससे उनके सूक्ष्म सार का ज्ञान अनायास व तत्काल हो जाता है।

प्रतिपाद्येष्वनेकत्रासामाञ्जस्यं सुदुर्घटम्।
व्यपाकारि समन्वेत्य ह्येकत्रानेकवाक्यताम्॥7॥

अन्वयः - (तेन) अनेकत्र अनेकवाक्यताम् समन्वेत्य प्रतिपाद्येषु सुदुर्घटम् असामञ्जस्यम् हि व्यपाकारि।

उन्होंने, न्याय परम्परा के प्रतिपाद्य दुरूह स्थलों में अनेकत्र अनेक पक्षों की एकत्र संगति बैठाकर उनके अत्यन्त दुर्घट असामञ्जस्य को भली भांति दूर कर दिया।

जटिलो न्यायविषयो विशदप्रज्ञया स्फुटः।
व्याख्यया सरलीकृत्य करामलकवत् कृतः॥8॥

अन्वयः - (तेन) विशदप्रज्ञया जटिलः न्यायविषयः व्याख्यया सरलीकृत्य करामलकवत् स्फुटः कृतः।

इस श्रमसाध्य ग्रन्थ के द्वारा, उन्होंने अपनी निर्मल बुद्धि द्वारा की गई व्याख्या से न्याय का जटिल विषय सरल करके ऐसा स्पष्ट कर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दिया जैसे हाथ में रखा आंवला।

ग्रन्थादौ दर्शनज्ञानप्रसक्तविषयान् श्रयन्।
प्रतिपाद्यं द्रढयितुं निरमाद् दीर्घभूमिकाम्॥9॥

अन्वयः - (सः) प्रतिपाद्यं द्रढयितुम् ग्रन्थादौ दर्शनज्ञान-प्रसक्त-विषयान् श्रयन् दीर्घभूमिकाम् निरमात्।

उन्होंने ग्रन्थ के प्रतिपाद्य न्यायविषय को अध्कि स्पष्ट करने के लिए, आदि में, दर्शन ज्ञान से सम्बन्धित अनेक विषयों को मर्म सहित प्रकट करने वाली लम्बी भूमिका लिखी।

वैशेषिके पदार्थानां गुणधर्मविवेचके।
सम्यक् साधर्म्यवैधर्म्यप्रतिपादकदर्शने॥10॥

गम्भीरं सरलं भाष्यं समृद्धं स्वानुभूतिभि-
र्निरमात् स हि तत्त्वान्तर्मर्मोद्घाटनपण्डितः॥11॥

अन्वयः - तत्त्वान्तर्मर्मोद्घाटनपण्डितः स हि पदार्थानम् गुणधर्म-विवेचके वैशंषिके सम्यक् साधर्म्यवैधर्म्यप्रतिपादकदर्शने स्वानु-भूतिभिः समृद्धम् गम्भीरम् सरलम् भाष्यम् निरमात्।

वे तो तत्वों के आन्तरित निगूढ़ रहस्य को खोलकर रख देने वाले मेघावी विद्वान् थे। उन्होने जगत् के पदार्थों के गुणों और धर्मों के विवेचक, भलीभांति पदार्थों के साधर्म्य वैधर्भ्य के प्रतिपादक, वैशेषिक दर्शन पर अपने मनन से प्राप्त अनुभवों से समृद्ध, गम्भीर और सरल भाष्य का निर्माण किया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रमाणैर्युक्तिभिस्तर्कैर्ज्ञानस्य निकषोपमः।
विषयस्य व्यधाद् विद्वान् गुणदोषौ दृढं स्फुटौ ॥12॥

अन्वयः - ज्ञानस्य निकषोपमः (सः) विद्वान् प्रमाणैः युक्तिभिः तर्कैः (च) विषयस्य गुणदोषौ दृढम् स्फुटौ व्यधात्।

वे ज्ञान की कसौटी के समान पारखी थे जो प्रमाणों युक्तियों तर्कों द्वारा विषय के गुण दोष दृढ़ रूप से स्पष्ट कर के रख देते थे।

वेदस्तुतिरतिप्रौढ़ा श्रीमद्भागवतान्तरे।
कोविदैरपि दुर्ज्ञेया गूढ़ार्थग्रन्थिहेतुना ॥13॥

अन्वयः - श्रीमद्भागवतान्तरे वेदस्तुतिः अतिप्रौढ़ा गूढ़ार्थग्रन्थिहेतुना कोविदैः अपि दुर्ज्ञेया (अस्ति)।

महामुनि व्यास के द्वारा रचित श्रीमद्भागवतमहापुराण के मध्य 'वेदस्तुतिः' अन्त्यन्त गम्भीर है। उसमें अर्थों की अनेक गूढ़ ग्रन्थियाँ निहित हैं इसलिए वह विद्वानों की पहुँच से भी परे मानी जाती हैं।

वेदार्थज्ञाननिष्कर्षोपनिषन्मथिताशयः।
ब्रह्मनिष्ठैकविज्ञेयो यस्यामन्तःसमाहितः ॥14॥

अन्वयः - यस्याम् ब्रह्मनिष्ठैकविज्ञेयः वेदार्थज्ञाननिष्कर्षोप-निषन्मथिताशयः अन्तः समाहितः (अस्ति)।

जिस में वेदार्थज्ञान के निष्कर्ष उपनिषदों के निचोड़ का आशय अन्दर विद्यमान है जिसे केवल ब्रह्मनिष्ठ महापुरुष ही जान सकते हैं।

परं गम्भीरता तस्याः सूक्ष्मज्ञानपि कुण्ठतान्।
विदधाति महामत्स्यान् रत्नाकरतलं यथा ॥15॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – परंम् तस्याः गम्भीरता सूक्ष्मज्ञान् अपि (तथा) कुण्ठितान् विदधाति यथा महामत्स्यान् रत्नाकरतलम्।

उसमें वेदज्ञान के सार की पराकाष्ठा तो है ही–परन्तु उसकी गम्भीरता बड़े–बड़े सूक्ष्मज्ञों को भी वैसे कुण्ठित कर देती है जैसे समुद्र तल विशाल मगरमच्छों को।

तत्काठिन्यमपाकर्तुं विधायोद्गाढ़चिन्तनम्।
प्रौढ़ज्ञानसमृद्धः स टीकां देवगिराऽकरोत्॥16॥

अन्वयः – प्रौढ़ज्ञानसमृद्धः सः तत्काठिन्यम् अपाकर्तुम् उद्गाढ़–चिन्तनम् विधय देवगिरा टीकाम् अकरोत्।

वे तो प्रौढ़ज्ञान से समृद्ध थे, इसलिए वेदस्तुति के मर्मज्ञान में आने वाली कठिनाई को दूर करने के लिए उन्होंने अतिगम्भीर चिन्तन करके देव भाषा में एक टीका की रचना की।

यया तस्याः समुद्भिन्नमन्तारहस्यमद्भुतम्।
पद्मिन्या इव पत्राली सहस्त्रकिरणोदये॥17॥

अन्वयः – यया (टीकया) तस्याःअद्भुतम् अन्तर्–रहस्यम् सहस्त्र–किरणोदये पद्मिन्याः पत्राली इव समुद्भिन्नम्।

जिस टीका से उस का आन्तरिक रहस्य ऐसे खुल गया जैसे सूर्य के उदय से कमलिनी खिल उठती है।

समस्तदर्शनज्ञानं स तस्यां विन्ययोजयत्।
श्रमेण महता लब्धं द्राधीयस्तपसा तथा॥18॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – सः महता श्रमेण तथा द्राधीयस्तपसा लब्धम् समस्त-दर्शनज्ञानम् तस्याम् विन्ययोजयत्।

उन्होंने भारी परिश्रम तथा दीर्घकालिक तप के द्वारा प्राप्त सम्पूर्ण दर्शन का ज्ञान उस में भर दिया।

तदाप्रभृति विद्वद्भ्यस्तज्ज्ञानं सरलायितम् ।
कश्चिन्निर्माति पन्थानं पथिकाः स्युरसंख्यकाः ॥19॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

उसके बाद वेदस्तुति का वह गम्भीर ज्ञान विद्वानों के लिए सरल हो गया। वस्तुतः संसार में मार्ग तो कोई विरला ही बना पाता है परन्तु पथिक तो असंख्य मिल जाते हैं।

स्तुतिः शिवमहिम्नोऽस्ति गन्धर्वनृपनिर्मिता।
शिवतत्त्वबुभुत्सूनां भक्तानां च परायणम्॥20॥

अन्वयः – गन्धर्वनृपनिर्मिता शिवमहिम्नः स्तुतिः शिवतत्त्वबुभुत्सूनाम् भक्तानाम् च परायणम् अस्ति।

चित्रकेतु नामक गन्धर्वराज के द्वारा रचित शिवमहिम्नः स्तुतिः (नामक ग्रन्थ) शिव तत्त्व के बोध के इच्छुकों तथा शिव के भक्तों का परम आश्रय है।

स्तुतिसाहित्यमध्ये सा सर्वोत्कर्षेण वर्तते।
परं न सर्वविज्ञेयाऽतिगंभीरार्थकारणात्॥21॥

अन्वयः – सा स्तुतिसाहित्यमध्ये सर्वोत्कषर्णे वर्तते परम् अति-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गंभीरार्थकारणात् सर्वविज्ञेया न (अस्ति)।

वह स्तुतिसाहित्य के बीच में सर्वोत्कृष्ट रूप में विराजमान है परन्तु अत्यन्त गम्भीर अर्थों से युक्त होने के कारण सब के द्वारा ज्ञेय नहीं है।

प्रौढ़ान् लाक्षणिकान् शब्दान् भूयसोऽप्रस्तुतार्थकान्।
या विभर्ति विदग्धैरप्यनूह्यान् खल्वशेषतः ॥22॥

अन्वयः – या खुल विदग्धैःअपि अशेषतः अनूह्यान् प्रौढ़ान् अप्रस्तुतार्थकान् भूयसः लाक्षणिकान् अर्थान् विभर्ति।

जो तपे हुए विद्वानों के द्वारा भी पूरी तरह अविज्ञेय गम्भीर और अप्रस्तुत अर्थों वाले अनेक लाक्षणिक शब्दों को अपने अन्दर समेटे हुए है।

टीकां तस्या विहितवान् प्राञ्जलां सरलां स्फुटाम्।
विभिद्य निह्नुतानर्थान् अशेषाशयदर्शिनीम् ॥23॥

अन्वयः – (सः) तस्याः (स्तुतेः) निह्नुतान् अर्थान् विभिद्य अशेषाशय-दर्शिनीम् प्राञ्जलाम् सरलाम् स्फुटाम् टीकाम् विहितवान्।

उन्हेंाने उस शिवमहिम्नः स्तोत्र के निगूढ़ अर्थों को अवयवशः पृथक् करके उसके सम्पूर्ण सारतत्त्व को स्पष्ट करने वाली गम्भीर, सरल और निर्मल टीका की रचना की।

तस्या हिन्द्यनुवादेन समस्तजनगम्यताम्।
व्यदधात् सर्वलोकानामुपकारपरः कृती ॥24॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – सर्वलोकानाम् उपकारपरः कृती (सः) तस्याः हिन्द्यनुवादेन सर्वजनगम्यताम् व्यदधात्।

सभी लोगों के उपकार में तत्पर उस कुशल विद्वान् ने उसका हिन्दी अनुवाद करके तो उसकी गम्भीरता को सभी लोगों के लिए सरल बना दिया।

शिवतत्त्वविमर्शाख्यां भूमिकां विरचय्य तु।
सुवर्णशेखरे मुक्तामिव तस्याममण्डयत्॥25॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

शिवतत्त्वविमर्श नामकी भूमिका की रचना करके तो उन्होंने ग्रन्थ की शोभा ऐसे बढ़ा दी जैसे सोने के मुकुट में मोती जड़ देने से।

विशदं शिवतत्त्वान्तर्विषयान् प्रतिपाद्य सः।
साधकानां हितार्थाय परं पुण्यमुपार्जयत्॥26॥

अन्वयः – सः साधकानाम् हितार्थाय शिवतत्त्वान्तर्विषयान् प्रतिपाद्य तु परम् पुण्यम् उपार्जयत्।

शिव तत्व से सम्बन्धित आन्तरिक मर्म के विषयों का प्रतिपादन करके उन्होंने अनन्त पुण्य अर्जित किया।

अतिस्पष्टतया कृत्वा सुगमां शिवसाधनाम्।
शिवे श्रद्धावतामाप्नोत् साधुवादपरम्पराम्॥27॥

अन्वयः – अतिस्पष्टतया शिवसाधनाम् सुगमाम् कृत्वा शिवे श्रद्धा-वताम् साधुवादपरम्पराम् आप्नोत्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रचना के अतिस्पष्ट होने से, उन्होंने शिवसाधना को सर्वसुलभ बना कर शिव पर श्रद्धा रखने वालों से ढेर सारी प्रशंसाएं प्राप्त कीं।

समाना सर्वदेवेषु श्रद्धाऽऽसीत् तस्य यद्यपि।
तथापि जगदम्बायां वैशिष्ट्यं सा गताऽभवत्॥28॥

अन्वयः – यद्यपि तस्य श्रद्धा सर्वदेवेषु समाना आसीत् तथापि सा जगदम्बायाम् वैशिष्ट्यं गता अभवत्।

यद्यपि उनकी श्रद्धा सभी देवों के प्रति समान थी फिर भी जगदम्बा के प्रति तो उनका विशेष समर्पण था।

शक्तिरेव समस्तानां चेतनाचेतनात्मनाम्।
आदिमूलं पदार्थानामाधारः सदसन्मयी॥29॥

अन्वयः – सदसन्मयी शक्तिः एव समस्तानाम् चेतनाचेतनात्मनाम् पदार्थानाम् आदिमूलम् आधारः (चास्ति)।

सत् और असत् रूप सभी वस्तुओं में व्याप्त वह शक्ति ही तो सभी चेतन अचेतन पदार्थों का आदिमूल और आधार है।

परमा सा महासत्ता जगतामादिकारणम्।
उपासया च तस्याः स्युः सर्वे देवा उपासिताः॥30॥

अन्वयः – स्पष्टः एव।

वह परम सत्ता है और जगत् समूह की आदि कारण है। इसलिए एक उसी की उपासना करने से सभी देवमण्डल की उपासना हो जाती है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

निर्गुणा ब्रह्मरूपा सा सगुणा च जगन्मयी।
नदीतटयुगस्पर्शी महामत्स्य इवोच्यते॥31॥

अन्वयः - सा नदीतटयुगस्पर्शी महामत्स्य इव निर्गुणा ब्रह्मरूपा सगुणा जगन्मयी च उच्यते।

वह तो नदी के दोनों तटों का स्पर्श करने वाले विशाल मत्स्य की तरह है। एक ओर निर्गुणावस्था में ब्रह्मरूपा और दूसरी ओर सगुणावस्था में जगन्मयी भी है।

दुर्गासप्तशतीग्रन्थः शक्त्युपासोपपादकः।
सम्मतः शक्तिभक्तानां परायणमनुत्तमम्॥32॥

अन्वयः - शक्त्युपासोपपादकः दुर्गासप्तशतीग्रन्थः शक्तिभक्तानाम् अनुत्तमम् परायणम् सम्मतः।

इस कारण शक्ति उपासना का प्रतिपादक दुर्गासप्तशती नामक ग्रन्थ शक्ति के भक्तों के लिए सब से श्रेष्ठ ठिकाना है।

शाक्ततन्त्ररहस्यानां वरीवस्याजुषां सताम्।
उपकारकरोऽत्यन्तं तत्र गुप्तो महानिधिः॥33॥

अन्वयः - तत्र वरीवस्याजुषाम् सताम् अत्यन्तम् उपकारकरः शाक्त-तन्त्ररहस्यानाम् महानिधिः गुप्तः (अस्ति)।

उस ग्रन्थ में, उपासना करने वालों का महान् उपकार करने वाला, शाक्ततन्त्रों के रहस्यों का विशाल भण्डार छिपा हुआ है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विदग्धः शक्तितत्त्वान्तर्मर्माभिज्ञ उपासकः।
जगदम्बाशिषा कश्चित् तमुद्घाटयितुं क्षमः ॥34॥

अन्वयः – कश्चित् शक्तितत्त्वान्तर्मर्माभिज्ञः विदग्धः उपासकः (एव) जगदम्बाशिषा तम् उद्घाटयितुम् क्षमः (भवति)।

परन्तु उस गुप्त निधि का उद्घाटन करने में जगदम्बा के आशीर्वाद का पात्र कोई ऐसा प्रौढ़ विद्वान् ही समर्थ होता है जो शक्तितत्व के आन्तरिक रहस्यों का ज्ञाता और उपासना में पारंगत हो।

विदुषा तेन भक्तानामुपकाराय भूरये।
तद्ग्रन्थभाष्यं लिखितं शक्तितत्त्वप्रकाशकम् ॥35॥

अन्वयः – तेन विदुषा भक्तानाम् भूरये उपकाराय शक्तितत्त्व प्रकाशकम् तद्ग्रन्थभाष्यम् लिखितम्।

उस विद्वान् ने भक्तों का भारी उपकार करने के प्रयोजन से शक्ति तत्त्व का प्रकाशक भाष्य उस ग्रन्थ पर लिखा।

समस्योपासया तत्रासादितानुभवा हिताः।
शैल्या सर्वोपकाराय सरलाशयया विदा ॥36॥

अन्वयः – (तेन) विदा उपासया आसादिताः अनुभवाः सर्वोपकाराय सरलाशयया शैल्या समस्य तत्र हिताः।

उस विद्वान् ने अपनी गम्भीर उपासना से उपलब्ध अनुभवों को, सभी का भला करने के लिए, सरल आशय वाली शैली के द्वारा उस ग्रन्थ में इकट्ठा कर के स्थापित किया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हिन्द्या सर्वजनज्ञेयभाषयाऽपि विभूषिताम्।
सोऽकरोन्मधुरां व्याख्यां संशयौघव्यपोहिनीम्॥37॥

अन्वयः - सः सर्वजनज्ञेयभाषया हिन्द्या विभूषिताम् संशयौघ-व्यपोहिनीम् मधुराम् व्याख्याम् अपि अकरोत्।

उन्होंने उस ग्रन्थ की, सभी लोगों के जानने योग्य हिन्दी भाषा से भी मधुर और अलङ्कृत व्याख्या की, जिससे सभी प्रकार के संशय मिट जाएं।

साधकेभ्यो महाशक्तेः सौविध्यं प्रविधाय सः।
गहनोपासनावर्त्मन्यकरोदद्भुतं हितम्॥38॥

अन्वयः - सः महाशक्तेः साधकेभ्यः गहनोपासनावर्त्मनि सौविध्म् प्रविधाय अद्भुतम् हितम् अकरोत्।

इस प्रकार उन्होंने महाशक्ति के साधकों के लिए गहन उपासना के मार्ग में सुकरता लाकर अद्भुत उपकार किया।

शास्त्राणां तत्त्वरत्नानां वेदोपनिषदां तथा।
राजते विश्वविख्यातो गीताग्रन्थो महानिधिः॥39॥

अन्वयः - शास्त्राणाम् तथ वेदोपनिषदाम् तत्त्वरत्नानाम् महानिधिः विश्वख्यिातः गीताग्रन्थः विराजते।

श्रीमद्भगवद्गीता एक विश्वविख्यात ग्रन्थ है जो शास्त्रों, वेदों, उपनिषदों के तत्त्वरूपी रत्नों का महान् भण्डार है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यत्राध्यात्मपरस्याथ धर्मिकस्य समन्वयः।
व्यवहारेण चाशेषाद् विषयस्योपलभ्यते ॥40 ॥

अन्वयः – यत्र अध्यात्मपरस्य अथ धार्मिकस्य विषयस्य व्यवहारेण अशेषात् समन्वयः उपलभ्यते।

जिस ग्रन्थ में समस्त अध्यात्मपरक और धर्म सम्बन्धी विषयों का जीवन के व्यवहार के साथ पूर्णतया समन्वय उपलब्ध होता है।

संसारेऽगणिताष्टीका निबन्धाश्च तलस्पृशः।
प्रायोऽशेषासु भाषासु विद्वद्भिर्यत्र निर्मिताः ॥41 ॥

अन्वयः – यत्र विद्वद्भिः संसारे प्रायः अशेषासु भाषासु अगणिताः टीकाः तलस्पृशः निबन्धः च निर्मिताः।

जिस ग्रन्थ पर विद्वानों ने संसार की प्रायः सभी भाषाओं में अगणित टीकाएं तथा तलस्पर्शी निबन्धों की रचना की है।

तद्ग्रन्थमधिकृत्यापि टीका गीर्वाणवाङ्मयी।
व्यधीयत विदा तेनाध्यात्ममर्मविदोत्तमा ॥42 ॥

अन्वयः – अध्यात्ममर्मविदा तेन विदा तद्ग्रन्थम् अधिकृत्य अपि गीर्वाणवाङ्मयी उत्तमा टीका व्यधीयत।

उस गीता ग्रन्थ पर भी, उस अध्यात्ममर्म के ज्ञाता विद्वान् ने, संस्कृत भाषा में एक उत्तम टीका की रचना की।

समस्तदर्शनज्ञानावगाहात्यन्तशुद्धया।
प्रज्ञया ग्रन्थहृदयस्तेन सम्यगपावृतः ॥43 ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः - तेन समस्तदर्शनज्ञानावगाहात्यन्तशुद्धया प्रज्ञया ग्रन्थ-हृदयः सम्यक् अपावृतः।

उन्होंने समस्त दर्शनों के ज्ञान के स्नान से पूर्णतया शुद्ध प्रज्ञा द्वारा ग्रन्थ का हृदय भली-भांति खोलकर रख दिया।

प्राञ्जला मधुरा शुद्धा सरला विशदा तथा।
ग्रन्थान्तःसारमाकृष्य तस्य भाषा पुरो न्यधात्॥44॥

अन्वयः - तस्य (विदुषः) प्राञ्जला, मधुरा, शुद्धा, सरला तथा विशदा भाषा ग्रन्थान्तःसारम् आकृष्य (तम् सारम्) पुरः न्यधात्।

उस विद्वान् की परिपक्व, मधुर, शुद्ध, सरल तथा स्पष्ट भाषा ने ग्रन्थ के आन्तरिक सार को निकाल कर सामने रख दिया।

तस्मादत्यन्तदुर्बोधरहस्यो विदुषामपि।
ग्रन्थस्यामूल्यविषयः करामलकतां गतः॥45॥

अन्वयः - तस्मात् विदुषामपि अत्यन्तदुर्बोधरहस्यः ग्रन्थस्य अमूल्य-विषयः करामलकताम् गतः।

उस टीका के रचने से, विद्वानों के लिए भी अत्यन्त कठिनता से जानने योग्य रहस्यों से परिपूर्ण ग्रन्थ का अति मूल्यवान् विषय, हाथ में रखे आंवले की तरह स्पष्ट हो गया।

संस्कृतप्रतिपत्त्यर्थं हिन्दीभाषामयी स्वयम्।
व्याख्यापि विहिता तेन तस्य सर्वोपकारिणी॥46॥

अन्वयः - तेन संस्कृतप्रतिपत्त्यर्थम् तस्य (ग्रन्थस्य) सर्वोपकारिणी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हिन्दीभाषामयी व्याख्या अपि स्वयम् विहिता।

उन्होंने संस्कृत में लिखे विषय को भली प्रकार समझाने के लिए ग्रन्थ की हिन्दी भाषा में सर्वोपकारिणी व्याख्या भी स्वयं लिखी।

परं कालस्य कौटिल्याद् वैपरीत्यात्तथा विधेः।
व्यलिख्यत नवाध्यायपर्यन्तं केवलं बत॥47॥

अन्वयः – परम् कालस्य कौटिल्यात् तथा विधेः वैपरीत्यात् सा टीका) केवलम् नवाध्यायपर्यन्तम् (एव) व्यलिख्यत बत।

परन्तु, काल की कुटिलता तथा विधाता के विधान की विपरीतता के कारण, वह टीका केवल नौ अध्यायों तक ही लिखी जा सकी– यह खेद है।

स्वतन्त्रा बहवो लेखाः शास्त्रीयविषयान्विताः।
संक्षिप्ता विस्तृताश्चैव बहुशस्तेन निर्मिताः॥48॥

अन्वयः – तेन विदुषा शास्त्रीयविषयान्विताः बहवः संक्षिप्ताः विस्तृताः चैव लेखाः बहुशः निर्मिताः।

इन ग्रन्थों के अतिरिक्त उन्होंने, अनेक शास्त्रीय विषयों के प्रतिपादक, संक्षिप्त और विस्तृत, अनेक स्वतन्त्र लेख भी बहुत बार लिखे।

पात्रिकासूच्चकक्ष्यासु ते च लेखाः प्रकाशिताः।
भृशं सम्पादयामासुर्मनस्तोषं विपश्चिताम्॥49॥

अन्वयः – उच्चकक्ष्यासु पत्रिकासु प्रकाशिताःच ते लेखाः विपश्चिताम् भृशम् मनस्तोषं सम्पादयामासुः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और वे लेख जब उच्चस्तरीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए तो उनसे विद्वानों को अत्यन्त सन्तोष प्राप्त हुआ।

अनेकशास्त्रोदधिमन्थनेन
ज्ञानामृतं प्राप्य महाश्रमेण।
स ग्रन्थकुम्भैर्व्यतरत् प्रकामं
कल्याणकामो हरिनिर्विशेषः ॥40॥

अन्वयः - हरिनिर्विशेषः कल्याणकामः सः महाश्रमेण अनेकशास्त्रोदधिमन्थनेन ज्ञानामृतं प्राप्य ग्रन्थकुम्भैः प्रकामम् व्यतरत्।

वे तो विष्णु के तुल्य थे, जिन्होंने संसार के कल्याण की कामना से भारी परिश्रम करके, अनेक शास्त्रों के समुद्र का मन्थन करके ज्ञानामृत पाकर उसे (मोहिनी रूप हरि की तरह) भरपूर वितरित किया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दशमः सर्गः

देवभाषाविदां नूनं शास्त्रज्ञानां यशोमहः।
विशेषाद् वार्द्धके वृद्धिं वैदग्ध्याददधिरोहति ॥1॥

अन्वयः – नूनम् देवभाषाविदाम् शास्त्रज्ञानाम् यशोमहः वैदग्ध्यात् वार्द्धके विशेषात् वृद्धिम् अधिरोहति।

यह निश्चित है कि देवभाषा के विद्वान् शास्त्रज्ञों के यश का तेज, प्रौढ़ता के कारण वृद्धावस्था में विशेष रूप में वृद्धि को पाता है।

निवृत्तस्यापि सेवायाः प्रत्याहारपरस्य च।
कीर्त्या निर्मलया तस्य चतस्रो मण्डिता दिशः ॥2॥

अन्वयः – सेवायाः निवृत्तस्य प्रत्याहारपरस्य च अपि तस्य निर्मलया कीर्त्या चतस्रः दिशः मण्डिताः (अभूवन्)।

अतः, यद्यपि वे सेवानिवृत्त हो गए थे और सांसारिक कामनाओं से विरक्त होकर अन्तर्मुखता की ओर अग्रसर थे, परन्तु उनकी कीर्ति के कारण चारों दिशाएं अलङ्कृत हो गईं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तद्गुणग्राममर्मज्ञै र्विशेषज्ञैर्विमर्शिभिः।
तस्य राष्ट्रपुरस्कारं प्रति नाम समर्थितम्॥3॥

अन्वयः – तद्गुणग्राममर्मज्ञैः विशेषज्ञैः विमर्शिभिः राष्ट्रपुरस्कारम् प्रति तस्य नाम समर्थितम्।

उनकी विद्वता, योगदान आदि गुणसमूहों का मर्म जानने वाले विशेषज्ञ विचारकों नें राष्ट्रपति पुरस्कार के लिए उनके नाम को समर्थित कर भेज दिया।

पुरस्कारविनिर्णेत्र्या समित्या ह्यविलम्बतः।
सर्वसम्मतितो नाभूच्चयने कोऽपि संशयः॥4॥

अन्वयः – पुरस्कारविनिर्णेत्रया समित्या अविलम्बतः (नाम्नः) चयने कः अपि संशयः न अभूत्।

और जब उनका नाम सामने आया तो राष्ट्रपति पुरस्कार का निर्णय करने वाली समिति को, सर्वसम्मति से उन्हें चुनने के विषय में कोई दुविधा या मतभेद न रहा।

क्व भवन्ति सुविद्वांसः पुरस्कारपराः परम्।
निवेद्यन्ते पुरस्काराः कृतज्ञैस्तेभ्य आदरात्॥5॥

अन्वयः – सुविद्वांसः पुस्कारपराः क्व भवन्ति, परम् तेभ्यः कृतज्ञैः पुरस्काराः आदरात् निवेद्यन्ते।

जो वस्तुतः विद्वान् है वे पुरस्कारों के अभिलाषी कहां होते हैं परन्तु कृतज्ञ समाज के द्वारा उन्हें बड़े आदर के साथ पुरस्कार समर्पित

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

किए जाते हैं।

स्वीकृते तस्य विदुषः पुरस्काराय नामनि।
मर्मज्ञमण्डले भूयान् हर्षोल्लासोत्सवोऽभवत्॥6॥

अन्वयः – तस्य विदुषः नामनि पुरस्काराय स्वीकृते सति मर्मज्ञमण्डले भूयान् हर्षोल्लासोत्सवः अभवत्।

उस विद्वान् का नाम पुरस्कार के लिए स्वीकृत हो जाने पर मर्मज्ञ समाज में हर्षोल्लास का उत्सव हो गया।

समाहूय ससम्मानं राजधान्यां विदांवरम्।
मान्यो राष्ट्रपती राष्ट्रपुरस्कारमुपाहरत्॥7॥

अन्वयः – मान्यः राष्ट्रपतिः विदांवरम् (तम्) ससम्मानम् राजधान्याम् समाहूय राष्ट्रपुरस्कारम् उपाहरत्।

देश के मान्य राष्ट्रपति नें उस विद्वन्मूर्धन्य को सम्मान सहित राजधानी दिल्ली बुलाकर उसे राष्ट्रपति सम्मान समर्पित किया।

पुरस्कारावतंसाढ्या वैदुष्यश्रीरशोभत।
विभावसुविभास्पृष्टा सुमेरुसुषमा यथा॥8॥

अन्वयः – पुरस्कारावतंसाढ्या (तस्य) वैदुष्यश्रीः यथा विभावसु-विभास्पृष्टा सुमेरुसुषमा अशोभत।

पुरस्कार के अलङ्कार से और अधिक समृद्धि को पाकर उनकी विद्वत्ता की महत्ता ऐसे शोभी देने लगी जैसे सूर्य की प्रभा का स्पर्श पाकर सुमेरु की सुन्दरता।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तेन सम्मानभारेण पुनर्नम्रोऽभवत् सुधीः।
पत्रपुष्पफलोत्कृष्टो महातरुवरो यथा॥9॥

अन्वयः – तेन सम्मानभारेण (सः) सुधीः यथा पत्रपुष्पफलोत्कृष्टः महातरुवरः (तथा) पुनः नम्रः अभवत्।

उस सम्मान के भार से वे विद्वान्, पत्तों पुष्पों व फलों की समृद्धि से भरपूर महान् वृक्ष की तरह, और अधिक विनम्र हो गए।

विचित्रा प्रकृतिर्नूनं विद्यावृद्धिवतां सताम्।
विस्तारं यशसि प्राप्ते संकोचं याति याऽधिकम्॥10॥

अन्वयः – विद्यावृद्धिवताम् सताम् प्रकृतिः नूनम् विचित्रा (भवति) या यशसि विस्तारं प्राप्ते अधिकम् सङ्कोचम् याति।

विद्या से समृद्ध सज्जनों का स्वभाव तो बड़ा ही विचित्र होता है जो यश का विस्तार हो जाने पर अत्यन्त सङ्कोच को धारण कर देता है।

प्रान्तीयसर्वकारेणाऽप्यनुभूय च गौरवम्।
उच्चराज्यपुरस्कारोपहारेणादृतोऽभवत्॥11॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

उनकी उस पुरस्कार की उपलब्धि से प्रदेश के गौरव की वृद्धि का अनुभव करके प्रान्तीय सरकार ने भी उच्च राज्य विद्वत्ता पुरस्कार का उपहार देकर उनका सम्मान किया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शिक्षामन्त्री स्वदेशस्य राज्यपालो विचक्षणः।

मुख्यमन्त्री च सम्मानं सम्भूय तमुपाहरन्॥12॥

अन्वयः - स्वदेशस्य शिक्षामन्त्री विचक्षणः राज्यपालः मुख्यमन्त्री च सम्भूय तम् सम्मानम् उपाहरन्।

देश के शिक्षामन्त्री, विद्वान् राज्यपाल (श्री विष्णुकान्त) तथा मुख्यमन्त्री ने मिलकर उन्हें वह सम्मान भेंट किया।

प्रान्तीयाः कोविदाः सन्तो विद्वदादरहर्षिताः।

भूरिणा साधुवादेन तं सम्यगभ्यनन्दयन्॥13॥

अन्वयः - विद्वदादरहर्षिता प्रान्तीयाः कोविदाः सन्तः च) तम् भूरिणा साधुवादेन सम्यक् अभ्यनन्दयन्।

उन विद्वान् के आदर से प्रसन्न, प्रदेश के विद्वानों एवं सज्जनों को बड़ी प्रसन्नता हुई थी अपरिमित श्रद्धा के द्वारा उन का भली-भांति अभिनन्दन किया।

गरिमा गिरिराजस्य गुरुवर्यसमादरात् ।

प्राप्तवानधिकोत्कर्षं गिरिशातिथ्यतो यथा॥14॥

अन्वयः - गुरुवर्यसमादरात् गिरिराजस्य गरिमा (तथा)अधिकोत्कर्षम् प्राप्तवान् यथा गिरिशातिथ्यतः।

इस पर्वतराज हिमाचल का उत्कर्ष यूं तो सर्वविदित है परन्तु, गुरुओं में श्रेष्ठ उस विद्वान् का आदर होने से और अधिक बढ़ गया। ठीक उसी प्रकार जैसे पहले शिवजी का आतिथ्य करके इसका गौरव

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बढ़ा था।

चत्वारोऽन्येऽपि विद्वांसो हिमप्रान्तयशस्कराः।

पुरस्कारप्रदानेन राज्येन च सभाजिताः॥15॥

अन्वयः – राज्येन हिमप्रान्तयशस्कराः अन्ये चत्वारः विद्वांसः अपि (तस्मिन् समये) पुरस्कारप्रदानेन सभाजिताः।

उनके साथ, हिमाचल की कीर्ति को बढ़ाने वाले अन्य चार विद्वानों को भी पुरस्कार देकर प्रान्तीय सरकार ने सम्मानित किया।

टीकाग्रन्थो विरचितस्तेन यो न्यायदर्शने।

स राज्यसर्वकारणे कृतज्ञेन पुरस्कृतः॥16॥

अन्वयः – तेन न्यायदर्शने टीकाग्रन्थः विरचितः सः कृतज्ञेन राज्य-सर्वकारेण पुरस्कृतः।

उन्होंने न्यायदर्शन पर जो (पूर्वोक्त) टीकाग्रन्थ लिखा था उसे महत्त्वपूर्ण योगदान समझ कर राज्य सरकार ने पुरस्कृत किया।

वाग्विभागसमारोहे प्रचुरादरपूर्वकम्।

मुख्यमन्त्री पुरस्कारं प्रादात् तस्मै विपश्चिते॥17॥

अन्वयः – मुख्यमन्त्री वाग्विभागसमारोहे विपश्चिते तस्मै प्रचुरादर-पूर्वकम् पुरस्कारम् प्रादात्।

प्रदेश के मुख्यमन्त्री ने भाषा विभाग द्वारा आयोजित समारोह में बड़े सम्मान के साथ उन विद्वान को वह पुरस्कार प्रदान किया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

व्यद्योतत विपश्चिच्छ्री मुंख्यमन्त्रिसमादृता।
समुद्रमथने शक्राभिषिक्ता सा यथा पुरा॥18॥

अन्वयः – मुख्यमन्त्रिसमादृता विपश्चिछ्रीः (तथा) व्यद्योतत यथा सा पुरा समुद्रमथने शक्राभिषिक्ता (व्यद्योतत)।

मुख्यमन्त्री के द्वारा सम्मानित उस विद्वान् की शोभा (लक्ष्मी) ऐसी उज्ज्वल हो गई जैसे प्राचीन काल में वह (लक्ष्मी) देवराज इन्द्र के द्वारा अभिषिक्त होकर सजी थी।

हिमाचलसमुत्कर्षो द्विरवर्ण्यां गतः श्रियम्।
आदरेण पुरा शम्भोः शालग्रामस्य चाधुना॥19॥

अन्वयः – हिमाचलसमुत्कर्षः द्विः अवर्ण्याम् श्रियम् गतः, पुरा शम्भोः अधुना च शालग्रामस्य आदरेण।

हिमाचल का उत्कर्ष दो बार अवर्ण्य चरम शोभा को प्राप्त हुआ। प्राचीन समय में उसके द्वारा शङ्कर का आदर करने से और इस काल में शालग्राम को सम्मानित करके।

गुणज्ञैर्गुणिसम्मानं कल्पते प्रचुरश्रियै।
रविरश्मिभिरुद्दीप्तः सूर्यकान्तमणिर्यथा॥20॥

अन्वयः – गुणज्ञैः गुणिसम्मानम् (तथा) प्रचुरश्रियै कल्पते यथा रविरश्मिभिः उद्दीप्तः सूर्यकान्तमणिः।

गुणज्ञ समाज के द्वारा होने वाला गुणिजनों का सम्मान अत्यधिक शोभादायक होता है। जैसे सूर्य की किरणों के स्पर्श द्वारा सूर्यकान्त मणि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

की उज्ज्वलता और बढ़ जाती है।

हिमाचलप्रदेशस्य सर्वाङ्गोन्नतिसिद्धये।
उत्कर्षसंज्ञका संस्था स्थापिता गुणवेत्तृभिः ॥21॥

अन्वयः – गुणवेतृभिः हिमाचलप्रदेशस्य सर्वाङ्गोन्नतिसिद्धये उत्कर्ष-संज्ञका संस्था स्थापिता।

गुणों का आदर करने वाले महानुभावों ने हिमाचल प्रदेश के सभी पक्षों की उन्नति की सिद्धि के लिए हिमोत्कर्ष नाम की एक संस्था स्थापित की हुई है।

विद्यागुणकलोत्कृष्टान् विशिष्टान् कृतिनो हि सा।
अलङ्करोति सम्मानैः संस्था संस्कृतिभूतये ॥22॥

अन्वयः – सा संस्था संस्कृतिभूतये विद्यागुणकलोत्कृष्टान् विशिष्टान् कृतिनः सम्मानैः अलङ्करोति।

वह संस्था संस्कृति की उन्नति के उद्देश्य से विद्या, गुण, कला आदि से उत्कृष्ट विशिष्ट कृती महानुभावों को, अनेक सम्मान प्रदान कर के विभूषित करती है।

विमृश्य तस्य वैदुष्यं सूक्ष्मतत्त्वज्ञतां तथा।
संस्था सम्मानदानेन तं सम्यगभ्यनन्दयत् ॥23॥

अन्वयः – (सा) संस्था तस्य वैदुष्यं तथा सूक्ष्मज्ञताम् विमृश्य सम्मानदानेन तम् सम्यक् अभ्यनन्दयत्।

उस हिमोत्कर्ष संस्था ने भी शालग्राम की विद्वता और सूक्ष्म

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तत्वज्ञान में विशेष अधिकार जानकर सम्मान प्रदान कर उनका अभिनन्दन किया।

तेन विद्वद्धुरीणस्य द्राघीयान् राष्ट्रविस्तृतः।
समाजपक्षतो वाऽभूत् पुरुषार्थः सभाजितः॥24॥

अन्वयः – तेन (तस्य) विद्वद्धुरीणस्य राष्ट्रविस्तृतः द्राघीयान् पुरुषार्थः वा समाजपक्षतः सभाजितः अभूत्।

उस सम्मान से विद्वानों की अग्रिम कक्षा में विराजमान श्रीशालग्राम के राष्ट्रव्यापी, विस्तृत योगदान से जन्य पुरुषार्थ का अभिनन्दन हुआ।

सम्मेलनानि विदुषां यत्र यत्राभवन् खलु।
तत्र तत्र स सम्मानं विद्वदर्पितमग्रहीत्॥25॥

अन्वयः – यत्र यत्र खलु विदुषाम् सम्मेलनानि अभवन् तत्र तत्र सः विद्वदर्पितम् सम्मानम् अग्रहीत्।

इसके अतिरिक्त, जहां-जहां विद्वानों के द्वारा सम्मेलन होते रहे, उन्होंने वहां-वहां विद्वानों के द्वारा श्रद्धापूर्वक अर्पित सम्मान प्राप्त किए।

राज्यभाषाविभागेनायोजितानामनेकशः।
विदुषां शास्त्रगोष्ठीनामाध्यक्ष्यमकरोत् कृती॥26॥

अन्वयः – कृती (सः) राज्यभाषाविभागेन आयोजितानाम् विदुषां शास्त्रगोष्ठीनाम् अनेकशः आध्यक्ष्यम् अकरोत्।

वह जीवन पर्यन्त क्रियाशील रहे। प्रदेश के भाषा विभाग (व अन्य संस्थाओं) द्वारा आयोजित विद्वद्गोष्ठियों की अनेक बार अध्यक्षता

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करते रहे।

तासु सर्वत्र वैदुष्यप्रभावात् सर्वतोमुखात्।
आसादयदसंख्याकविद्वद्वृन्दाभिनन्दनम्॥27॥

अन्वयः - (सः) तासु गोष्ठीषु सर्वतोमुखात् वैदुष्यप्रभावात् सर्वत्र असंख्याकविद्वद्वृन्दाभिनन्दनम् आसादयत्।

उन सभी विद्वद्गोष्ठियों में अपने सभी शास्त्रों के वैदुष्य के प्रभाव से, सर्वत्र असंख्य विद्वानों से उन्होंने विविध अभिनन्दन प्राप्त किए।

शास्त्रसारसमाहारव्याख्यानेषु सरस्वती।
अधिकण्ठमकुण्ठैव तस्य नृत्यं सदा व्यधात्॥28॥

अन्वयः - तस्य शास्त्रसारसमाहारव्याख्यानेषु सरस्वती सदा अकुण्ठा एव अधिकण्ठम् नृत्यम् व्यधात्।

जहां-जहां भी शास्त्रों के सारगर्भित व्याख्यान होते थे वहां-वहां उनके कण्ठ में सरस्वती अकुंठित नृत्य करती थी।

अप्रसिद्धोऽपि विषयः शास्त्रीयस्तस्य वाग्बलात्।
चिन्तनस्य तथा सौक्ष्म्यादतिप्राशस्त्यमाप्तवान्॥29॥

अन्वयः - तस्य चिन्तनस्य सौक्ष्म्यात् तथा वाग्बलात् अप्रसिद्धः अपि शास्त्रीयः विषयः अति प्राशस्त्मय् आप्तवान्।

उनके चिन्तन की सूक्ष्मता तथा वाणी के बल से अप्रसिद्ध शास्त्रीय विषय भी अत्यन्त प्रशस्त हो जाता था।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सम्यक्त्वं लाघवं सौक्ष्म्यमन्यूनानतिरिक्तता।
माधुर्यं स्पष्टता चैव वाचस्तस्याभवन् गुणाः ॥30॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

उनकी वाणी में बड़े विलक्षण गुण थे। वे विषय को भली-भांति प्रकट करते थे। कम से कम शब्दों में बोलते थे। न तो विषय प्रतिपादन में कमी, न अतिरिक्तता रहती थी। विषय का तल छू जाते थे। बड़ा मीठापन और अत्यन्त स्पष्टता होती थी।

महायज्ञसमारोहे विद्वद्वर्गसमागमे।
अनेकत्राभवँस्तस्य व्याख्यानानि महात्मनः ॥31॥

अन्वयः – अनेकत्र महायज्ञसमारोहे विद्वद्वर्गसमागमे तस्य महात्मनः व्याख्यानानि अभवन्।

अनेक स्थानों में, महायज्ञों के समारोह में एकत्रित विद्वत्समुदाय के मध्य उस महापुरुष के मार्मिक व्याख्यान होते थे।

शास्त्राणां गूढमननप्राप्तं सारं प्रकाशयन्।
अनायासेन विदुषां साधुवादानवाप्तवान्॥32॥

अन्वयः – (सः) शास्त्रणाम् गूढ़मननप्राप्तम् सारम् अनायासेन प्रकाशयन् विदुषाम् साधुवादान् अवाप्तवान्।

शास्त्रों के गम्भीर मनन से प्राप्त सार को बड़ी सरलता से स्पष्ट करते हुए विद्वानों की प्रशंसा पाते थे।

प्रत्नं दार्शनिकज्ञानं विज्ञाननिकषेऽपि सः।
परीक्ष्य साधयामास साधु वैज्ञानिकाग्रतः॥33॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – सः प्रत्नम् दार्शनिकज्ञानम् विज्ञाननिकषे अपि परीक्ष्य वैज्ञानिकाग्रतः साधु साधयामास।

उन्होंने अनेकों बार प्राचीन दार्शनिक ज्ञान को वैज्ञानिकों के समक्ष विज्ञान की कसौटी पर परीक्षित करके उसे भली-भांति संगत सिद्ध किया।

प्राच्यसिद्धान्तसन्दोहं प्रत्याक्षेपपरान् हि सः।
तार्किकव्याख्यया तस्य विमुद्रितमुखान् व्यधात्॥34॥

अन्वयः – (सः) प्राच्यसिद्धान्तसन्दोहम् प्रति आक्षेपपरान् (प्रतिवादिनः) तस्य दृढ़म् तार्किकव्याख्यया विमुद्रितमुखान् व्यधात्।

वे प्राचीन शास्त्रीय सिद्धान्तों पर आक्षेप करने वाले प्रतिवादियों का, उन सिद्धान्तों की तार्किक युक्तिसंगत व्याख्या द्वारा मुखमुद्रण कर देते थे।

प्रमाणैर्युक्तिभिस्तर्कैर्निर्विवादं विधाय सः।
प्रतिज्ञातं निजं पक्षं लब्धवानभिनन्दनम्॥35॥

अन्वयः – सः निजम् प्रतिज्ञातम् पक्षम् प्रमाणैः युक्तिभिः तर्कैः (च) निर्विवादम् विधाय अभिनन्दनम् लब्धवान्।

वे अपने साध्य विषय को प्रमाणों युक्तियों तथा अनेकों तर्कों से पुष्ट कर उसे निर्विवाद सिद्ध करके विद्वानों से अभिनन्दन प्राप्त करते थे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स राष्ट्रपतिना प्रदेशगतसर्वकारेण वा
प्रतिष्ठित पुरस्कृती रथ च विज्ञसंस्थाशतैः।
अवाप्य बहुशोऽप्यहो सहजमार्जवं नात्यजत्
क्व वार्धिरवधिं निरन्तजलागमे लङ्घते॥36॥

उन्होंने, राष्ट्रपतिपुरस्कार, प्रदेश सर्वकार द्वारा तथा सैंकड़ों संस्थाओं द्वारा अनेकों प्रतिष्ठित पुरस्कारों को पाकर भी, अपनी सहज विनम्रता कभी नहीं छोड़ी। भला नदियों के जल से निरन्तर भराजाता हुआ भी समुद्र अपनी सीमा को कहां लांघता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एकादशः सर्गः

पुराणानि श्रुतेर्गूढतत्त्वविस्तारकारणात्।
विश्वकोशा निगद्यन्ते नूनं भारतसंस्कृतेः ॥1॥

अन्वयः – श्रुतेः गूढतत्त्वविस्तारकारणात् पुराणानि नूनम् भारतसंस्कृतेः विश्वकोशाः निगद्यन्ते।

वेदों के अन्दर छिपे हुए गम्भीर तत्त्वों का विस्तार पूर्वक स्पष्टीकरण करने के कारण, पुराण, भारतीय संस्कृति के प्रातिपादक विश्वकोश कहे जाते हैं।

भारते वेदवत् तेषां प्रामाण्यं सम्प्रतिष्ठितम्।
युगव्यतिगमेऽप्यस्ति तेषु श्रद्धाऽनपायिनी ॥2॥

अन्वयः – भारते तेषाम् प्रामाण्यम् वेदवत् सम्प्रतिष्ठितम्, युगव्यतिगमे अपि तेषु अनपायिनी श्रद्धा अस्ति।

भारतवर्ष में वेदों की तरह उनकी प्रामाणिकता प्रतिष्ठित है। दीर्घ समय बीत जाने पर भी उनके प्रति लोगों में अविचल श्रद्धा विद्यमान है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लोके पौराणिको विद्वान् विशिष्टादरभाजनम्।
मन्यते श्रद्धयाऽभ्यर्च्यो व्यासोपाधिमधिष्ठितः॥3॥

अन्वयः - लोके व्यासोपाधिम् अधिष्ठितः पौराणिकः विद्वान् श्रद्धया अभ्यर्च्यः विशिष्टादरभाजनम् मन्यते।

समाज में व्यास उपाधि वाला पौराणिक विद्वान् श्रद्धापूर्वक पूजा के योग्य और एक विशेष आदर का पात्र माना जाता है।

विद्वत्परीक्षानिकषः श्रीमद्भागवताभिधम्।
वैदिकज्ञाननिष्कर्षः पुराणमभिधीयते॥4॥

अन्वयः - श्रीमद्भागवताभिधम् पुराणम् वैदिकज्ञाननिष्कर्षः विद्वत्परीक्षानिकषः (च) अभिधीयते।

पुराणों में भी श्रीमद्भागवत नामक महापुराण सम्पूर्ण वेदों के ज्ञान का निचोड़ तथा विद्वानों की परीक्षा की कसौटी कहा जाता है।

व्याख्यातुं च पुराणानि व्यासाभिधविपश्चिता।
वेदाद्यखिलशास्त्राणां सूक्ष्मज्ञानमपेक्ष्यते॥5॥

अन्वयः - पुराणानि च व्याख्यातुम् व्यासाभिधविपश्चिता वेदाद्य-खिलशास्त्राणाम् सूक्ष्मज्ञानम् अपेक्ष्यते।

और पुराणों की व्याख्या करने के लिए व्यास नाम से प्रतिष्ठित विद्वान् को वेदों से लेकर सम्पूर्ण शास्त्रों का सूक्ष्म ज्ञान अपेक्षित होता है।

मर्मज्ञस्य समाजस्य प्रभूतेनाग्रहेण सः।
पुराणानां प्रवचनं समये समयेऽकरोत्॥6॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः - सः मर्मज्ञस्य समाजस्य प्रभूतेन आग्रहेण समये समये पुराणानाम् प्रवचनम् अकरोत्।

वे भी मर्मज्ञ समाज के अत्यधिक आग्रह से समय-समय पर पुराणों के प्रवचन करते रहते थे।

शैल्या मधुरया ग्रन्थरहस्यं प्रतिपादयन्।
विच्छिन्नसंशयध्वान्तैः श्रोतृभिः श्लाघितोऽभवत्॥7॥

अन्वयः - मधुरया शैल्या ग्रन्थरहस्यम् प्रतिपादयन् सः विच्छिन्न-संशयध्वान्तैः श्रोतृभिः श्लाघितः अभवत्।

प्रवचनों में बड़ी मधुर और सरल शैली के द्वारा पुराणग्रन्थों के गूढ रहस्यों को जब खोलकर प्रकट करते थे तो श्रोताओं के संशय का अन्धेरा मिट जाता और उन से श्रद्धाभरी प्रशंसा पाते थे।

मनोरञ्जनमात्रान्तं पुराणप्रतिपादनम्।
पर्यवर्तयदुत्कृष्टं परमार्थपथं प्रति॥8॥

अन्वयः - मनोरञ्जनमात्रान्तम् पुराणप्रतिपादनम् उत्कृष्टम् परमार्थपथं प्रति पर्यवर्तयत्।

साधारण प्रवचनकर्ताओं द्वारा पुराण प्रवचन प्रायः मनोरञ्जन मात्र होता है उसे उन्होंने उत्कृष्ट परमार्थ मार्ग में बदल दिया (जिससे पुराण और समाज का उपकार हुआ)।

अप्रासङ्गिकवाग्जालं श्रोतृचित्तभ्रमावहम्।
प्रतिषिध्य पुराणानां याथार्थ्यं प्रत्यपादयत्॥9॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – श्रोतृचित्तभ्रमावहम् अप्रासङ्गिकवाग्जालम् प्रतिषिध्य पुराणानाम् याथार्थ्यम् प्रत्यपादयत्।

वे, पुराण प्रवचनों में अधिकतर श्रोताओं के चित्त को भ्रम में डालने वाले लुभावने वाग्जाल का प्रयोग रोक कर उनके यथार्थ मर्म को प्रकट करते थे।

तेनाजीवनमभ्यस्तशास्त्रनिर्मथनामृतम्।
निःश्रेयसकरं भक्तान् पाययामास पावनम्॥10॥

अन्वयः – तेन आजीवनम् अभ्यस्तम् निःश्रेयसकरम् पावनम् शास्त्र-निर्मथनामृतम् भक्तान् पाययामास।

इस गतिविधि के द्वारा उन्होंने जीवन भर के अभ्यास से प्राप्त शास्त्रों के चिन्तन का कल्याणकारी पावन अमृत भक्तों को भली–भाँति पिलाया।

नभोवाण्या समाहूतः सरहस्यप्रकाशनम्।
शास्त्रीयविषयान् मृष्ट्वाऽश्रावयन्नैकधा सुधीः॥11॥

अन्वयः – नभोवाण्या समाहूतः सुधीः शास्त्रीयविषयान् मृष्ट्वा सरहस्यप्रकाशनम् नैकधा अश्रावयत्।

अधिकारियों द्वारा सादर बुलाए जाने पर वे विचारशील विद्वान्, शास्त्रीय विषयों का चिन्तन कर रहस्यों को प्रकाशित करते हुए अनेक बार आकाशवाणी से सुनाते थे।

विश्वविद्यालयाहूतो बहुप्रान्तसमागतान्।
विषयानतिगम्भीरान् जिज्ञासून् स व्यबोधयत्॥12॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्वयः – विश्वविद्यालयाहूतः सः बहुप्रान्तसमागतान् जिज्ञासून् अतिगम्भीरान् विषयान् व्यबोधयत्।

विश्वविद्यालयों में बुलाए जाने पर अनेक प्रान्तों से आए हुए विद्वान् जिज्ञासुओं को अत्यन्त गम्भीर विषयों का ज्ञान देते थे।

राष्ट्रस्तरीयविदुषामनेकत्र समागमे।
शास्त्रतत्त्वरहस्यानि व्याख्यानैरुदघाटयत्॥13॥

अन्वयः – अनेकत्र राष्ट्रस्तरीयविदुषाम् समागमे व्याख्यानैः शास्त्रतत्त्वरहस्यानि उदघाटयत्।

अनेक स्थानों में, राष्ट्रस्तरीय विद्वानों के सम्मेलनों में व्याख्यानों द्वारा शास्त्रतत्त्व के गूढ़ रहस्यों को उद्घाटित करते थे।

पुण्यपर्वसु तीर्थेषु मन्दिरेष्वाश्रमेषु च।
कर्मकाण्डीयविद्वद्भिः सदा यज्ञानकारयत्॥14॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

वे धर्मिक कृत्यों पर गहरी श्रद्धा रखते थे। पुण्यपर्वों पर, तीर्थों, मन्दिरों, आश्रमों तथा घर पर कर्मकाण्ड विशेषज्ञों द्वारा सदा यज्ञों को सम्पादित करते थे।

देवर्षिपितृभूतानां काले काले निजालये।
व्यतनोद् यजनं धर्म्यं श्रद्धया शुद्धसाधनैः॥15॥

अन्वयः – निजालये (अपि) काले काले श्रद्धया शुद्धसाधनैः देवर्षिपितृभूतानाम् धर्म्यम् यजनम् व्यतनोत्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अपने घर पर भी, समय-समय पर श्रद्धापूर्वक पवित्र साधन सामग्री द्वारा देवों ऋषियों पितृगणों तथा भूतगणों के प्रीतिकारक धर्ममय यज्ञ करते रहते थे।

स्वपुत्रैरपि पित्राज्ञानुव्रतैः सुकुटुम्बिभिः।
कारयामास विधिवन्नित्यनैमित्तिकक्रतून्॥16॥

अन्वयः - सुकुटुम्बिभिः पित्राज्ञानुव्रतैः स्वपुत्रैः अपि विधिवत् नित्यनैमित्तिकक्रतून् कारयामास।

पिता की आज्ञा पालन करने वाले, श्रेष्ठ कुटुम्ब से सम्पन्न अपने पुत्रों के द्वारा भी नित्य और नैमित्तिक यज्ञों को करवाते रहते थे।

चत्वारः सूनवोऽभूवन् पुरुषार्थोपमा गृहे।
भिन्नक्षेत्रगतां तस्य वृत्तिमर्जयतोऽन्तरे॥17॥

अन्वयः - भिन्नक्षेत्रागताम् वृत्तिम् अर्जयतः तस्य अन्तरे गृहे चत्वारः पुरुषार्थोपमाः सूनवः अभूवन्।

विभिन्न स्थानों में आजीविका अर्जित करते हुए उसी बीच में, घर पर पुरुषार्थों की तरह उनके चार पुत्र हुए।

हरिदत्तो रमेशश्च शिवश्च ज्ञान एव च।
सर्वे पितृसमाः सौम्या बुद्धिविद्योद्यमान्विताः॥18॥

अन्वयः - स्पष्ट एव।

उनके नाम क्रमशः हरिदत्त, रमेश, शिवकुमार तथा ज्ञान हैं। वे सभी पिता के समान सौम्य, बुद्धि, विद्या तथा उद्यम से सम्पन्न हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धर्मिका भगवच्छ्रद्धासम्पन्ना नम्रमानसाः ।
व्यवहारकलादक्षाः सदाचारपरायणाः ॥19॥

पित्राज्ञानुगता नित्यं कुलकीर्तिविवर्द्धनाः ।
भगवत्समुपासायै सततं स्पृहयालवः ॥20॥

अन्वयः - स्पष्टः ।

वे सभी धर्मप्रिय हैं। भगवान् के प्रति श्रद्धालु हैं। नम्रहृदय हैं। व्यवहार की कला में दक्ष हैं। सदाचार परायण हैं। पिता की आज्ञा का अनुसरण करने वाले हैं। इन श्रेष्ठ गुणों के कारण कुल का यश बढ़ाने वाले हैं तथा सभी पुत्र ईश्वर उपासना के प्रति सदा इच्छुक रहते हैं।

तेष्वग्रयो हरिदत्तारव्यः संस्कृतज्ञेषु सत्तमः ।
शास्त्रज्ञो देववाक्सेवाव्रतस्तातपथानुगः ॥21॥

अन्वयः - तेषु अग्रयः हरिदत्ताख्यः संस्कृतज्ञेषु सत्तमः शास्त्रज्ञः देववाक्सेवाव्रतः तातपथानुगः (च अस्ति) ।

उन में ज्येष्ठ पुत्र हरिदत्त है जो संस्कृतज्ञों में श्रेष्ठ, शास्त्रज्ञ, देववाणी संस्कृत के सेवाव्रती और अपने पिता के विद्वत्तापथ का अनुसरण करने वाले हैं।

सततोद्योगशीलेन संस्कृतोत्थानहेतवे ।
येन विद्वज्जनश्लाघ्यो नवः पन्था विनिर्मितः ॥22॥

अन्वयः - संस्कृतोत्थानहेतवे सततोद्योगशीलेन येन विद्वज्जनश्लाघ्यः नवः पन्थाः विनिर्मितः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जिन्होंने संस्कृत की उन्नति के लिए लगातार उद्योग शीलता के द्वारा एक ऐसे नवीन मार्ग का निर्माण किया जिसकी विद्वान् लोग सदा प्रशंसा करते रहेंगे।

जन्मभूमौ प्रयत्नेन शिवमन्दिरमादरात्।
निरमापयदुत्कृष्टं वंशकल्याणकारकम् ॥23॥

अन्वयः – (सः शालिग्रामः) जन्मभूमौ वंशकल्याणकारकम् उत्कृष्टम् शिवमन्दिरम् आदरात् प्रयत्नेन निरमापयत्।

उन्होंने (शालग्रामने) अपने जन्म स्थान में वंशकल्याणकारी सुन्दर मन्दिर बड़े आदर और प्रयत्न से बनवाया।

यत्र यत्राश्रृणोत् साधुपरिव्राजां समागमम्।
गतवाँस्तत्र तत्रैव सत्सङ्गार्थं समुत्सुकः ॥24॥

अन्वयः – (सः) यत्र यत्र साधुपरिव्राजाम् समागमम् अश्रृणोत् तत्र तत्र एव समुत्सुकः सत्सङ्गार्थम् गतवान्।

वह जहाँ–जहाँ श्रेष्ठ महात्मा सन्तों की उपस्थिति सुनते थे, वहां–वहां बड़ी उत्सुकता से सत्सङ्ग के लिए जाते थे।

प्राप्तेषु पर्वसु प्रीत्याऽगणयन् शिथिलां तनुम्।
हरिद्वारादितीर्थानि स्नानाद्यर्थमसेवत ॥25॥

अन्वयः – पर्वसु प्राप्तेषु शिथिलाम् तनुम् अगणयन् प्रीत्या स्नानाद्यर्थम् हरिद्वारादितीर्थानि असेवत।

जब भी कोई पुण्य पर्व आते तभी वे अपने शरीर की शिथिलता

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

की परवाह किए बिना स्नान दान आदि के लिए हरिद्वार आदि पवित्र तीर्थों का सेवन करते थे।

तीर्थवासेच्छया भक्त्या हरिद्वारेऽतिपावने।
अक्रीणात् सञ्चितार्थेन लघुगेहं शुभाश्रमे ॥26॥

अन्वयः – भक्त्या तीर्थवासेच्छया अतिपावने हरिद्वारे शुभाश्रमे सञ्चितार्थेने लघुगेहम् अक्रीणात्।

भक्तिपूर्वक तीर्थवास की इच्छा से उन्होंने अति पवित्र हरिद्वार की भूमि में, एक शुभ आश्रम में छोटा सा घर अपनी सञ्चित पूंजी से खरीदा (जहां वे समय-समय पर जाया करते थे।)

अन्यविद्वद्विनिर्दिष्टं विज्ञोऽप्यकृत्स्नविन्निभः।
परया श्रद्धया धर्म्यं कर्माचरदशेषतः ॥27॥

अन्वयः – विज्ञः अपि अकृत्स्नवित्निभः (सः) अन्यविद्वद्विनिर्दिष्टम् धर्म्यं कर्म परया श्रद्धया अशेषतः आचरत्।

उनमें ऐसी विनम्रता थी कि स्वयम् सब कुछ जानते हुए भी असम्पूर्ण जानने वाले की तरह, वे अन्य विद्वान् द्वारा सुझाए धार्मिक कर्म को बड़ी श्रद्धा से पूर्णतया करते थे।

युक्तिमद्वचनं शिष्यैरप्युदीरितमादरात्।
अगृह्णादत्युदारत्वात् सर्वतः सारसङ्ग्रही ॥28॥

अन्वयः – सर्वतः सारसङ्ग्रही (सः) अति उदारत्वात् शिष्यैः अपि उदीरितम् युक्तिमद् वचनं अगृह्णात्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वे तो सब ओर से सार ग्रहण करते थे। ऐसे उदार थे कि शिष्यगण भी यदि कोई युक्तियुक्त वचन कहें तो उसे तत्काल स्वीकृत कर देते थे।

व्यक्तवान् परुषं सत्यं सरण्या मृदुशब्दया।
न्याय्यपक्षमपि ग्रथ्नन् श्रोतृक्षोभमपि त्यजन्॥29॥

अन्वयः – (सः) न्याय्यपक्षम् अपि ग्रथ्नन् श्रोतृक्षोभम् अपि त्यजन् मृदुशब्दया सरण्या परुषम् सत्यम् व्यक्तवान्।

वे कठोर सत्य को भी ऐसी कोमल शब्दों भरी शैली से कह देते थे जिससे न्यायपूर्ण पक्ष भी सुरक्षित रहे और सुनने वाले को भी क्षोभ न हो।

धर्माय धेनवेऽध्येत्रे रोगिणे निर्धनाय च।
न्यासं स्थापितवानेकं प्रदानाय सहायताम्॥30॥

अन्वयः – (सः) धर्माय धेनवे अध्येत्रे रोगिणे निर्धनाय च सहायताम् प्रदानाय एकम् न्यासम् स्थापितवान्।

उन्होंने धर्मिक क्रिया कलाप के लिए, गायों की सेवा, रोगियों तथा निर्धनों को सहायता प्रदान करने के लिए एक न्यास (ट्रस्ट) की स्थापना की।

पुराणानां प्रवचनाद् यावद् द्रव्यमवाप्तवान्।
तत्सर्वं न्याससात् कृत्वाऽपूर्वादर्शमदर्शयत्॥31॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

पुराणों के प्रवचनों से जितना धन प्राप्त हुआ वह सब उस न्यास द्वारा होने वाले कल्याणकारी कार्यों के लिए समर्पित करके उन्होंने

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विद्वत्समाज को एक अपूर्व आदर्श प्रस्तुत किया।

अन्यदप्यर्जितं वित्तमाजीवनमहो! श्रमात्।
पुण्यं पुण्यपरस्तत्र पुण्यायार्पयदार्जवात्॥32॥

अन्वयः – पुण्यपरः (सः) आजीवनम् श्रमात् अर्जितम् अन्यत् अपि पुण्यम् वित्तम् आर्जवात् पुण्याय तत्र आर्पयत् (इति) अहो।

इसके अतिरिक्त उस पुण्यात्मा ने जीवन भर कड़े परिश्रम से कमाया हुआ पवित्र धन नम्रतापूर्वक पुण्यकर्म के लिए उस न्यास के लिए अर्पित कर दिया, आश्चर्य है।

ईदृक् सर्वस्वदातृत्वं हरिश्चन्द्रे रघौ निमौ।
शालग्रामेऽथवाऽतिष्ठद् भवेदन्यत्र वा न वा॥33॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

सर्वस्व दान करने की ऐसी वीरता या तो हरिश्चन्द्र, रघु निमि जैसों में थी या फिर शालग्राम में दृष्टिगोचर हुई। अन्यत्र हो न हो।

आहारसङ्ग्रहो गोभ्यश्छात्रेभ्यश्छात्रवृत्तयः।
निर्धनेभ्यो धनं दीनहीनरोगिभ्य औषधम्॥34॥

कर्मकाण्डप्रशिक्षार्थिविप्रेभ्यः शिविरव्ययः।
पुराणज्ञानयज्ञार्थं व्यवस्था च स्वसद्मनि॥35॥

न्यासार्थेनेदमन्यच्च तत्सदस्यैर्विधीयते।
शालग्रामार्थगङ्गेयमच्छिन्ना प्रवहिष्यति॥36॥

अन्वयः – गोभ्यः आहसङ्ग्रहः छात्रेभ्यः छात्रवृत्तयः निर्धनेभ्यः धनम् दीनहीनरोगिभ्यः औषधम् कर्मकाण्डप्रशिक्षार्थिविप्रेभ्यः व्यवस्था

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

च, इदम् अन्यत् च न्यासार्थेन तत्सदस्यैः विधीयते। इयम् शालग्रामार्थगङ्गा अच्छिन्ना प्रवहिष्यति।

गायों के लिए आहार खरीद कर इकट्ठा करना, छात्रों के लिए छात्रवृत्तियां देना, गरीबों के लिए धनदेना, दीन, हीन, रोगियों के लिए औषधियाँ देना, कर्मकाण्ड शिक्षार्थी विप्रजनों को विविध शिविरों का व्यय प्रदान करना तथा अपने घर पर पुराणों के ज्ञानयज्ञों के आयोजन के लिए व्यवस्था करना- ये सब, और अन्य भी उपकार वाले कार्यों का न्यास के धन से, उसके सदस्यों द्वारा प्रबन्ध किया जाता है। इस प्रकार शालग्राम के धन की यह गङ्गा सदा सदा निर्बाध रूप से बहती रहेगी।

स द्वानवतिवर्षायुर्यावत् सक्रियजीवनम्।
व्यत्ययापयदुत्कृष्टं वैदुष्यमहसोज्ज्वलम्॥37॥

अन्वयः - सः द्वानवतिवर्षायुः यावत् वैदुष्यमहसा उज्ज्वलम् उत्कृष्टम् सक्रियजीवनम् व्यत्ययापयत्।

उन्होंने बानवें (92)सालों तक विद्वता के प्रकाश से उज्ज्वल उत्कृष्ट सक्रिय जीवन को बिताया।

आयुर्वेदेन वपुषो योगाभ्यासेन चेतसः।
संसारस्य विरागेण दोषाँश्च स निराकरोत्॥38॥

अन्वयः - सः आयुर्वेदेन वपुषः योगाभ्यासेन चेतसः विरागेण स संसारस्य दोषान् निराकरोत्।

वे शरीर के दोषों को आयुर्वेद से, चित्त के दोषों को योगाभ्यास से तथा संसार के प्रपञ्च से उत्पन्न दोषों को वैराग्य से दूर करते रहे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मतभेदसमुत्पन्ने विरोधेऽपि विरोधिना।
नैव वैयक्तिकं स्नेहं कदापि व्यपनीतवान्॥39॥

अन्वयः - (सः) विरोधिना मतभेदसमुत्पन्ने विरोधे अपि वैयक्तिकम् स्नेहम् कदा अपि नैव व्यपनीतवान्।

वे विरोधी व्यक्ति के साथ मतभेद के कारण उत्पन्न विरोध होने पर भी उससे व्यक्तिगत स्नेह कभी नहीं छोड़ते थे।

सरलस्वाननाकृत्या मनोमोहकमुद्रया।
वक्तारं प्रेरयद् वक्तुं मौनमास्थाय धैर्यवान्॥40॥

अन्वयः - धैर्यवान् (सः) मौनम् आस्थाय सरलास्वाननाकृत्या मनोमोहकमुद्रया वक्तारम् वक्तुम् प्रैरयत्।

वे सदा धीर और गम्भीर रहते थे। स्वयं मौन रहकर, अपनी सरल आकृति और मनमोहक सुस्कराहट भरी मुद्रा से, अन्य व्यक्ति को बोलने के लिए उत्साहित करते थे।

विज्ञोऽप्यल्पविदः पक्षं सदैवानवधीरयन्।
स्नेहार्द्रवचनैस्तथ्यं सिद्धान्तविदपावृणोत्॥41॥

अन्वयः - (सः) विज्ञः अपि सदैव अल्पविदः पक्षम् अनवधीरयन् सिद्धान्तवित् (सन्) स्नेहार्द्रवचनैः तथ्यम् अपावृणोत्।

विषय के पूर्ण जानकार तथा सिद्धान्त के मर्मज्ञ होने पर भी किसी अल्पज्ञ के मतपक्ष का कभी तिरस्कार नहीं करते हुए, बड़ी स्नेह-पूर्ण वाणी के द्वारा तथ्य का उद्‌घाटन किया करते थे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

संप्रसाद्योपकारेण स्वापकारपरानपि।
द्विषो ह्यावर्जयत् साम्ना प्रतिकारपराङ्मुखः॥42॥

अन्वयः – प्रतिकारपराङ्मुखः (सः) स्वापकारपरान् द्विषः अपि उपकारेण सम्प्रसाद्य (तान्) साम्ना हि आवर्जयत्।

वे किसी के प्रति प्रतीकार की भावना नहीं रखते थे। अपना अपकार करने वाले द्वेषयुक्त व्यक्तियों को भी, उनका उपकार करके ही बड़ी शान्ति से उन्हें सही मार्ग में ले आते थे।

धैर्यवानतिकष्टेऽपि वैभवेऽपि स संयमी।
सम्माने वाप्यनुत्सिक्तो विरोधेऽप्यनमर्षवान्॥43॥

अन्वयः – (सः) अतिकष्टेऽपि धैर्यवान् वैभवेऽपि च संयमी सम्माने वा अपि अनुत्सिक्तः विरोधे अपि अनमर्षवान् (आसीत्)।

वे भारी संकट में भी धैर्य रखते, धन की समृद्धि होने पर भी अद्भुत संयम का पालन करते, सम्मान होने पर भी निरहङ्कार रहते और विरोध का सामना भी बिना क्रोध से करते थे।

धर्मकार्ये महोत्साही द्रव्यपक्षेऽत्युदारहृत्।
निरपेक्षश्च कामेषु कुशलो मोक्षवर्त्मनि॥44॥

अन्वयः – स्पष्ट एव। आसीदिति शेषः।

वे धर्मकार्य में बड़े उत्साहपूर्वक योगदान देते थे, धन के सुप्रयोग में अति उदार थे, अपनी कामनाओं के प्रति अनिच्छुक तथा मोक्षमार्ग की साधना में बड़े कुशल थे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पुटितौ धर्ममोक्षाभ्यामर्थकामौ सुसंयमी।
असेवत कटुस्वादं मधुमिश्रमिवौषमधम्॥45॥

अन्वयः – सुसंयमी (स) कटुस्वादम् औषधम् मधुमिश्रम् इव अर्थ-कामौ धर्ममोक्षाम्याम् पुटितौ असेवत।

वे बड़े संयमी थे। जैसे कटु स्वाद वाली औषधी शहद मिला कर खाई जाती है उसी तरह वे अर्थ और काम पुरुषार्थ का प्रयोग धर्म और मोक्ष से पुटित करके करते थे।

शास्त्रसिद्धान्तरक्षायाश्चिन्ताभारमहर्निशम्।
दधानो मूर्ध्नि गुरुतामात्मनः समवर्द्धयत्॥46॥

अन्वयः – (सः) अहर्निशम् शास्त्रसिद्धान्तरक्षायाः चिन्ताभारम् मूर्ध्नि दधानः आत्मनः गुरुताम् समवर्द्धयत्।

उन्होंने रात-दिन शास्त्र सिद्धान्तों की रक्षा का भार मस्तक पर धारण करते हुए अपनी गुरुता (भारीपन और गौरव) को बढ़ाया।

जीर्यमाणावयववान् अपि वार्द्धक्यधर्षितः।
कठिनात्कठिनं धर्म्योपक्रमं समपादयत्॥47॥

अन्वयः – (सः) वार्धक्यधर्षितः जीर्यमाणावयववान् अपि कठिनात् कठिनम् धर्म्योपक्रमम् समपादयत्।

उनमें इतना पुरुषार्थ और धर्म के प्रति निष्ठा थी कि वृद्धावस्था द्वारा सताए जीर्ण शीर्ण अङ्गों वाला होने पर भी, उन्होंने कठिन से कठिन धार्मिक अनुष्ठान बड़े मनोयोग से पूर्ण किए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कष्टसाध्या अपि सदा नित्यनैमित्तिकीः क्रियाः।
आरूढ़ो द्वानवत्यब्दान् सोत्साहं निरवाहयत्॥48॥

अन्वयः - (सः) द्वानवत्यब्दान् आरूढः सदा कष्टसाध्याः अपि नित्य-नैमित्तिकीः क्रियाः सोत्साहम् निरवाहयत्।

उन्होंने बानवें (92) वर्षों की आयु पर आरूढ़ होने पर (शारीरिक शिथिलता से ग्रस्त होने पर) भी सदैव बड़े कष्ट से सम्पन्न होने वाले नित्य और नैमित्तिक कठिन कर्मों के अनुष्ठान पूरे किए।

सर्वाङ्गेष्वपि शुष्केषु परिणामाद् वयःकृतात्।
न कदाप्याननने तस्य स्नेहधरा ह्यशुष्यत॥49॥

अन्वयः - वयः कृतात् परिणामात् सर्वाङ्गेषु शुष्केषु अपि तस्य आनने स्नेहधरा कदापि न अशुष्यत।

आयु की अनिवार्य परिणति के कारण सभी अङ्ग यद्यपि शिथिल शुष्क होगए थे तथापि उनके मुख पर स्नेह की अनवरत धारा कभी नहीं सूखी।

चतुर्भिरपि सत्पुत्रैरहंपूर्विकया सदा।
प्रतीक्षितः स नैकत्रानिकेत इव वाऽवसत्॥50॥

अन्वयः - सः चतुर्भिः सत्पुत्रैः सदा अहंपूर्विकया प्रतीक्षितः अपि अनिकेतः इव एकत्र न अवसत्।

यद्यपि उनके चारों सत्पुत्र, पहले मेरे घर आएं और रहें, इस होड़ से सदा प्रतीक्षा करते रहते थे, परन्तु वे तो किसी एक घर की ममता से रहित होकर एक जगह अधिक नहीं ठहरते थे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सौविध्यपूर्णगेहेषु नारमत तथा मनः।
यथा पुण्येषु तीर्थेषु तस्य नित्यं तपस्विनः ॥51॥

अन्वयः – तपस्विनः तस्य मनः सौविध्यपूर्णगेहेषु तथा न अरमत यथा नित्यम् पुण्येषु तीर्थेषु (अरमत)।

वे तो तपस्या में लीन रहते थे। इसलिए पुत्रों के सर्वसुविधा से पूर्ण घरों में उनका मन उतना नहीं लगता था, जितना कि पुण्यपावन तीर्थों में।

तस्योपस्थितिमात्रेण परितः शान्तिरद्भुता।
अन्वभूयत सद्भावामृतस्नातैः पुरःस्थितैः ॥52॥

अन्वयः – तस्य उपस्थितिमात्रेण सद्भावामृतस्नातैः पुरः स्थितैः परितः अद्भुता शान्ति अन्वभूयत।

उनके सान्निध्य मात्र से, समक्ष स्थित लोग सद्भाव के अमृत से नहा से जाते थे और एक अद्भुत शान्ति का अनुभव करते थे।

तपः पवित्रवपुषा विकिरन् दिव्यदीधितीः।
प्रतीतोऽभूत् पुरः सर्वैः सुरः स्वर्गच्युतो यथा ॥53॥

अन्वयः – तपःपवित्रवपुषा दिव्यदीधितीः विकिरन् (सः) पुरः सर्वैः यथा स्वर्गच्युतः सुरः प्रतीतः अभूत्।

अपने तप से पवित्र शरीर से दिव्य किरणों को बिखेरते हुए वे ऐसे लगते थे जैसे स्वर्ग से गिरा कोई देव सामने विद्यमान हो।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तस्मिन् साक्षात्कृते तेजःपुञ्जरूपे नरामरे।
दृष्टुर्मनोऽन्यतो गन्तुं नाशक्नोद् यन्त्रितं यथा ॥54॥

अन्वयः – तस्मिन् तेजः पुञ्जरूपे नरामरे साक्षात्कृते यथा यन्त्रितम् दृष्टुर्मनः अन्यतो गन्तुम् न अशक्नोत्।

वे तो तेज के पुञ्ज, नर के रूप में देव जैसे थे, जिन्हें देखने पर द्रष्टा का मन कहीं अन्यत्र ऐसे नहीं जा सकता था मानों उसे बांध दिया हो।

तद्विलक्षणसत्सङ्गक्षणानुभवमद्भुतम्।
कोऽप्याजीवनमात्मस्थं न विस्मर्तुमपारयत् ॥55॥

अन्वयः – कः अपि आत्मस्थम् अद्भुतम् तद्विलक्षण सत्सङ्गक्षणा-नुभवम् आजीवनम् विस्मर्तुम् न अपारयत्।

अपने अन्दर स्थित, उनके विलक्षण सत्सङ्गक्षणों के अद्भुत अनुभव को, कोई भी जीवन पर्यन्त भूल नहीं सका।

विशिष्टैः सद्गुणैरेभिः समाजे महतामपि।
शालग्रामेति संज्ञैवादरपर्यायतामगात् ॥56॥

अन्वयः – एभिः विशिष्टैः सद्गुणैः महताम् अपि समाजे शालग्राम-इति संज्ञा एव आदरपर्यायताम् अगात्।

उनके इन विशिष्ट सद्गुणों के कारण, सर्वसाधरण जनता सहित महान्जनों के समाज में भी शालग्राम नाम एक श्रद्धा व आदर का पर्याय बन गया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

साङ्गश्रुतिप्रवचनैः समुपासनाभिः
पुण्यैरुदारचरितैः परमोपकारैः।
आदर्शजीवनमयीमवलम्ब्य शैलीं
धन्यं स जीवनमयापयदग्रजन्मा ॥57॥

अपने विप्रश्रेष्ठ ने वेदवेदाङ्गों, पुराण आदि के प्रवचनों, पुण्यमय उदार आचरणों , उत्कृष्ट परोपकारों के द्वारा आदर्श जीवनमयी शैली का अवलम्बन करके अति धन्य जीवन का निर्वाह किया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

द्वादशः सर्गः

परिपक्ववया व्याप्ततेजोराशिरिवारुणः।
अनुरागेण केनापि व्यभ्राजत चतुर्दिशम्॥1॥

अन्वयः - परिपक्ववयाः व्याप्ततेजोराशिः अरुणः इव (सः) केन अपि अनुरागेण चतुर्दिशम् व्यभ्राजत।

अब उनकी आयु परिपक्व (शरीर और आत्मा के वियोग वाली) हो गई थी। वे उस सायंकालीन अरुण के समान हो गए थे जिसका परिपक्व तेज सर्वत्र फैल जाता है। उस अद्भुत अनुराग (लाल वर्ण) से वे चारों दिशाओं में प्रकाशित (विख्यात) हो गए थे। अरुण से तुलना उनके निर्वाण को ध्वनित कर रही है, क्योंकि अरुण भी शीघ्र ही छिप जाता है। इस प्रकार यहां पर अलङ्कार से वस्तु ध्वनि है।

आऽधीतेः सतताऽभ्यस्तं शास्त्रसंदोहचिन्तनम्।
प्रत्याहृत्य मनोऽन्यस्मान्निदिध्यासितवान् कृती॥2॥

अन्वयः - कृती (सः) अन्यस्मात् मनः प्रत्याहृत्य, आऽधीतेः सतताभ्यस्तम् शास्त्रसन्दोहचिन्तनम् निदिध्यासितवान्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वे तो अत्यन्त पुरूषार्थी थे। उन्होंने संसार के अनावश्यक प्रपञ्च से मन को हटा कर, अध्ययन काल से लेकर निरन्तर अभ्यस्त शास्त्र समूह चिन्तन को जीवन में उतारने के लिए गम्भीर निदिध्यासन किया।

परमं सत्यमद्वैतं सनातनमनुत्तमम्।
निर्मलं चिद्घनं ध्यायन् परां काष्ठां समस्पृशत्॥3॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

उन्होंने अद्वैत, सनातन, चेतनघन, निर्मल, सर्वश्रेष्ठ परम सत्य का गहरा ध्यान करके ज्ञान की पराकाष्ठा को छूआ।

सर्वप्रपञ्चशमनीं सर्वावरणवारिणीम्।
आर्षीमभ्यस्तवान् शुद्धामद्वैतब्रह्मसाधनाम्॥4॥

अन्वयः – (सः) सर्वप्रपञ्चशमनीम् सर्वावरणवारिणीम् शुद्धाम् आर्षीम् अद्वैतब्रह्मसाधनाम् अभ्यस्तवान्।

उन्होंने जगत् के समस्त मिथ्या प्रपञ्च को निवारण करने वाली, जीव और ब्रह्म के मध्य पड़े समस्त आवरण को हटा देने वाली विशुद्ध और ऋषि सम्मत अद्वैत ब्रह्म की साधना का गहन अभ्यास किया।

आप्तव्यमाप्तवानाप्तः कर्तव्यं कृतवान् कृती।
भोक्तुं प्रारब्धशेषं च धृतवानुद्धृतं जनुः॥5॥

अन्वयः – आप्तः कृती (सः)आप्तव्यम् आप्तवान्, कर्तव्यम् कृतवान्, प्रारब्धशेषम् च भोक्तुम् उद्धृतम् जनुः धृतवान्।

वे तो प्रामाणिक तथा कृतकृत्य हो गए थे जिन्होंने वह सब पा लिया जो प्राप्तव्य होता है ओर सभी कर्तव्य पूर्ण कर लिए। अब तो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

केवल बचे हुए प्रारब्ध भोग को पूरा करने के लिए ही जीवन को टिकाए रखा था।

शरीरेन्द्रियचित्तेभ्यस्तस्यालोको ह्यलौकिकः।
प्रास्फुटत् परितो लोकलोचनानन्ददायकः ॥6॥

अन्वयः – तस्य शरीरेन्द्रियचित्तेभ्यः लोकलोचनानन्ददायकः अलौकिकः आलोकः परितः प्रास्फुटत्।

उनके शरीर इन्द्रियों तथा अन्तःकरण से, लोगों के लोचन को एक दिव्य आनन्द देने वाला आलोक चारों और फूट पड़ता था।

विरक्तो लोकयात्रार्थमाचरन् कर्म रक्तवत्।
निरवाहयदुत्कृष्टां व्यावहारिकतामपि ॥7॥

अन्वयः – विरक्तः (सः) लोकयात्रार्थम् रक्तवत् कर्म आचरन् उत्कृष्टाम् व्यावहारिकताम् अपि निरवाहयत्।

अब तो वे यद्यपि पूर्ण रूप से सांसारिक प्रपञ्चों से विरक्त हो गए थे फिर भी लोकयात्रा चलाने के लिए अनुरागी की तरह सभी कर्तव्यों को करते हुए उच्चस्तरीय व्यावहारिकता का निर्वाह करते थे।

परमार्थस्य पथिको लक्ष्यैकाग्राक्षवानपि।
अमुञ्चन् लोककर्तव्यं जनुरादर्शमूढवान् ॥8॥

अन्वयः –परमार्थस्य पथिकः(सः)लक्ष्यैकाग्राक्षवान् अपि लोकर्तव्यम् अमुञ्चन् जनुरादर्शम् ऊढवान्।

वे तो परमार्थ के प्रति समर्पित पथिक थे। उस लक्ष्य के प्रति मन इन्द्रियों को पूर्णतया एकाग्र रखते हुए भी सभी सांसारिक कर्तव्यों को

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भली भांति करते हुए जीवन के उच्च आदर्शों को निभा गए।

कलिकल्मषविस्तारात् क्षीयमाणां पुनर्व्यधात्।
आर्षीं जीवनशैलीं स तपोमूर्तिः प्रतिष्ठिताम्॥9॥

अन्वयः – तपोमूर्तिः सः कलिकश्मलविस्तारात् क्षीयमाणाम् आर्षीम् जीवनशैलीम् पुनः प्रतिष्ठिताम् व्यधात्।

वे तपस्या की साक्षात् मूर्ति थे। उन्होंने कलियुग की मलिनता के विस्तार से क्षीण होती हुई ऋषि मुनि सम्मत जीवनशैली को, अपने शुद्ध आचरण से पुनः प्रतिष्ठित किया।

अपि श्रद्धान्वितैर्लोकैः पूज्यमानः पदे पदे।
नाकाङ्क्षत स सम्मानं तपःप्रत्यूहमूहयन्॥10॥

अन्वयः – सः श्रद्धान्वितैः लोकैः पदे पदे पूज्यमानः अपि तपः प्रत्यूहम् ऊहयन् सम्मानम् न आकाङ्क्षत।

श्रद्धा से भरे लोगों के द्वारा निरन्तर सम्मानित किए जाने पर भी, उन्होंने प्रतिष्ठा को तपस्या में विघ्न ही माना और उसे कभी नहीं चाहा।

अन्तर्निगूढवैराग्ये बहीरागवतीव च।
गतं कुण्ठां जगत् तस्मिन् उपले क्षुरतैक्ष्ण्यवत्॥11॥

अन्वयः – अन्तर्निगूढवैराग्ये बहीरागवति इव च तस्मिन् जगत् उपले क्षुरतैक्ष्ण्यवत् कुण्ठाम् गतम्।

उनमें अन्दर तो गहरा वैराग्य भरा था, तथापि बाहर से सभी के प्रति अनुराग सा दिखता था। वस्तुतः सांसारिक प्रपञ्च ऐसे कुण्ठित हो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गया था जैसे पत्थर में छुरी निष्प्रभाव हो जाती है।

अविद्याबन्धमुक्तोऽपि प्रारब्धबद्धजीवनम्।
धारयामास निष्काम उदासीनो यदृच्छया॥12॥

अन्वयः – (सः)अविद्याबन्धमुक्तः अपि, प्रारब्धबद्धजीवनम् उदासीन निष्कामः (च) यदृच्छया धारयामास।

वे अज्ञान से होने वाले बन्धन से सर्वथा मुक्त थे। विरक्त एवं निष्काम थे तथा अनासक्त भाव से प्रारब्ध के द्वारा चलाया हुआ जीवन धारण कर रहे थे।

कदाचित् योगमभ्यस्यन् स्वगृहे प्रत्यहःक्रमे।
उदरान्तर्विकारोत्थामन्वभूत् तीव्रवेदनाम्॥13॥

अन्वयः – कदाचित् स्वगृहे प्रत्यहः क्रमे योगम् अभ्यस्यन् (सः) उदरान्तर्विकारोत्थाम् तीव्रवेदनाम् अन्वभूत्।

किसी समय अपने घर पर प्रातिदैनिक नियमानुसार योगाभ्यास करते हुए उन्होंने पेट के विकार से पैदा हुई तीव्र पीड़ा का अनुभव किया।

मलमूत्रनिरोधोऽभूत् त्रासदोऽज्ञातहेतुकः।
प्रापितश्च सुतेनाशु चिकित्सालयमन्तिके॥14॥

अन्वयः – अज्ञातहेतुकः त्रासदः मलमूत्रनिरोधः अभूत्। सुतेन आशु अन्तिके चिकित्सालयम् च प्रापितः।

किसी अज्ञात कारण से बड़ा भयङ्कर मलमूत्र का बंद हो गया और पुत्र ने जल्दी ही उन्हें निकटवर्ती चिकित्सालय में पहुँचा दिया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्राणान्तभयमुत्प्रेक्ष्य भिषग्भिस्तत्रवर्तिभिः।
ततश्च नेतुमादिष्टः शिमलां विवशैर्हि तैः ॥15॥

अन्वयः – प्राणान्तभयम् उत्प्रेक्ष्य तत्रवर्तिभिः तैः भिषग्भिः (सः) ततः शिमलाम् नेतुम् आदिष्टः।

उस महाव्याधि के कारण प्राणान्त के भय की सम्भावना से स्वयं उपचार करने में असमर्थ वहाँ के चिकित्सकों ने, उन्हें शिमला ले जाने का परामर्श दिया।

तत्र शल्यचिकित्साऽभूत् प्राणत्राणार्थमापदि।
विपुलै रक्षितो यत्नै र्विशेषज्ञचिकित्सकैः ॥16॥

अन्वयः – तत्र (आपदि (तस्य) प्राणत्राणार्थम् शल्यचिकित्सा अभूत्। (तथा) विशेषज्ञचिकित्सकैः विपुलैः यत्नैः (सः) रक्षितः।

जब शिमला में औषधालय पहुँचे तो वहां के विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा आपत्काल में उनके प्राणों की रक्षा के लिए शल्यचिकित्सा काप्रयोग हुआ तथा उनके भारी प्रयत्नों से किसी तरह (वे) बच गए।

चिकित्सानन्तरमपि त्रिमासान्तं च सोढ़वान्।
वपुःक्षतसमुत्पन्नं महाकष्टं स संयमी ॥17॥

अन्वयः – संयमी सः चिकित्सानन्तरम् अपि त्रिमासान्तम् वपुः क्षतसमुत्पन्नम् महाकष्टं च सोढ़वान्।

वे तो अत्यन्त संयमी थे। शल्यचिकित्सा के अनन्तर भी तीन महीनों तक शरीर के घावों से उत्पन्न महान् कष्ट को सहते रहे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दैहिकी न तथा व्याधिः सहिष्णुं तमबाधत।
यथाऽऽजीवनमच्छिन्नोपासोच्छेदोद्भवा व्यथा॥18॥

अन्वयः – तम् सहिष्णुम् दैहिकी व्याधिः तथा न अबाधत यथा आजीवनम् अच्छिन्नोपासोच्छेदोद्भवा व्यथा (अबाधत)।

वे तो अत्यधिक सहनशील थे। इसलिए उन्हें शारीरिक व्याधि ने उतना कष्ट नहीं दिया जितना जीवन भर कभी भी न छूटी उपासना के छूट जाने से हुई व्यथा ने दुःख पहुंचाया।

प्रारब्धाप्रतिकार्यत्वं भोक्तव्यत्वं च कर्मणः।
विमृश्यामर्शयद् धीरस्तां विपत्तिमुपस्थिताम्॥19॥

अन्वयः – धीरः (सः) प्रारब्धाप्रतिकार्यत्वम् कर्मणः च भोक्तव्यत्वम् विमृश्य उपस्थिताम् ताम् विपत्तिम् अमर्शयत्।

तथापि धैर्य धारण करते हुए उन्होंने प्रारब्ध को अटल मानकर तथा कर्मफल को भोगना आवश्यक है, यह सोचकर उस उपस्थित विपत्ति को सहन किया।

अतिक्रान्तेऽथ समये साधुभैषज्यसेवनात्।
वीतव्याधिरभूत् स्वस्थः प्रबलात्मबलात् तथा॥20॥

अन्वयः – अथ समये अतिक्रान्ते साधुभैषज्यसेवनात् तथा प्रबलात्मबलात् वीतव्याधिः (सः) स्वस्थः अभूत्।

और, समय के बीतने पर, अच्छा इलाज पाने से, तथा प्रबल आत्मबल के सहयोग से रोग से छूट कर वे स्वस्थ हो गए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विकारसंभवो रोगो नियमेन चिकित्सितः।
व्यपोहयति देहस्थान् विकारानितरानपि ॥21॥

अन्वयः – नियमेन चिकित्सितः विकारसंभवः रोगः इतरान् अपि देहस्थान् विकारान् व्यपोहयति।

जब किसी विकार से उत्पन्न रोग की नियमानुसार चिकित्सा हो जाती है तो उससे शरीर में विद्यमान दूसरे विकार भी उसके साथ दूर हो जात हें।

यथापूर्वं ततो ग्रन्थरचनाऽध्ययनादिकम्।
उपासनां च गम्भीरां प्रारभत निरन्तरम् ॥22॥

अन्वयः – ततः यथापूर्वम् निरन्तरम् ग्रन्थरचनाऽध्ययनादिकम् गम्भीराम् उपासनां च प्रारभत।

उन्होंने उसके उपरान्त निरन्तर ग्रन्थरचना, अध्ययन आदि तथा गम्भीर उपासना को आरम्भ कर दिया।

कर्मकाण्डस्य धर्मस्य शास्त्राणां संस्कृतस्य च।
रक्षापोषोद्यमपरो नक्तंदिवमभूद् बुधः ॥23॥

अन्वयः – स्पष्टः।

इसके अतिरिक्त वह दूरदर्शी विद्वान्, कर्मकाण्ड, धर्म, शास्त्रों तथा संस्कृत भाषा की रक्षा और पुष्टि के लिए निरन्तर उद्यमशील रहा।

कर्मज्यौतिषवेदानां सुप्रशिक्षणहेतवे।
शिविरायोजनं क्षीणशरीरोऽप्यसकृद् व्यधात् ॥24॥

अन्वयः – (सः) क्षीणशरीरः अपि कर्मज्यौतिषवेदानाम् सुप्रशिक्षण-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हेतवे असकृत् शिविरायोजनम् व्यधात्।

वे क्षीणशरीर होते हुए भी कर्मकाण्ड, ज्योतिष तथा वैदिकपरम्परा के श्रेष्ठ प्रशिक्षण के लिए, बार-बार अनेक स्थानों में, पण्डितों के लिए शिविरों का आयोजन करते रहे।

श्रौतसंस्कृतिसेवायै मनोवचनकर्मभिः।
समार्पयदविश्रामाध्यवसायी स्वजीवनम्॥25॥

अन्वयः - मनोवचनकर्मभिः अविश्रामाध्यवसायी (सः) श्रौतसंस्कृति-सेवायै स्वजीवनम् समार्पयत्।

वह तो मन, वचन कर्म के द्वारा अनवरत उद्योग में लगे रह कर वैदिक संस्कृति की सम्पूर्ण परम्परा की रक्षा के लिए अपना जीवन अर्पित कर गए।

जनास्तेजोमयीं दिव्यां तस्यागाधगुणाकृतिम्।
अनमन् प्रतिमां मत्वा भव्यां भारतसंस्कृतेः॥26॥

अन्वयः - जनाः तस्य तेजोमयीम् अगाधगुणाकृतिम् भारतसंस्कृतेः दिव्याम् भव्याम् प्रतिमाम् मत्वा (ताम्) अनमन्।

उनके सम्पर्क में आने वाले सभी लोग, उनकी अगाध गुणों से युक्त दिव्य और भव्य आकृति को भारत की संस्कृति की विशुद्ध मूर्ति मान कर झुक जाते थे।

कदाचिज्ज्ञानशिविरे परिपूर्य प्रशिक्षणम्।
निवृत्तः स्थितवान् शान्तो ज्येष्ठपुत्रालये कृती॥27॥

अन्वयः - कदाचित् ज्ञानशिविरे प्रशिक्षणम् परिपूर्य निवृत्तः कृती

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शान्तः ज्येष्ठपुत्रालये स्थितवान्।

एक बार एक ज्ञानशिविर में(कर्मकाण्ड, ज्योतिष एवं वेद का) प्रशिक्षण सत्र पूरा करके लौटे, कृतकृत्य, शान्तचित्त ज्येष्ठपुत्र श्री हरिदत्त के भवन में रह रहे थे।

अकस्मादुदरव्याधिः पुनराक्रमणं व्यधात्।
तस्मात् स त्वरितं नीतश्चिकित्सालयमातुरः॥28॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

अचानक पेट की उस व्याधि ने फिर से आक्रमण कर दिया। उस कारण उन्हें आतुरता की स्थिति में शीघ्र ही निकटवर्ती चिकित्सालय में ले जाया गया।

चिकित्सितुमशक्यत्वात् सोलने शीघ्रमेव सः।
शिमलां प्रेषितश्चार्तो वृहदौषधसद्म च॥29॥

अन्वयः – सोलने चिकित्सितुम् अशक्यत्वात् आर्तः शीघ्रमेव वृहदौषध सद्म शिमलां प्रेषितः।

पहले उन्हें सोलन के जिला अस्पताल में प्रविष्ट किया था। परन्तु वहां पर जब चिकित्सा असम्भव हुई तो व्याकुलता की स्थिति में राज्य के सर्वश्रेष्ठ चिकित्सालय शिमला ले जाया गया।

रोगस्यातीवजाटिल्याद् विलम्बे प्राणसंशयात्।
तत्र शल्यचिकित्साऽभूत् कर्तव्या सुचिकित्सकैः॥30॥

अन्वयः – रोगस्य अतीव जाटिल्यात् विलम्बे प्राणसंशयात्, तत्र सुचिकित्सकैः शल्यचिकित्सा कर्तव्या अभूत्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उनका रोग जटिल हो गया था। विलम्ब होने पर प्राण संकट का डर था। इसलिए औषधलय में विशेषज्ञ डाक्टरों को शल्य चिकित्सा करनी पड़ी।

संशयापन्नसाफल्ये विभीतेषु भिषक्ष्वपि।
शल्यकर्म सुसम्पन्नं प्राणरक्षाऽभवत् तथा ॥31॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

यद्यपि ऐसा संकट हो गया था कि इलाज की सफलता संदिग्ध थी और डाक्टर भी डर गये थे। फिर भी शल्यकर्म भली-भाँति सम्पन्न हुआ और उनकी प्राणरक्षा हो गई।

संतोषः परिवारेण स्निग्धैर्बन्धुजनैस्तथा।
अन्वभूयत सञ्ज्ञातजीवनाशैः कथंचन ॥32॥

अन्वयः – परिवारेण तथा सञ्ज्ञातजीवनाशैः स्निग्धैः बन्धुजनैः कथंचन संतोषः अन्वभूयत।

उस संघर्ष से निकल कर पूरे परिवार ने तथा उनके जीवन के प्रति आशान्वित स्नेही बन्धुओं ने जैसे तैसे सन्तोष की सांस ली।

यावद् द्वित्रैर्दिनैः सर्वे चिन्ताभारमपानुदन्।
तावत् प्राणहरो भूय उपद्रव उपस्थितः ॥33॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

उनके जीवन के प्रति आशा की स्थिति में, जब तक पारिवारिक तथा अन्य लोग चिन्ता के भार को कुछ हटा पाए थे, तब, फिर से उनको प्राणलेवा उपद्रव उपस्थित हो गया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भिषजोऽनेकशो यत्नैः पुत्रा वा प्रार्थनाशतैः।
परिवर्तयितुं शक्ता नाभूवन् विधिवक्रताम्॥34॥

अन्वयः – भिषजः अनेकशःयत्नैः पुत्राः प्रार्थनाशतैः वा विधिवक्रताम् परिवर्तयितुम् शक्ताः न अभूवन्।

उस भीषण संकट के आ पड़ने पर, विशेषज्ञ चिकित्सक उनकी रक्षा के लिए अनेक प्रकार से यत्न करते रहे तथा पुत्र भारी प्रार्थना करते रहे, परन्तु सभी विधाता की टेढ़ी चाल को बदलने में असमर्थ रहे।

सकुटुम्बाँस्तनयकान् स्नेहिनो बान्धवाँस्तथा।
विह्वलान् स परित्यज्य प्रस्थितो हा! महापथम्॥35॥

अन्वयः – सः सकुटुम्बान् तनयकान् तथा स्नेहिनः बान्धवान् विह्वलान् परित्यज्य महापथम् प्रस्थितः हा!

और होनी होकर रही। वह महान् आत्मा, कुटुम्ब समेत प्रियपुत्रों को तथा विशाल बन्धु बान्धवों को व्याकुलता की स्थिति में छोड़ कर महापथ की ओर प्रस्थान कर गई।

व्यलीयतोज्ज्वलं ज्योति र्ब्रह्मज्योतिषि निर्मले।
स्मृतिशेषमभूदित्थं महामानवजीवनम्॥36॥

अन्वयः – (तस्य तत्) उज्ज्वलं ज्योतिः निर्मले ब्रह्मज्योतिषि व्यलीयत। इत्थम् महामानवजीवनम् स्मृतिशेषम् अभूत्।

वह ज्ञानमयी उज्ज्वल ज्योति निर्मल ब्रह्मज्योति में विलीन होकर समा गई। इस प्रकार उस महामानव का जीवन यादों में शेष रह गया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यतः समुत्थितं ज्योतिस्तत्रैवान्तरभूद् विभौ।
शालग्रामो महाभागः शालग्रामे लयं गतः ॥37॥

अन्वयः – (तत्) ज्योतिः यतः समुत्थितम् तत्र विभौ एव अन्तर् अभूत्। शालग्रामः महाभागः शालग्रामे लयम् गतः।

वह ज्योति जहां से आई थी वहीं समा गई। शालग्राम महाभाग शालग्राम (विष्णु) में विलीन हो गए।

विषण्णा भिन्नहृदयाः स्तब्धा दुर्दैवमर्दिताः।
विपत्तिवज्रपातेन लोका व्याकुलतां गताः ॥38॥

अन्वयः – स्पष्ट एव।

दुर्भाग्य के मारे लोगों के हृदय टूट गए। वे विषाद में डूब गए। उस विपत्ति के वज्रपात से स्तब्ध हो गए और व्याकुलता से विचलित हो गए।

आनुश्रविकसंस्कृत्याः प्राणाधारधुरन्धरे।
विद्वन्मुकुटमाणिक्ये शालग्रामे दिवं गते ॥39॥

अयुः शास्त्राणि वैवर्ण्यं विद्वद्धुर्या अधीरताम्।
धार्मिकाः कान्दिशीकत्वं शिष्याः शोकप्रशुष्कताम् ॥40॥

म्लानिमानं महात्मानो हिमाद्रिहृदयं द्रवम्।
संशयं विगताधारा प्रौढ़विद्यापरम्पराः ॥41॥

स्नेहस्रोतस्विनी ह्रासं दैन्यं धर्मवसुन्धरा।
दर्शनाशयन्ि ऋर्षः कार्श्यं सौजन्यमुद्भ्रमम् ॥42॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आर्जवं धीरता सत्यं तपः प्रेमाप्यपार्थताम्।
आत्मसिद्धान्तसन्दोहोऽव्यवहार्यां दशां तथा॥43॥

अन्वयः – आनुश्रविकसंस्कृत्याः प्राणाधारधुरन्धरे विद्वन्मुकुटमाणिक्ये शालग्रामे दिवम् गते, शास्त्राणि वैवर्ण्यम् अयुः (अयुरिति प्रत्येकं सम्बध्यते) विद्वद्धुर्याः अधीरताम्, धार्मिकाः कांदिशीकत्वम्, शिष्याः शोकप्रशुष्कताम्, महात्मानो म्लानिमानम्, हिमाद्रिहृदयम् द्रवम्, विगताधारा प्रौढ़विद्यापरम्परा संशयम्, स्नेहस्रोतस्विनी ह्रासम्, धर्मवसुन्धरा दैन्यम्, दर्शनाशयनिष्कर्षः कार्श्यम्, सौजन्यम् उद्भ्रमम्, आर्जवम्, धीरता, सत्यम्, तपः प्रेम अपि अपार्थताम्, तथा आत्मसिद्धान्तसन्दोहः अव्यवहार्याम् दशाम् (अयुः)।

वेदों द्वारा बोधित विशुद्ध संस्कृति को जीवित रखने वालों में अग्रगण्य, विद्वानों के मुकुट के रत्न, शालग्राम के वैकुण्ठ सिधार जाने पर शास्त्र समुदाय फीका पड़ गया। श्रेष्ठ विद्वानों का धैर्य टूट गया। धार्मिक समाज दिशाहीन होकर विचलित हो गया। शिष्यगण शोक से सूख गए। महात्माजन मुरझा गए। हिमाचल का हृदय पिघल गया। प्रौढ़ विद्याओं की परम्परा निराधार होकर असुरक्षित हो गई। स्नेह की नदी सूख गई। धर्म की भूमि दीन हो गई। दर्शनों के तत्त्वनिष्कर्ष कमजोर पड़ गए। सज्जनता भ्रमित हो गई। नम्रता, धैर्य, सत्य, तप, प्रेम आदि सद्गुणों ने भी अपने अर्थ खो दिए तथा अध्यात्मसिद्धान्तों का अम्बार व्यवहारहीन होकर रह गया।

कल्याणाय हि सर्वेषां येन सर्वस्वमर्पितम्।
अगत्याऽभूत् सुतैस्तस्य वपुर्वैश्वानरार्पितम्॥44॥

अन्वयः – येन हि सर्वेषां कल्याणाय सर्वस्वम् अर्पितम्, तस्य सुतैः (तस्य) वपुः अगत्या वैश्वानरार्पितम् अभूत्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जिन्होंने सभी जीवों के कल्याण के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया था, उनके पुत्रों को लाचार होकर उनका स्थूल शरीर अग्नि को समर्पित करना पड़ा।

स्मृतिं तस्यावहन् लोका आदर्शं पारिवारिकाः।
परमात्माऽऽत्मानममलं यशः शुभ्रं तथा दिशः ॥45॥

अन्वयः – तस्य स्मृतिं लोकाः, आदर्शम् पारिवारिकाः, अमलम् आत्मानम् परमात्मा तथा शुभ्रम् यशः पारिवारिकाः अवहन्।

उनकी स्मृति लोगों ने सदा के लिए सम्भाल ली। होनहार परिवार-जनों ने उनके आदर्श सम्भाल लिए। परमात्मा ने उनकी निर्मल जीवात्मा को सम्भाला और उनके निर्मल यश को दिशाओं ने सम्भाल लिया।

कालोऽकवलयत् तस्य केवलं भौतिकं वपुः।
मण्डितास्तु यशोधाम्ना तेनात्यन्तं दिशो दिशः ॥46॥

अन्वयः – कालः तस्य केवलम् भौतिकं वपुः अकवलयत्। तु तेन यशोधाम्ना दिशः दिशः अत्यन्तम् मण्डिताः।

काल उनकी कोई विशेष हानि नहीं कर सका। वह केवल उनके भौतिक शरीर को ही ग्रास बना पाया। उन्होंने तो अपने यश के उज्ज्वल प्रकाश से दिशा दिशा को सदा के लिए अलङ्कृत कर दिया।

आकल्पं जयतात् कीर्तिः श्रीशालग्रामशर्मणः।
अक्षुण्णा धरणीपृष्ठे कविकेशववर्णिता ॥47॥

अन्वयः – कविकेशववर्णिता, धरणीपृठे अक्षुण्णा, श्रीशालग्राम-शर्मणः कीर्तिः आकल्पम् जयतात्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उनका नश्वर शरीर, न सदा रह सकता था, न रहा। परन्तु केशव कवि के द्वारा उल्लिखित उनकी कीर्ति भूपृष्ठ पर अक्षुण्ण रह कर कल्पों तक विजयिनी होकर विराजमान रहे।

यावद् विप्रमुखेषु वेदजननी यावत् पराम्बार्चना ।
गङ्गायामघहारिवारिसवनं यावत् सतां सङ्गमाः ॥
यावद् दर्शनचिन्तनं पितृसुरोपासा जिहासांऽहसां
शालग्रामयशो विभास्यतितरां तावत् सदाऽनश्वरम् ॥48 ॥

अन्वयः – यावत् विप्रमुखेषु वेदजननी, यावत् पराम्बाऽर्चना, यावत् गङ्गायाम् अघहारिवारिसवनम्, यावत् सताम् सङ्गमाः, यावत् दर्शन-चिन्तनम्, यावत् पितृसुरोपासा अंहसां जिहासा (च वर्तिष्यन्ते) तावत् सदा अनश्वरम् शालग्रामयशः विभास्यतितराम्।

जब तक विप्रों के द्वारा गायत्री उपासना की जाती रहेगी, पराशक्ति जगदम्बा की पूजा साधना होती रहेगी, गङ्गा के पापनाशी जल में स्नान होता रहेगा, सज्ञनों के समागम रहेंगे, दर्शनशास्त्र का गहन चिन्तन होता रहेगा, पितरों देवों की आराधना और पापों का नाश करने की प्रवृत्ति विद्यमान रहेगी, तब तक पुण्यात्मा परम विद्वान् श्रीशालग्रामजी का अनश्वर यश सुशोभित रहेगा, यह निश्चित है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

राष्ट्रपति पुरस्कार से अलंकृत

प्रो. केशव राम शर्मा दर्शनाचार्य (एम. ए. एम.फिल.)

विश्वविद्यालय मे नए रिकार्ड सहित दो स्वर्णपदक।

सम्मान –

1. भारत सरकार द्वारा राष्ट्रिय विद्वत्ता पुरस्कार प्राप्त।
2. हिमाचल सरकार द्वारा प्रान्तीय विद्वत्ता पुरस्कार प्राप्त।
3. हिमाचल सरकार द्वारा महाकवि कालिदास पुरस्कार प्राप्त।
4. सद्यः पद्य रचना प्रतियोगिता पुरस्कार–भारत में प्रथम।
5. श्री शङ्कराचार्य द्वारा ब्रह्मर्षि उपाधि से अलङ्कृत।
6. संस्कृत श्लोक समस्यापूर्ति प्रतियोगिता–भारत में प्रथम।
7. तत्काल प्रदत्त शास्त्रीय विषय पर विद्वानों की व्याख्यान प्रतियोगिता में सम्पूर्ण भारत में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित।
8. हिमाचल संस्कृत अकादमी के पूर्व कार्यकारिणी सदस्य।

प्रकाशित साहित्य –

1. श्री भुवनेश्वरी चरितम् नौ सर्गो का संस्कृत काव्य।
2. हिमाचल वैभवम् महाकाव्य संस्कृत में।
3. शतकचतुष्टयम् संस्कृत में।
4. श्रीशालग्रामचरितम् महाकाव्य 12 सर्ग. संस्कृत में।
5. आचार्य चरितम् काव्यम् 7 सर्ग संस्कृत में।
6. अभिनव कविताञ्जलि: संस्कृत में।
7. संस्कृत सरिता सम्पादित ग्रन्थ।
8. भारतीय दर्शन एक अनुशीलन हिन्दी।
9. अभिषेक नाटक पहाड़ी में अनूदित रचना।
10. 40 के लगभग शोध प्रबन्ध तथा सैकड़ों विस्तृत लेख एवं काव्य रचनाऐं।

विशिष्ट कार्य –

(क) विश्वविद्यालयों में तथा अन्य सम्मेलनों में शास्त्रीय व्याख्यान।

(ख) आकाशवाणी में 40 वर्षो तक व्याख्यान, काव्य पाठ, नाटक।

(ग) सहस्त्रों बार पुराण प्रवचन।

मान्यता प्रकाशन

60 - C, मायाकुञ्ज, मायापुरी, नई दिल्ली–110064

Phone : 011 - 2540 7546, 011 - 2513 7546

Mobile : +91 - 9999 88 9290, 98110 14522

mail at : manyataprakashan@gmail.com

mail at : manyata_prakashan@yahoo.com

श्री शालग्रामचरितम्

ISBN 978-93-83559-19-0

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection